दैनिक
जयपुर,सीकर, झुंझुनूं, चुरू,नागौर एवं अलवर से एक साथ प्रकाशित

जयपुर टाइम्स

नई सोच नई रफ्तार

वर्ष : 10 अंक : 137 ■ डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी / 007/2017-19 जयपुर, मंगलवार 10 जून, 2025 ■ RNI.No.RAJHIN/2016/70162 ■ मूल्य : 2 रुपए ■ पृष्ठ : 8+2

वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान

जल का कोई विकल्प नहीं, जल संरक्षण हम सबकी महती जिम्मेदारी: भजनलाल

हरित पर्यावरण के लिए मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने दिया 'सिंदूर' से संदेश

अजमेर में विभिन्न विकास कार्यों का किया लोकार्पण-शिलान्यास

ब्रह्मा मंदिर में की पूजा-अर्चना, लगाया सिंदूर का पौधा

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि जल का कोई विकल्प नहीं है, जल है तो कल है। ऐसे में आने वाली पीढ़ी को पर्याप्त जल उपलब्ध कराने के लिए जल संरक्षण हम सबकी महती जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने जल की आवश्यकता को समझते हुए प्रदेशभर में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान की शुरूआत की है। जन जागरूकता और सहभागिता इस अभियान की सफलता का आधार है। उन्होंने आह्वान किया कि ज्यादा से ज्यादा लोग इस अभियान से जुड़ें जिससे राजस्थान में पानी की कमी नहीं रहे तथा हमारा प्रदेश हरियालो राजस्थान बने। शर्मा सोमवार को पुष्कर में वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि तीर्थराज पुष्कर की इस पावन धरा पर पूरी दुनिया से पर्यटक आते हैं। यहां स्थित ब्रह्मा जी का मंदिर और सावित्री माता का मंदिर विश्वभर में प्रसिद्ध है। उन्होंने कहा कि वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान की शुरूआत गंगा दशहरा के अवसर पर की गई। ऐसी मान्यता है कि इस दिन पृथ्वी पर गंगा मां का अवतरण हुआ था और सभी जलाशयों में स्वयं गंगा मां अवतरित होती हैं। प्राचीन ग्रंथों में भी मां गंगा को पुण्य सलिला, मोक्ष प्रदायिनी एवं महानदी कहा गया है।

अभियान से जल संरक्षण में आएगी एक नई क्रांति

शर्मा ने कहा कि राजस्थान में कम सतही जल के कारण भूजल पर दबाव बढ़ता जा रहा है। भूजल पर अत्यधिक निर्भरता के कारण प्रदेश का लगभग 72 प्रतिशत भाग अतिदोहित श्रेणी में आ गया है। उन्होंने कहा कि राजस्थान में जल संरक्षण की परंपराएं सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न हिस्सा रही हैं। बावड़ियां, जोहड़, तालाब, और कुंए जैसी संरचनाएं राजस्थान की जल संरक्षण परंपराओं का जीवंत उदाहरण हैं। उन्होंने कहा कि वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के तहत जल संचय संरचनाओं का निर्माण, जल स्रोतों की साफ-सफाई, परंपरागत जलाशयों के स्वरूप को पुनः बहाल करना और जल संरक्षण के लिए जन जागरूकता से जुड़ी गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इस अभियान से जल संरक्षण अब एक जन आंदोलन बन रहा है। यह अभियान निश्चित तौर पर प्रदेश में जल संरक्षण में एक नई क्रांति लाएगा।

राजस्थान को पानी के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाना हमारा लक्ष्य

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार ने राजस्थान की विषम भौगोलिक परिस्थितियों को समझते हुए डेढ साल में पानी की निर्बाध आपूर्ति के लिए लगातार निर्णय लिए हैं। उन्होंने कहा कि रामजल सेतु लिंक परियोजना से प्रदेश के 17 जिलों के लोगों को पेयजल मिलेगा और लगभग 4.74 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई सुविधा उपलब्ध होगी। इसी तरह, शेखावाटी अंचल में यमुना जल समझौता से क्षेत्र के लोगों को पानी की निर्बाध आपूर्ति मिलेगी। उन्होंने कहा कि इंदिरा गांधी नहर, देवास परियोजना, माही बांध, सोम-कमला-अंबा सहित विभिन्न परियोजनाओं के माध्यम से राज्य में जल संचयन और पानी की उपलब्धता को बढ़ावा दिया जा रहा है। हम पानी के क्षेत्र में राजस्थान को आत्मनिर्भर बनाने के लक्ष्य के साथ काम कर रहे हैं।

45 हजार जल संरक्षण संरचनाओं का होगा निर्माण

शर्मा ने कहा कि यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने जल संचयन को बढ़ावा देने के लिए देशभर में 'कैच द रेन' अभियान प्रारंभ किया था। इस अभियान से प्रेरणा लेकर राज्य सरकार ने 'कर्मभूमि से मातृभूमि' अभियान का शुभारंभ किया। इसके तहत प्रवासी राजस्थानी के योगदान से राज्य में अगले चार साल में लगभग 45 हजार जल संरक्षण संरचनाओं का निर्माण किया जाएगा। उन्होंने कहा कि हमने वित्त वर्ष 2025-2026 में प्रत्येक जिले में कम से कम 125 जल संरक्षण संरचनाओं सहित करीब पांच हजार संरचनाओं के निर्माण का लक्ष्य रखा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के एक पेड़ मां के नाम अभियान से प्रेरणा लेकर हमने पिछले वर्ष 7 करोड़ से अधिक पौधे लगाए हैं। इस वर्षाकाल में हम 10 करोड़ पौधे लगाने जा रहे हैं।

पुष्कर को धार्मिक-सांस्कृतिक पर्यटन केन्द्र के रूप में किया जा रहा विकसित

शर्मा ने कहा कि पुष्कर को एक भव्य धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित करने के लिए राज्य सरकार की ओर से ब्रह्मा मंदिर कॉरिडोर व परिसर के विकास के लिए विभिन्न कार्य चरणबद्ध रूप से करवाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि पहले चरण में लगभग 127 करोड़ की लागत से घाट नवीनीकरण, सावित्री वाटिका, ब्रह्मा मंदिर से ब्रह्मा घाट तक कॉरिडोर, ब्रह्मा चौक से वराह घाट तक कॉरिडोर सहित विभिन्न कार्य किए जाएंगे। साथ ही, दूसरे चरण में कुल 38 करोड़ की लागत से नया मेला मैदान, प्रवेश और सूचना केंद्र का निर्माण किया जाएगा। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा कि वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान प्रदेश के लिए महत्वपूर्ण है। उन्होंने आमजन से इस अभियान में बढ़ चढ़कर भागीदारी करने की अपील करते हुए कहा कि हम सबको जल संरक्षण के प्रति जागरूक रहते हुए जल का विवेकपूर्ण उपयोग करना चाहिए। जल संसाधन मंत्री सुरेश सिंह रावत ने राज्य बजट 2025-26 में पुष्कर विधानसभा क्षेत्र सहित संपूर्ण प्रदेश के चहुंमुखी विकास के लिए की गई घोषणाओं के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने अजमेर जिले में मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान 2.0 के प्रथम चरण के अंतर्गत 13.51 करोड़ रुपये के 553 जल संग्रहण संरचनाओं और द्वितीय चरण के अंतर्गत 9 करोड़ 61 लाख रुपये की 176 जल संग्रहण संरचनाओं का वर्चुअली लोकार्पण किया। शर्मा ने अजमेर जिले के बंदिया एवं मुहामी गांव के कॉजवे व फीडर मरम्मत कार्य, फूल सागर बीर जलाशय का मरम्मत व जीर्णोद्धार कार्य का शिलान्यास किया। मुख्यमंत्री ने इस दौरान अभियान के तहत आयोजित कलश यात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना भी किया। मुख्यमंत्री ने सभा स्थल पर राजीविका से जुड़ी महिलाओं की ओर से तैयार इको फ्रेंडली प्रोडक्ट्स की स्टॉल्स का अवलोकन किया। साथ ही शर्मा ने महिलाओं को तुलसी के पौधे भी भेंट किए। उन्होंने सेंड आर्टिस्ट अजय रावत की ओर से तैयार वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान सेंड कलाकृति की सराहना की। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने ब्रह्मा घाट पर वैदिक मंत्रोच्चार के साथ तीर्थराज पुष्कर का पूजन तथा जलाभिषेक किया। इससे पहले मुख्यमंत्री ने ब्रह्मा मंदिर में पूजा-अर्चना कर प्रदेश की खुशहाली की कामना की तथा ब्रह्मा मंदिर परिसर में स्थित ब्रह्म वाटिका में एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत सिंदूर का पौधरोपण भी किया। साथ ही, मुख्यमंत्री ने एमपी मानसिंगका चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से स्थापित श्री ब्रह्मा मंदिर निःशुल्क लिफ्ट सेवा का शुभारंभ किया। इस दौरान देवनारायण बोर्ड के अध्यक्ष ओमप्रकाश भड़ाना, विधायक अनीता भदेल, रामस्वरूप लांबा सहित जनप्रतिनिधिगण, वरिष्ठ अधिकारीगण एवं बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित रहे।

महिला-दिव्यांग-बुजुर्ग की परिवेदनाओं को मुख्यमंत्री दे रहे प्राथमिकता

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की जनसुनवाई बन रही आमजन के लिए वरदान

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार महिला, किसान, युवा, मजदूर इन चार वर्गों के सर्वांगीण विकास के लिए प्राथमिकता से काम कर रही है। मुख्यमंत्री की ओर से नियमित रूप से की जा रही जनसुनवाई में भी इन वर्गों की समस्याओं के समाधान पर विशेष जोर दिया जा रहा है। परिवादियों के लिए मुख्यमंत्री की ओर से की जा रही जनसुनवाई उम्मीद की किरण बन गई है। जनसुनवाई में हजारों की संख्या में परिवादी मुख्यमंत्री के समक्ष अपनी पीड़ा रखते हैं। मुख्यमंत्री भी संवेदनशीलता के साथ मौके पर ही उनका निस्तारण कर उन्हें संबल दे रहे हैं। मुख्यमंत्री ने सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर हुई जनसुनवाई में महिलाओं, दिव्यांगों, बुजुर्गों सहित विभिन्न वर्गों की परिवेदनाओं को व्यक्तिशः विस्तार से सुना तथा अधिकारियों को उनके त्वरित निस्तारण के निर्देश दिए। जनसुनवाई के दौरान आर्थिक तंगी से जूझ रही कैंसर पीड़िता प्रेमलता ने इलाज में आ रही समस्याओं के बारे में मुख्यमंत्री को अवगत कराया। इस पर मुख्यमंत्री ने संवेदनशीलता दिखाते हुए अधिकारियों को प्रेमलता के शीघ्र इलाज करवाने के निर्देश दिए। अब प्रेमलता कैंसर जैसी गंभीर बीमारी का इलाज निःशुल्क ले सकेगी। शर्मा ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि जिला कलक्टर नियमित रूप से जनसुनवाई कर स्थानीय लोगों की समस्याओं को हल करें। उन्होंने कहा कि अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि जिला स्तर पर ही परिवादी को राहत पहुंचाई जाए ताकि उसे अनावश्यक परेशानी का सामना नहीं करना पड़े। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रत्येक परिवेदना का समय से निस्तारण किया जाए। साथ ही, अधिकारी जनता से जुड़े कामों को पूरी जिम्मेदारी से करें। मुख्यमंत्री ने सामाजिक न्याय व अधिकारिता, ग्रामीण विकास व पंचायतीराज, कृषि, गृह, राजस्व, सिंचाई, परिवहन, पशुपालन, जयपुर विकास प्राधिकरण, नगर निगम, शिक्षा, चिकित्सा, पेयजल, मनरेगा, ऊर्जा सहित विभिन्न विभागों की आमजन से जुड़ी परिवेदनाओं को सुना और उनका मौके पर ही निस्तारण किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में आमजन और जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

गुर्जर समाज की महापंचायत में ट्रेन रोकने वालों पर एफआईआर

पीलूपुरा में पटरियों और इंजन को पहुंचाया था नुकसान

आरपीएफ अधिकारी बोले- हमारे पास 300 वीडियो

जयपुर टाइम्स

भरतपुर(निसं.)। गुर्जर समाज की महापंचायत के बाद भरतपुर के पीलूपुरा में ट्रेन रोकने वालों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। उधर, रेलवे प्रोटेक्शन फोर्स के पास ट्रेन रोकने और पटरियों-इंजन को नुकसान पहुंचाने वालों के करीब 300 वीडियो हैं। इनके आधार पर आरोपियों की पहचान की जा रही है। भरतपुर के बयाना सदर थाने में एसएचओ कृष्णवीर सिंह की ओर से सोमवार दोपहर एफआईआर दर्ज कराई गई। रिपोर्ट में ट्रेन रोकने और रेलवे ट्रैक व रेल को नुकसान पहुंचाने की बात कही गई है। रेलवे एक्ट और सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाने के अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया है। रिपोर्ट में कहा है कि काफी संख्या में रीट अभ्यर्थी ट्रेन के इंजन पर चढ़ गए। रेल पटरी को क्षतिग्रस्त कर दिया। दरअसल, रविवार को महापंचायत खत्म होने के बाद भीड़ पटरियों पर पहुंच गई थी। मथुरा-सवाई माधोपुर पैसेंजर को रोक दिया था। दिल्ली-मुंबई रेलवे ट्रैक को दो घंटे तक जाम किया। इतना ही नहीं, प्रदर्शनकारियों ने पटरी उखाड़ने की भी कोशिश की थी। आरपीएफ थाना इंचार्ज ने कहा कि हमारे पास 300 वीडियो है।
RPF थाना भरतपुर के इंचार्ज प्रदीप कुमार तिवारी ने बताया कि बयाना क्षेत्र (भरतपुर) के करवारी और पीलूपुरा गांव के पास दिल्ली-मुंबई रेलवे ट्रैक को कुछ युवाओं ने अवरुद्ध कर दिया था। युवाओं ने मथुरा-सवाई माधोपुर पैसेंजर ट्रेन को भी रोका था। प्रदर्शन के दौरान लोगों ने रेलवे ट्रैक और ट्रेन के इंजन को नुकसान पहुंचाया था। ट्रेन रोकना जुर्म है। हमारे पास 200 से 300 वीडियो हैं। सभी अधिकारी और कर्मचारी वीडियो को लगातार देख रहे हैं। आंदोलन के दौरान ट्रैक पर मौजूद लोगों की पहचान कर रहे हैं। काबिले गौर है कि प्रदीप कुमार तिवारी ने बताया कि प्रदर्शन के कारण 8 से 10 ट्रेन प्रभावित हुई थीं। युवाओं के हटने के बाद रेलवे की इंजीनियर टीम ने ट्रैक की मरम्मत की। इसके बाद रूट पर ट्रेनों का संचालन सुचारू किया जा सका। प्रदर्शनकारियों की पहचान के लिए लोगों से बात की जा रही है। उन्होंने बताया कि बयाना सदर थाने में रेल रोकने और नुकसान पहुंचाने का मामला दर्ज हो गया है। रेलवे की तरफ से भी प्रदर्शनकारियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज करवाई जाएगी। रेलवे के उच्च अधिकारियों के निर्देश मिलते ही एफआईआर दर्ज करवा देंगे। रिपोर्ट में बयाना सदर थाने के एसएचओ कृष्णवीर ने बताया कि 23 मई को पीलूपुरा के पास शहीद स्मारक पर श्रद्धांजलि सभा हुई। इसमें विजय बैंसला और गुर्जर समाज के करीब 200 लोग इकट्?ठा हुए। इन्होंने शहीद स्मारक के विकास, 5 परसेंट आरक्षण, 372 रीट टीचर पदों पर नियुक्ति और गुर्जर आंदोलन के मुकदमे वापस लेने के संबंध में चर्चा की गई।

भजनलाल का चला जादू: निकाय और पंचायत उपचुनाव में भाजपा की बड़ी जीत

डोटासरा के गढ़ में हार गई कांग्रेस

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राजस्थान के 12 जिलों में हुए पंचायत और नगर निकाय उपचुनावों में कांग्रेस को बड़ा झटका लगा है। बीजेपी ने राजस्थान के नगरीय निकाय और पंचायतीराज संस्थाओं के उपचुनावों में कुल 36 सीटों में से 28 सीटों पर जीत दर्ज की। जिनमें से 27 पर भाजपा के प्रत्याशी और 1 पर भाजपा समर्थित प्रत्याशी विजयी रहे। पंचायत और नगर निकाय उपचुनाव में बीजेपी की जीत पर सोमवार को भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने कांग्रेस पर जमकर हमला बोला है। उन्होंने कहा कि हाल के उपचुनावों में बीजेपी ने पंचायती राज की 28 सीटों पर जीत दर्ज की है। यह जीत राजस्थान सरकार के जनहित कार्यों और विकास योजनाओं पर जनता की मुहर है। बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि बीजेपी को अलवर, अजमेर शहर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, बालोतरा, जयपुर, झुंझुनूं, करौली, सिरोही जैसी जगहों पर अच्छी बढ़त मिली है। इससे पहले भाजपा के पास केवल 15 सीटें थीं और अब यह संख्या बढ़कर 28 हो गई है। वहीं कांग्रेस को करारा झटका लगा है। उसकी 15 में से केवल 4 सीटें ही बची हैं। इस दौरान मदन राठौड़ ने गोविंद सिंह डोटासरा पर जमकर निशाना साधा है। जो नेता पूरे प्रदेश में भाषण दे रहे हैं, वे अपनी ही विधानसभा सीट लक्ष्मणगढ़ में कांग्रेस प्रत्याशी को नहीं जिता पाए। यह उनकी और कांग्रेस की ज़मीनी सच्चाई उजागर करता है। डोटासरा अपना घर तक नहीं संभाल पा रहे हैं। बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष ने कांग्रेस को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि दूसरों के घरों पर पत्थर फेंकने से पहले अपने घर की हालत देखनी चाहिए।

'मास्साब' ने शिक्षा मंत्री को की रिश्वत की पेशकश, मंत्री ने कराया रंगे हाथों गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। जयपुर के सिविल लाइंस स्थित शिक्षा मंत्री मदन दिलावर के सरकारी आवास पर एक सरकारी शिक्षक ने मंत्री को रिश्वत देने की कोशिश की। मंत्री की तरफ से सोमवार सुबह जनसुनवाई की जा रही थी। जन सुनवाई के दौरान कई लोग मंत्री के आवास पर मौजूद थे। इस दौरान बांसवाड़ा का एक सरकारी शिक्षक भी अपने काम के लिए मंत्री से मिलने के लिए आया था। उसने अपनी मांग से संबंधित कुछ कागज के साथ एक फोल्डर शिक्षा मंत्री को दिया। साथ में एक मिठाई का डिब्बा भी था और एक लिफाफा भी फोल्डर में रखा हुआ था। फोल्डर देते वक्त शिक्षा मंत्री अन्य लोगों से मुलाकात भी कर रहे थे। ऐसे में फोल्डर में रखे लिफाफे पर नजर नहीं पड़ी। थोड़ी देर बाद जब लिफाफा देखा तो मंत्री मदन दिलावर हैरान रह गए। मंत्री के कार्यालय में काम करने वाले कर्मचारियों ने फोल्डर खोला तो उसमें एक लिफाफा रखा हुआ था। उस लिफाफे में पांच हजार रुपए थे। कर्मचारियों ने तुरंत शिक्षा मंत्री को इसकी जानकारी दी। मंत्री को जब पता लगा तो उन्होंने शिक्षक को बुलाया। मंत्री ने शिक्षक से पूछा कि फोल्डर में ये लिफाफा किसने रखा। इस पर शिक्षक ने कहा कि यह लिफाफा आपके लिए ही रखा था। इसके बाद शिक्षा मंत्री भड़क गए और उन्होंने पुलिस को सूचना दे दी। रिश्वत की पेशकश करने वाले सरकारी टीचर को पुलिस ने हिरासत में ले लिया। उससे पूछताछ की जा रही है। रिश्वत की पेशकश करने वाले सरकारी शिक्षक को पुलिस के हवाले करने के बाद शिक्षा मंत्री ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि किसी शिक्षक की ओर से मंत्री को रिश्वत देने की घटना से वे हैरान हैं। क्या पहले कभी ऐसा हुआ। अगर पूर्ववर्ती सरकार के समय इस तरह से काम होते होंगे तो यह बहुत दुखद घटना है। शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने कहा कि यह घटना उनके जीवन की सबसे खराब घटना है। दिलावर ने कहा कि रुपए देकर कोई काम नहीं करा सकता।

अलवर जयपुर टाइम्स

जयपुर, मंगलवार
10 जून, 2025

जिला कलक्टर की अध्यक्षता में साप्ताहिक समीक्षा बैठक आयोजित

योग दिवस की तैयारी हेतु अधिकारियों को दिए निर्देश

जयपुर टाइम्स

खैरथल-तिजारा(निसं.)। जिला कलेक्टर किशोर कुमार की अध्यक्षता में सोमवार को जिला कलेक्ट्रेट सभागार में विभिन्न विभागों की साप्ताहिक समीक्षा बैठक आयोजित हुई। जिला कलक्टर किशोर कुमार ने 21 जून को आयोजित किए जाने वाले योग दिवस की तैयारी हेतु संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने योग दिवस के दिन आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रम स्थान पर योगा टीचर्स की ड्यूटी लगाने हेतु आयुर्वेद विभाग तथा पानी, मेट सहित अन्य आधारभूत सुविधाओं हेतु नगर परिषद खैरथल को निर्देशित किया। जिला कलक्टर किशोर कुमार ने विभागों को भेजे गए एमपी/एमएलए परिवादों की समीक्षा कर शेष परिवादों के जवाब भिजवाने के निर्देश दिए। उन्होंने संपर्क पोर्टल पर लंबित चल रहे परिवादों का समय पर निस्तारण कर आमजन को राहत पहुंचाने एवं एवरेज डिस्पोजल टाइम में सुधार करने के निर्देश दिए। उन्होंने संपर्क पोर्टल पर विभागवार पेंडेंसी की समीक्षा करते हुए 30 दिवस से ऊपर लंबित परिवादों को निस्तारित करने के निर्देश दिए। उन्होंने विभागवार योजनाओं की समीक्षा कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। जिला कलेक्टर ने लाडो योजना की प्रगति में कमी पर गंभीरता दिखाते हुए संबंधित अधिकारी को योजना में प्रगति लाने के निर्देश दिए, ताकि सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का लाभ नीचे तबके तक मिल सके। इसी प्रकार उन्होंने एनएफएसए के निर्धारित लक्ष्य अनुसार गरीब परिवारों को जोड़ने के निर्देश दिए साथ ही वंदे गंगा अभियान के तहत सभी सरकारी कार्यालय के वाटर हार्वेस्टिंग स्ट्रक्चर को सुधारने के निर्देश दिए ताकि आगामी बारिश में जल संचय हो सके। उन्होंने वंदे गंगा अभियान की प्रगति की समीक्षा कर अधिक से अधिक लोगों में जल संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाने के निर्देश दिए। जिला कलेक्टर ने ग्रीष्म ऋतु को देखते हुए बिजली एवं पानी की व्यवस्था को सुचारू रूप से उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। जिला कलक्टर ने सीएमएचओ को निर्देशित किया कि मौसम में बदलाव को देखते हुए मौसमी बीमारियों के रोकथाम के लिए उपयुक्त उपाय सुनिश्चित करें। उन्होंने बीमारियों की रोकथाम की निरन्तर मॉनिटरिंग करते हुए अस्पतालों में सुविधाऐं बढाने, मरीजों को सरकारी योजनाओं का लाभ देने के निर्देश दिए। बैठक के दौरान अतिरिक्त जिला कलेक्टर शिवपाल जाट, कोषाधिकारी सुरेश कुमार बंसल, जिला रसद अधिकारी राकेश सोनी, सीडीपीओ बीना गुप्ता, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ अरविंद गेट, बिजली विभाग सहायक अभियंता दिनेश भड़ाना, सार्वजनिक निर्माण विभाग, पीएचईडी, पुलिस, राजीविका, बिजली, कृषि, वन, शिक्षा, सहित अन्य विभाग के अधिकारी मौजूद रहे।

पंचायती राज संस्थाओं के उपचुनाव 2025: निर्वाचन क्षेत्र संख्या 29 से भाजपा की मुन्नी बाई विजयी

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। पंचायती राज संस्थाओं के उपचुनाव 2025 के अंतर्गत जिला परिषद सदस्य के लिए निर्वाचन क्षेत्र संख्या 29 (कठूमर) हेतु बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय में एवं पंचायत समिति मालाखेडा के सदस्य के रूप में निर्वाचन क्षेत्र संख्या 16 हेतु उपखंड मुख्यालय मालाखेड़ा पर मतगणना सम्पन्न हुई। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला ने बताया कि जिला परिषद सदस्य निर्वाचन क्षेत्र सं या 29 (कठूमर) के लिए सम्पन्न हुई मतगणना में कुल विधि मान्य मत 11698 में से भारतीय जनता पार्टी की अभ्यार्थी मुन्नी बाई को 6437 मत, इण्डियन नेशनल कांग्रेस के अभ्यार्थी चेतराम को 5157 मत मिले तथा नोटा पर 104 मत पडे। इस प्रकार भारतीय जनता पार्टी की अभ्यार्थी मुन्नी बाई 1280 मतों से विजयी घोषित हुई। उन्होंने बताया कि पंचायत समिति मालाखेडा के सदस्य के रूप में निर्वाचन क्षेत्र सं या 16 के लिए स पन्न हुई मतगणना में कुल विधि मान्य मत 1664 में से निर्दलीय अ यार्थी भोमराज को 1132 मत, भारतीय जनता पार्टी अ यार्थी भारत सिंह जाट को 522 मत मिले तथा नोटा पर 10 मत पडे। इस प्रकार निर्दलीय अ यार्थी भोमराज 610 मतों से विजयी घोषित हुए।

खाद्य सुरक्षा अधिकारियों ने की बड़ी कार्रवाई, दूषित दो सौ लीटर पनीर कराया नष्ट

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। आयुक्त खाद्य सुरक्षा एवं औषधि नियंत्रण जयपुर एवं मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी अलवर डॉ योगेंद्र शर्मा के निर्देशन में जिले में चलाए जा रहे शुद्ध आहार मिलावट पर वार अभियान के तहत सोमवार को खाद्य सुरक्षा अधिकारियों ने बड़ी कार्रवारई की। सीएमएचओ ने बताया कि खाद्य सुरक्षा अधिकारी केशव कुमार गोयल एवं विश्व बंधु गुप्ता ने आदिना का बास, रामगढ़ स्थित पनीर निर्माण एवं विक्रय इकाई श्री श्याम इंटरप्राइजेज का निरीक्षण किया तथा निरीक्षण के दौरान वहां पर एक टंकी में करीब 200 लीटर दूध पनीर बनाने एवं बिक्री हेतु रखा हुआ था जो कि दूषित हो चुका था उसमें मिलावट का शक होने पर उसमें से दूध का नमूना लेकर शेष दूध को मौके से नष्ट कराया गया, इसी क्रम में रघुनाथगढ़ रामगढ़ स्थित पनीर निर्माण एवं विक्रय इकाई से एक पनीर का नमूना जांच हेतु संग्रहित किया जाकर प्रयोगशाला में भिजवाया गया।

जिला कलक्टर ने ई-वेस्ट संग्रहण वाहनों को हरी झंडी दिखाकर ई-वेस्ट जागरूकता एवं संग्रहण अभियान का किया शुभारंभ

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। राजस्थान प्रदूषण नियंत्रण मंडल के क्षेत्रीय अधिकारी ने बताया कि विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में अलवर शहर में 11 जून तक ई-वेस्ट जागरूकता एवं संग्रहण अभियान चलाया जा रहा है। जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला ने कलक्ट्रेट परिसर से ई-वेस्ट संग्रहण वाहनों को हरी झंडी दिखाकर अभियान का शुभारंभ किया। उन्होंने बताया कि सभी सरकारी एवं गैर सरकारी विभाग, उद्योग, चिकित्सा संस्थान एवं आमजन अपना ई-वेस्ट अधिकृत रिसाईकर्ल्स को देकर उसका उचित मूल्य प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि राजस्थान प्रदूषण नियंत्रण मंडल द्वारा मैसर्स रामदास ट्रेडिंग कंपनी एवं ग्रीनस्केप ईको मैनेजमेंट प्राइवेट लिमिटेड रिसाईकल्स को अधिकृत किया गया है। अभियान के दौरान ई-वेस्ट को सुरक्षित और जिम्मेदारी से निस्तारण कर पर्यावरण को होने वाले नुकसान से बचाने के लिए जागरूक भी किया जाएगा। अभियान में घरों एवं दुकानों से निकलने वाले ई-वेस्ट को कलेक्शन करने हेतु व्हीकल चलाए जाएंगे एवं कलेक्शन सेंट्रो पर आमजन पुराने मोबाइल फोन, कंप्यूटर, लैपटॉप, टेलीविजन, फ्रिज, एलइडी मॉनिटर, घरेलू उपकरण और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जमा करवा सकते हैं।

रोटरी क्लब अलवर ने लगाया दसवां वाटर कूलर

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। रोटरी क्लब अलवर द्वारा ष्टस्ऱ प्रोजेक्ट के तहत आर के इंफ्रा के राकेश जैन अगोनीज के सौजन्य से वाटर कूलर लगाने के क्रम में आज 9 मई 2025 सोमवार को दसवां वाटर कूलर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सिरमोली (अलवर) में स्थापित कर उद्धघाटन किया गया। इस वाटर कूलर के समस्त रख रखाव की जिम्मेवारी स्कूल की रहेगी। उद्धघाटन कार्यक्रम में रोटरी क्लब अलवर अध्यक्ष दीपक कट्टा, रोटश कोषाध्यक्ष बी डी अग्रवाल, प्रोजेक्ट कॉर्डिनेटर अशोक कुमार (लेमिनेशन वाले), विकास गुप्ता, सुभाष शर्मा एवं स्कूल प्रिन्सिपल अख्तर हुसैन, कनिष्ठ सहायक प्रिंस खेरिया, सरपंच राहुल खान व अन्य ग्रामवासी उपस्थित रहे। इस प्रोजेक्ट के चेयरमैन क्लब के पूर्व अध्यक्ष नीरज जैन हैं।

कॉल्विन शील्ड राज्य स्तरीय क्रिकेट प्रतियोगिता के लिए अलवर टीम की घोषणा

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। राजस्थान क्रिकेट संघ (RCA) द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय कॉल्विन शील्ड टूर्नामेंट के लिए अलवर ज़िले की टीम का चयन कर लिया गया है। अलवर ज़िला क्रिकेट संघ के अध्यक्ष मोहित यादव के निर्देशन अनुसार चयन प्रक्रिया में पहले खिलाड़ियों के ट्रायल्स आयोजित किए गए और फिर सिलेक्शन मैच कराए गए, जिनमें बेहतरीन प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को फाइनल टीम में शामिल किया गया। अलवर की यह टीम 11 जून से जयपुर में शुरू हो रहे एलिट ग्रुप के मुकाबलों में भाग लेगी, जहाँ टीम का सामना जयपुर, उदयपुर और श्रीगंगानगर की टीमों से होगा। टीम की घोषणा के अवसर पर ज़िला क्रिकेट संघ अलवर के अध्यक्ष मोहित यादव व सेक्रेटरी पवन गोयल जी ने सभी चयनित खिलाड़ियों को हार्दिक बधाई दी और उनके उज्ज्वल प्रदर्शन की कामना की। उन्होंने कहा, "हमारा प्रयास रहा है कि पूरी तरह निष्पक्ष और पारदर्शी चयन प्रक्रिया के माध्यम से एक सशक्त टीम का गठन किया जाए। मुझे विश्वास है कि यह टीम मैदान पर अपने प्रदर्शन से अलवर ज़िले का नाम रोशन करेगी।" टीम के मैनेजर की जिम्मेदारी अकबर ख़ान को सौंपी गई है और कोच अनिल यादव हैं।

घोषित टीम इस प्रकार है

अमोल चेलानी (कप्तान), राहुल जाट (उपकप्तान), सचिन यादव, सौरभ गोदारा, रोहन नागर, अवनीत सैनी, गौरव मंगलानी, अजय बंजारा, अल्ताफ़ खान, तसलीम, शिंदबाद, प्रवीण कुमार, यश यादव, नितिन गुप्ता, अक्षय, निश्चय, सलीम, असद, तरुण सैनी, आशिक़ खुर्शीद, प्रिंस सिंह, शिवम रंजन। मोहित यादव ने कहा कि अलवर ज़िला क्रिकेट संघ को विश्वास है कि यह टीम राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करेगी और ज़िले की खेल प्रतिभा को नई पहचान दिलाएगी।

मीटिंग में की 'संविधान बचाओ रैली, जय हिंद सभा और पूर्व केंद्रीय मंत्री सिंह के जन्मदिन की तैयारियों पर चर्चा

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। जिला कांग्रेस कमेटी, अलवर की एक आवश्यक मिटिंग सोमवार को हुई। जिसमें मुख्य अतिथि पी सी सी उपाध्यक्ष, संभाग प्रभारी एवं पूर्व विधायक रमेश खंडेलवाल एवं अध्यक्षता कांग्रेस जिलाध्यक्ष योगेश मिश्रा ने की। जिला प्रवक्ता रिपु दमन गुप्ता ने बताया कि मौजपुर हॉउस पर आयोजित मीटिंग में कांग्रेसजनों ने 'संविधान बचाओ रैली, जय हिंद सभा और पूर्व केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह के 12 जून को जन्मदिन के अवसर पर कार्यक्रमों के बारे में विचार विमर्श किया। कांग्रेस जिलाध्यक्ष योगेश मिश्रा ने कहा कि सिंह हम सब के सर्वमान्य नेता है, उन्होंने विश्व पटल पर अलवर को पहचान दिलवाई है, हमारा नैतिक दायित्व बनता है कि हम उनका जन्मदिन सादगी के साथ मनाये। उन्होंने बताया कि जन्मदिन के अवसर पर प्रात साढ़े 7 बजे भवानी तोप के पास स्थित गौशाला में गौसवामनी, प्रात 8 बजे मोती डूंगरी के पास स्थित युवरानी महेंद्र कुमारी पार्क मैं पौधारोपण, प्रात साढ़े 8 बजे राजीव गांधी सामान्य चिकित्सालय में फल वितरण एवं काली मोरी पुलिया के पास स्थित मौजपुर हाउस में प्रात 9 बजे से विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रमों में अलवर की 11 विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस के पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं आमजन शामिल रहेंगे। मिटिंग में रमेश खंडेलवाल, पी सी सी उपाध्यक्ष एवं संभाग प्रभारी, कांग्रेस जिलाध्यक्ष योगेश मिश्रा, अजीत यादव, गोपालदास खटीक, रोहिताश चौधरी, गफ्फूर खान, संजय यादव, अनिल जैन, बलगम यादव, रिपुदमन गुप्ता, चंद्रभान गुर्जर, उमरदीन खान,जीत कौर सांगवान, लीली यादव, बसमीना, हरिशंकर रावत, चौथमल सैनी, बनवारी लाल शर्मा, दशरथ सिंह शेखावत, मूलचन्द गुर्जर, रमन सैनी, अनूप शर्मा, भीम गुर्जर, शिव सहाय मीणा, डाल चन्द वर्मा, मनीष कोली, राजेश सिद्ध, हुकम सिंह, के के खंडेलवाल, गौरी शंकर, गोपाल जायसवाल, राहुल खान, गब्बर सिंह, इंद्र कुमार, कप्तान सिंह, नरेंद्र मिश्रा, डॉ.तस्लीम, नवाब, शहजाद खान, हरकेश मीणा, अनिल कुमार, अशोक नंदा ,अजीत, मुकेश सैनी, राजेंद्र प्रसाद, संजय शुक्ला, लोकेश कुमार, अनिल दुबे, दुलीचंद कोली, सत्यनारायण शर्मा, रामगोपाल सोनी सहित कांग्रेस के कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

मिलावट खोरो के खिलाफ खाद्य सुरक्षा विभाग कि कार्रवाई

जयपुर टाइम्स

खैरथल - तिजारा(निसं.)। जिला कलेक्टर एवं मजिस्ट्रेट किशोर कुमार के दिशा निर्देश में सोमवार को खाद्य सुरक्षा विभाग द्वारा ग्राम तेहडका तहसील मुंडावर में मिलावटखोर के खिलाफ कार्रवाई कि गयी मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ अरविंद गेट के नेतृत्व में खाद्य सुरक्षा विभाग ने मुखबिर की सूचना पर मैसर्स बिल्लू डेयरी ग्राम तेहडका तहसील मुंडावर पर कार्रवाई कीगई। कार्रवाई के दौरान खाद्य सुरक्षा विभाग ने मौके पर मिलावटी दूध बनाने के लिए काम आने वाला लैक्टोज मोनोहाइड्रेट पाउडर और स्प्रे ड्रॉयड स्कीम मिल्क पाउडर के कट्टे, रिफाइंड तेल के पीपे और मिक्सर ग्राइंडर प्राप्त हुआ कार्रवाई के दौरान मैसर्स बिल्लू डेयरी ग्राम तेहडका तहसील मुंडावर वीरेंद्र सिंह पुत्र श्रीराम उम्र 57 वर्ष जाति जाट निवासी मुंडावर ने पूछताछ में बताया कि उसके द्वारा प्रतिदिन करीब 800 लीटर दूध डेयरी में सप्लाई किया जाता है मौके पर डेयरी संचालक से मिलावटी दूध बनाने की विधि की जानकारी ली गई। मौके पर उपस्थित खाद्य सुरक्षा विभाग की टीम ने कार्रवाई करते हुए तुरंत मौके पर 2 लैक्टोज मोनोहाइड्रेट का कट्टे, स्किम्ड मिल्क पाउडर परम के दो कट्टे और रिफाइंड तेल के पीपे जप्त किये गए विभाग द्वारा लैक्टोज मोनोहाइड्रेट और स्किम्ड मिल्क पाउडर परम का बिल मांगने पर कारोबारी द्वारा बिल ना होने की बात कही गई विभाग द्वारा पकड़े गए खाद्य पदार्थ के कट्टे मुलत दूध में मिलावट किए जाने में काम आना बताया गया जिसका बेचान डेयरी वालों और शादी समारोह मे सप्लाई को किया जाता था। नमूने को खाद्य सुरक्षा विभाग प्रयोगशाला में भेजा जाएगा एवं नमूने का परिणाम आने के बाद एफएसएसएआई अधिनियम 2006 के तहत कारोबारी पर कार्रवाई की जाएगी कार्रवाई के दौरान खाद्य सुरक्षा अधिकारी हेमंत कुमार यादव, थानाधिकारी ततारपुर अंकेश चौधरी, रूपराम, महिपाल गुर्जर आदि मौजूद रहे।

इनकम टैक्स रिटायर्ड ऑफिसर की बैठक आयोजित

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) सेंट्रल रिवेन्यू इनकम टैक्स रिटायर्ड ऑफिसर्स एसोसिएशन राजस्थान की बैठक सोमवार को प्रेम प्रकाश आईआरएस की अध्यक्षता में आरएएस क्लब में संपन्न हुई। जिसमें राजस्थान के विभिन्न सदस्यों ने भाग लिया बैठक में सीजीएचएस संबंधित अस्पतालो सम्मलित एवं पेंशन व आठवे वेतन आयोग पर खुलकर चर्चा की गई। वही बैठक में व्याप्त विसंगतियों का समाधान करने पर विचार हुआ साथ ही वित्तीय स्थिति को लेकर भी चर्चा की गई। एसोसिएशन के जनरल सेक्रेटरी एस. सी. हाडा ने बताया कि आगामी बैठक कोटा में आयोजित होगी वही इस अवसर पर प्रेमप्रकाश, शिवचरण हाड़ा, जी आर पारीक, एम सी रस्तोगी, रमेश चंद एसोसिएशन के सदस्य मौजूद रहे।

मानसून पूर्व तैयारियों में किसी भी तरह की लापरवाही नहीं होगी बर्दाश्त

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। आगामी मानसून पूर्व तैयारियों में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं होगा, बारिश, बारिश जनित परिस्थितियों के चलते किसी भी प्रकार का हादसा होने की स्थिति में संबंधित अधिकारी के खिलाफ व्यक्तिशः जिम्मेदारी तय की जाएगी। जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने अधिकारियों को जिले में बाढ़ नियंत्रण एवं बचाव के समस्त आवश्यक इंतजाम समय रहते सुनिश्चित करने के निर्देश दिये हैं। सोमवार को कलेक्ट्रेट सभागार में जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की बैठक का आयोजन हुआ। बैठक की अध्यक्षता करते हुए जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने संबंधित विभागों की मानसून पूर्व तैयारियों की समीक्षा की। बैठक में नगर निगम जयपुर ग्रेटर आयुक्त श्रीमती रुक्मणी रियार एवं नगर निगम जयपुर हैरिटेज आयुक्त अरुण कुमार हसीजा ने मानसून को लेकर नगर निगम की तैयारियों एवं इंतजामों की जानकारी दी। जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने विभागीय अधिकारियों को अलर्ट मोड पर रहते हुए आपसी समन्वय स्थापित करते हुए बाढ़ नियंत्रण एवं बचाव कार्यों को सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। उन्होंने जयपुर विकास प्राधिकरण, नगर निगम जयपुर ग्रेटर एवं जयपुर हैरिटेज के अधिकारियों को सिवरेज एवं नालों की गुणवत्तापूर्ण सफाई का कार्य जल्द से जल्द पूर्ण करने, सफाई के बाद सड़क पर जमा कीचड़ एवं गंदगी का उठाव करवाने, खुले सिवरेज के खुले चैंबर्स और मेनहोल पर ढक्कन लगवाने एवं नालों पर फैरो कवर लगवाने के निर्देश दिये। जिला कलक्टर ने बाढ़ नियंत्रण कक्षों की स्थापना के साथ-साथ मिट्टी के कट्टों, ट्रेक्टर-ट्रॉलियों, जेसीबी, पोकलेन, मडपंप, सहित मानव संसाधन की उपलब्धता भी सुनिश्चित करने के लिए निर्देशित किया। जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने जल संसाधन विभाग के अधिकारियों को जिले के सभी बांधों पर सहज दृश्य एवं बड़े अक्षरों में अंकित चेतावनी बोर्ड लगवाने के निर्देश दिये। उन्होंने पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास विभाग के अधिकारियों को जिले के सभी छोटे बड़े तालाबों पर चेतावनी बोर्ड लगावाने के निर्देश दिये। बैठक में सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधिकारियों को रपट क्षेत्र एवं लो-लाइन एरिया की टूट, रेलिंग एवं जंजीर को दुरुस्त करवाने, बांधों की आवश्यकता अनुसार मरम्मत करवाने के लिए निर्देशित किया गया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिये कि अतिवृष्टि होने पर भूमि कटाव और जलभराव से निपटने एवं रेस्क्यू ऑपरेशन्स के लिए आवश्यक उपकरणों की उपलब्धता रखी जाए। बैठक में जिला कलक्टर ने विद्युत विभाग के अधिकारियों को ढीले तारों को कसने, झुके हुए बिजली के पोलों को सीधा करने, खुले फीडरों बंद करने, खुले तारों को दुरुस्त करने एवं लो-लाइन पैनल बॉक्स एवं ट्रांसफार्मर को ऊंचाई पर लगवाने एवं मानसून सीजन के दौरान निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने, जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग के अधिकारियों को पाइप लाइन की लीकेज दुरुस्त करने, आवश्यकता होने पर टैंकरों से पेयजल आपूर्ति की व्यवस्था करने के निर्देश दिये। जिला कलक्टर ने संबंधित विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिये कि वे अपने यहां बाढ़ नियंत्रण कक्ष स्थापित कर ले एवं उन पर पूरी जानकारी रखने वाले अधिकारियों को ही नियुक्त किया जाए। उन्होंने चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, रसद विभाग, पुलिस, एसडीआरएफ, सिविल डिफेंस, वन विभाग, नगर निगम, जेडीए, जयपुर मैट्रो, गृह सुरक्षा, शिक्षा, पशुपालन सहित अन्य कई विभागों के अधिकारियों को भी मानसून के दौरान विभागीय स्तर पर अपेक्षित समस्त इंतजाम दुरुस्त रखने के निर्देश प्रदान किए।

मुख्यमंत्री शिक्षित राजस्थान अभियान' की समीक्षा बैठक

शासन सचिव शिक्षा कृष्ण कुणाल ने दिए नोडल अधिकारियों की नियुक्ति के निर्देश

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भावना से प्रेरित राज्य सरकार की एक फ्लैगशिप योजना 'मुख्यमंत्री शिक्षित राजस्थान अभियान' की प्रगति की समीक्षा व आगामी कार्ययोजना को लेकर सोमवार को बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता शासन सचिव शिक्षा कृष्ण कुणाल ने की। कुणाल ने कहा कि यह अभियान शिक्षा की गुणवत्ता के नए आयाम स्थापित करने की दिशा में एक दृढ़ और समन्वित प्रयास है। योजना के अंतर्गत चार प्रमुख घटक- विद्यालय, विद्यार्थी, शिक्षक व शैक्षणिक परिणाम निर्धारित किए गए हैं, जिन पर आधारित कुल 40 बिंदुओं के क्रियान्वयन की रूपरेखा तैयार की गई है। बैठक में दो प्रमुख घटकों पर विस्तृत चर्चा हुई, अन्य घटकों पर आगामी बैठकों में मंथन किया जाएगा। कुणाल ने अभियान की प्रगति में गति लाने के लिए नोडल अधिकारियों की नियुक्ति के निर्देश दिए। शिक्षा सचिव ने अभियान से संबंधित कार्यों की क्रियान्विति नोडल अधिकारी की ओर से सुनिश्चित किए जाने पर जोर देते हुए स्पष्ट किया कि अभियान के सफल क्रियान्वयन के लिए एनआईसी, आरएससीईआरटी, समसा एवं निदेशालय के बीच समान सहभागिता सुनिश्चित की जाएगी। बैठक में राज्य परियोजना निदेशक व आयुक्त अनुपमा जोरवाल, निदेशक माध्यमिक शिक्षा आशीष मोदी, निदेशक प्रारंभिक शिक्षा सीताराम जाट, निदेशक आरएससीईआरटी, निदेशक आरसीटीबी, अतिरिक्त राज्य परियोजना निदेशक डॉ. ओमप्रभा सहित विभागीय उपायुक्त और अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

सम्पूर्णा के 17वें सत्र में "जल संरक्षण और प्रकृति" पर विशेष परिचर्चा, पर्यावरण जागरूकता को मिला नया आयाम

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) सम्पूर्णा संस्था द्वारा आयोजित 40 दिवसीय बाल एवं महिला संस्कार शिविर के 17वें सत्र का आयोजन सोमवार को जयपुर स्थित सोहम फार्म में किया गया। सत्र का मुख्य विषय "जल संरक्षण और प्रकृति" रहा, जिस पर विशेषज्ञों ने गंभीर चर्चा की। संस्था की कार्यकारी अध्यक्ष आशा जैन ने अतिथियों का स्वागत पटका पहनाकर और प्रतीकचिन्ह भेंट कर किया। संस्थापिका डॉ. शोभा विजेन्द्र ने अपने वक्तव्य में कहा कि "जल संकट से बचने के लिए समाज के हर नागरिक को प्रकृति संरक्षण में सहभागी बनना होगा।" परिचर्चा में पर्यावरणविद, सामाजिक कार्यकर्ता एवं लेखकों ने विचार रखे। प्रख्यात लेखिका डॉ. शिप्रा माथुर ने जल स्रोतों और वनों के बीच गहरे संबंध को रेखांकित करते हुए वनवासियों के संरक्षण पर बल दिया। उन्होंने कहा कि "जल संरक्षण के लिए केवल प्रयास नहीं, गहन चिंतन और अनुशीलन की जरूरत है।" ग्लोबल बिहारी के संरक्षक दीपक पर्वतीयार ने कहा कि सूर्य, जल और वायु सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध हैं और इन पर कर लगाना अन्याय है। भाजपा राज्य प्रवक्ता डॉ. अपूर्वा पाठक ने शहरी क्षेत्रों में जल संग्रहण प्रणाली को मजबूत करने की आवश्यकता बताई। तरुण भारत संघ के मौलिक जी ने मेवात क्षेत्र में चल रहे जल संरक्षण प्रोजेक्ट्स की जानकारी दी और स्थानीय सहभागिता को सबसे बड़ा कारक बताया। कार्यक्रम का समापन स्मिता कौशिक द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। सभी उपस्थितजनों ने राष्ट्रगान गाकर एकता और संकल्प का संदेश दिया। 32 वर्षों से समाज सेवा में सक्रिय सम्पूर्णा संस्था द्वारा आयोजित यह कार्यक्रम पर्यावरण और जल संरक्षण के क्षेत्र में एक प्रेरणास्पद पहल साबित हुआ।

वन्दे गंगा जल संरक्षण अभियान से अधिकाधिक आमजन को जोड़ें- जिला कलक्टर

कोटपूतली(निसं.) जिला कलेक्ट्रेट कार्यालय में सोमवार को जिला कलक्टर कल्पना अग्रवाल ने राज्य सरकार के निर्देशानुसार 05 से 20 जून तक आयोजित वन्दे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के तहत जिले में दिनांकवार आयोजित किये जा रहे कार्यक्रमों की समीक्षा कर आगामी दिवसों में आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों की तैयारियों का जायजा लिया। उन्होंने कहा कि अभियान के प्रत्येक कार्यक्रम में जनप्रतिनिधियों सहित आमजन की भागीदारी सुनिश्चित करते हुये इसे जन आंदोलन बनाने का कार्य करें। उन्होंने कहा कि जन संरक्षण के प्रति आमजन को जागरूक करने हेतु विभागीय स्तर पर कार्यक्रमों का आयोजन कर नियमित रूप से रिपोर्ट भिजवायें। अभियान के तहत 10 जून को भूजल, जल संसाधन एवं जलग्रहण विकास विभाग द्वारा समस्त क्षेत्र में औरण का चिन्हीकरण, जल संचयन के लिये पूर्व तैयारी एवं मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान चरण 2.1 व 2.2 की कार्ययोजनाओं का समन्वय किया जायेगा। इसी तरह 11 जून को समस्त जिला क्षेत्रों में वन विभाग द्वारा जल संरचनाओं की सफाई एवं ग्राम नालपुर ग्राम पंचायत करोड़ा (बहरोड़) में जल संरचनाओं का अवलोकन किया जायेगा, 12 जून को कृषि एवं उद्यान विभाग द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र, गोनेड़ा में स्प्रिंकलर, ड्रिप, फार्म पॉन्ड, पाईपलाईन स्वीकृति, डिग्गियों की साफ सफाई, प्रगतिशील कृषकों से चर्चा एवं किसान चौपाल का आयोजन किया जायेगा। स्वायत्त शासन विभाग द्वारा हीरोड़ा जोहड़ कांसली में जल स्त्रोत, सार्वजनिक स्थानों की साफ सफाई एवं रखरखाव, 13 जून को समस्त जिला क्षेत्र में जल संसाधन विभाग द्वारा नहरों एवं खालों की उपयोगिता आदि

सुचना

आशीर्वाद माइक्रो फाइनेंस लिमिटेड

अब नए भवन ओम कॉलोनी रेलवे फाटक के पास शिफ्ट हो गई है। (चूरू राजेन्द्र सिंह)। कस्बे में पिछले कई वर्षों से महिलाओं को उनकी जरूरत के हिसाब से समूह बनाकर लोन उपलब्ध कराने का काम कर रही प्रमुख फाइनेंस कम्पनी आशीर्वाद माइक्रो फाइनेंस लिमिटेड अब नये भवन ओम कॉलोनी रेलवे फाटक के पास शिफ्ट हो गया है। कम्पनी के ब्रांच मैनेजर विजय कुमार के अनुसार पहले राधा कृष्ण मंदिर के पास था जो अब ओम कॉलोनी रेलवे फाटक के पास शिफ्ट हो गया है।

ASIRVAD MICRO FINANCE LTD BRANCH CHURU 9103.
SHIFTE ON NEW BRANCH ADDRESS OM COLONY Near RELWE FATAG CHURU -331001
BM VIJAY KUMAR
Mo- 8503873238
Am Rajendar Verma
Mo- 9929561728

किसानों को उच्च गुणवत्तायुक्त बीज एवं उर्वरक उपलब्ध कराना ही राज्य सरकार का प्रमुख ध्येय- डॉ. किरोडी लाल

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। कृषि एवं उद्यानिकी मंत्री डॉ. किरोडी लाल मीणा ने बताया कि किसानों को उच्च गुणवत्ता युक्त खाद, बीज एवं उर्वरक उपलब्ध कराने के लिए राज्य सरकार हर संभव प्रयास कर रही है। उर्वरकों की कालाबाजारी, जमाखोरी और अमानक उर्वरकों व बीजों पर अंकुश लागाने के लिए कृषि विभाग द्वारा समय-समय पर विशेष गुण नियंत्रण अभियान चलाये जाते हैं। कृषि एवं उद्यानिकी मंत्री सोमवार को शासन सचिवालय में विभागीय अधिकारियों की बैठक ले रहे थे। उन्होंने बताया कि विनिर्माताओं और निर्माताओं के निरीक्षण के दौरान अनियमित्ता पाये जाने पर कृषि आदानों से संबंधित नियमों, अधिनियमों, उर्वरकर नियंत्रण आदेश 1985 एवं आवश्यक वस्तु अधिनियम 1955 के तहत बिक्री पर रोक, जबती, लाइसेंश निलंबन या निरस्तिकरण जैसी कार्यवाही की जा रही हैं। माननीय मंत्री महोदय ने बैठक में निर्देशित किया कि कृषि विभाग से संबंधित जन समस्याओं के निराकरणा हेतु एक पृथक कॉल सेंटर की व्यवस्था करें। जहां पर जन शिकायतों का समयबद्ध तरीके से निस्तारण किया जा सकेगा इस हेतु सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग को पत्र लिखने हेतु कहा। अमानक बीज उन्होंने बताया कि अमानक बीज ऐसे बीज होते हैं, जो देखने में असली और प्रमाणित बीज जैसे ही लगते हैं, लेकिन वास्तव में उनकी गुणवत्ता बहुत खराब होती है। इनमें अंकुर दर कम होती है, पौधे की बढ़वार कमजोर होती है और उत्पादन भी अपेक्षित मात्रा में नहीं मिलता है। ये बीज भारतीय बीज अधिनियम 1966 के अनुसार, निर्धारित मानकों पर खरे नहीं उतरते, कुछ मामलों में नकली बीज पुराने या खराब भण्डारन वाले भी होते हैं, जिनकी अंकुर क्षमता लगभग समाप्त हो चुकी होती है।

अमानक बीज से बचाव के उपाय

कृषि मंत्री ने कहा कि किसानों को कृषि विभाग द्वारा पंजीकृत और बीज अधिनियम 1966 के तहत प्रमाणित बीज ही खरीदना चाहिए, बीज खरीदते समय पैकेट पर सर्टिफाइड सीड का चिन्ह, प्रमाणन तिथि, वैधता तिथि, अंकुरण दर और लाइसेंस नम्बर अवश्य देखें। किसान प्रमाणित और ब्रांडेड बीज का ही उपयोग करें। बीज केवल कृषि विभाग से अधिकृत विक्रेताओं या सरकारी बीज निगमों की दुकानों से ही खरीदे, इससे बीज की गुणवत्ता और शिकायत की स्थिति में समाधान की व्यवस्था रहती है। बुवाई से पहले बीज का अंकुरण परीक्षण अवश्य करें, 100 बीजों का एक नमूना लेकर नम कपड़े में अंकुरित कर अंकुरण दर जांची जा सकती है, इससे बीज की क्षमता का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है।

किसानों को अमानक बीजों से बचाव के लिए जागरूक होना बेहद जरूरी है, उन्हें पंचायत स्तर, किसान मेलों, कृषि विभाग के जागरूकता कार्यक्रमों में भाग लेना चाहिए। साथ ही स्थानीय कृषि विज्ञान केन्द्र या कृषि अधिकारी से जानकारी लेकर ही बीज का चुनाव करें। सरकार ने किसानों की सुविधा के लिए कई ऑनलाइन पोर्टल शुरू किए हैं, जैसे 'ई-नाम', आई-कृषि पोर्टल' और 'बीज निगरानी प्रणाली', इन माध्यमों से किसान प्रमाणित बीजों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और शिकायत भी दर्ज करा सकते हैं।

अमानक बीज बेचने वालों की सूचना दें

उन्होंने कहा कि अगर किसी को अमानक बीज बेचने की जानकारी मिले, जो इसकी सूचना तुरंत स्थानीय कृषि विभाग या पुलिस को दें, बीज अधिनियम के तहत ऐसे मामलों में सख्य कार्रवाई का प्रावधान है, किसान लॉट वाईज बिल अवश्य प्राप्त करें ताकि गुणवत्ता सुनिश्चित हो सके   किसानों से अपील की जाती है कि वे प्रमाणित बीज ही खरीदें और सरकार की ओर से जारी दिशा-निर्देशों का पालन करें, इसके साथ ही प्रशासन को भी सख्ती से अमानक बीजों की बिक्री पर रोक लगानी चाहिए, अगर किसान सजग रहेंगे और बीज खरीद में सावाधानी बरतेंगे तो वे अमानक बीजों के जाल से बच सकते हैं और अपनी मेहनत और खेत की खुशहालता सुनिश्चित कर सकते हैं।

शेष रही समस्त ग्राम पंचायतों में होगा ग्राम सेवा सहकारी समितियों का गठनः मंजू राजपाल

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। सहकारिता विभाग की प्रमुख शासन सचिव व रजिस्ट्रार, सहकारी समितियां मंजू राजपाल ने कहा कि राज्य सरकार की बजट घोषणा के अनुरूप राज्य की शेष रही सभी ग्राम पंचायतों में ग्राम सेवा सहकारी समितियों का गठन किया जाना है। इन समितियों के गठन से राज्य में सहकारिता का नेटवर्क मजबूत होगा तथा अधिक लोगों तक सहकारिता की योजनाओं का लाभ पहुंच पाएगा। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि इन समितियों के गठन के कार्य में तेजी लाते हुए निर्धारित समय अवधि से पूर्व शत–प्रतिशत लक्ष्य हासिल करने के प्रयास किए जाएं। राजपाल सोमवार को शासन सचिवालय स्थित कक्ष से वीसी के माध्यम से नवीन ग्राम सेवा सहकारी समितियों के गठन के संबंध में आयोजित समीक्षा बैठक को सम्बोधित कर रहीं थीं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में बहुउद्देशीय ग्राम सेवा सहकारी समितियों की स्थापना के लिए सदस्य संख्या व न्यूनतम हिस्सा राशि के मापदण्डों में 50 प्रतिशत का शिथिलन दिया गया है, जिससे लक्ष्यों की प्राप्ति में आसानी होगी। नवीन समिति की स्थापना के लिए अब न्यूनतम सदस्य संख्या 150 व न्यूनतम हिस्सा राशि 1.50 लाख रुपये होना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि कम जनसंख्या घनत्व वाले जिलों में प्रस्ताव मिलने पर और भी शिथिलता दिए जाने पर विचार किया जा सकता है। प्रमुख शासन सचिव ने कहा कि समिति गठन के मापदण्डों में दी गई शिथिलता से पंचायतीराज जनप्रतिनिधियों व जिला परिषद् सीईओ आदि को भी पत्र लिखकर अवगत करवाया जाना चाहिए ताकि इसका अधिकाधिक लाभ मिल सके। साथ ही, समिति गठन के संबंध में आयोजित होने वाली बैठकों में संबंधित विभागों यथा- पंचायतीराज विभाग व राजस्व विभाग के अधिकारियों को भी आमंत्रित किया जाए। उन्होंने निर्देश दिए कि समिति गठन के लिए प्रस्ताव तैयार होने के बाद उन्हें स्वीकृति के लिए अविलम्ब भिजवाया जाना सुनिश्चित करें। चूंकि सभी शेष रही ग्राम पंचायतों में ग्राम सेवा सहकारी समितियों का गठन होना है, अत केवल माहवार निर्धारित लक्ष्यों पर फोकस करने की बजाय समानान्तर रूप से सभी शेष ग्राम पंचायतों में गठन की प्रक्रिया जारी रखें। राजपाल ने कहा कि एक अप्रेल के बाद राज्य में लगभग 118 नवीन ग्राम सेवा सहकारी समितियों का गठन हो चुका है। इस कार्य में तेजी लाने के लिए सभी अतिरिक्त रजिस्ट्रार (खण्ड) नियमित रूप से इसकी समीक्षा करें। जिन जिलों में समिति गठन के लक्ष्य अधिक हैं, उन जिलों के लिए अलग रणनीति होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि जिन जिलों में खनन क्षेत्र अधिक है एवं किसानों की संख्या कम है, वहां महिला समितियां बनाई जा सकती हैं। साथ ही, आदिवासी क्षेत्रों में वन धन विकास केन्द्रों से समन्वय कर ग्राम सेवा सहकारी समितियां गठित की जा सकती हैं। उन्होंने कहा कि मूल समिति से सदस्य पृथक् कर समिति बनाने की बजाय 150 नये सदस्यों को शामिल कर समिति गठन के प्रयास किए जाएं। बैठक में अतिरिक्त रजिस्ट्रार (द्वितीय) संदीप खण्डेलवाल एवं संयुक्त रजिस्ट्रार (आयोजना) अनिल कुमार सहित सभी अतिरिक्त रजिस्ट्रार (खण्ड) व जिला उप रजिस्ट्रार वीसी के माध्यम से शामिल हुए।

शिक्षा विभागः राइजिंग राजस्थान के एमओयू को धरातल पर लाने पर मंथन

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राज्य के शिक्षा क्षेत्र में निवेश को मूर्त रूप देने के लिए राइजिंग राजस्थान के अंतर्गत हुए एमओयू की प्रगति की समीक्षा बैठक सोमवार को शिक्षामंत्री मदन दिलावर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में शिक्षामंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि निवेश प्रस्तावों को शीघ्रता से धरातल पर उतारा जाए और प्रक्रिया में पारदर्शिता सुनिश्चित की जाए। दिलावर ने भूमि आवंटन व चिन्हीकरण से जुड़ी अड़चनों को त्वरित हल करने और लंबित एमओयू के निस्तारण के लिए ठोस कार्ययोजना बनाने के निर्देश दिए। उन्होंने टोंक, कुचामन व आबू रोड (सिरोही) में प्रस्तावित सैनिक स्कूलों के एमओयू की प्रगति रिपोर्ट की भी जानकारी ली। बैठक में उन्होंने बोर्ड परीक्षाओं (कक्षा 5वीं, 8वीं, 10वीं, 12वीं) में 95% से अधिक परिणाम अर्जित करने वाले विद्यार्थियों तथा विभाग की अन्य उल्लेखनीय उपलब्धियों के प्रचार-प्रसार पर बल देने की बात भी कही। बैठक में 29वें राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह- 2025 की तैयारियों पर भी मंथन हुआ। यह आयोजन 28 जून को जयपुर में प्रस्तावित है, जिसमें 'भामाशाह सम्मान' व 'प्रेरक सम्मान' की दो श्रेणियों में शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाले भामाशाहों को राज्य व जिला स्तर पर सम्मानित किया जाएगा। समारोह में प्रवासी राजस्थानी भामाशाहों का भी सम्मान किया जाएगा व 'भामाशाह दिशा निदेशिका-2025' का विमोचन प्रस्तावित है। दिलावर ने आयोजन की समुचित तैयारियों हेतु अधिकारियों को दिशा-निर्देश दिए। बैठक में शासन सचिव शिक्षा कृष्ण कुणाल, राज्य परियोजना निदेशक व आयुक्त अनुपमा जोरवाल, निदेशक माध्यमिक शिक्षा आशीष मोदी, निदेशक प्रारंभिक शिक्षा सीताराम जाट व अतिरिक्त राज्य परियोजना निदेशक डॉ. ओमप्रभा सहित विभाग के अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

लोकसभा अध्यक्ष बिरला ने आईआईटी जोधपुर में लेक्चर हॉल कांप्लेक्स का किया उदघाटन

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। लोक सभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सोमवार को आईआईटी जोधपुर में लेक्चर हॉल कॉम्प्लेक्स-द्घद्घ का उद्घाटन किया। उन्होंने इस उद्घाटन कार्यक्रम में कहा ?कि भारत अपने युवाओं की अद्वितीय क्षमता के चलते वैश्विक नेतृत्व की दिशा में मजबूती से आगे बढ़ रहा है। भारत का युवा अब रोजगार ढूंढने वाला नहीं बल्कि रोजगार देने वाला बन चुका है, जो स्टार्टअप और नवाचार के माध्यम से देश की अर्थव्यवस्था को गति दे रहा है।बिरला ने कहा कि भारत आधुनिक विज्ञान और अपनी समृद्ध आध्यात्मिक परंपरा की शक्तियों को समाहित करते हुए वैश्विक मंच पर एक संतुलित, नैतिक और चिरस्थायी विकास मॉडल प्रस्तुत कर रहा है। उन्होंने युवाओं विशेषकर विद्यार्थियों से आग्रह किया कि वे 'विकसित भारत' की यात्रा में सक्रिय भागीदार बनें और तकनीक एवं ज्ञान का उपयोग समाजोत्थान के लिए करें। लोक सभा अध्यक्ष ने कहा कि आईआईटी जैसे भारत के तकनीकी संस्थान देश के डिजिटल इकोसिस्टम और आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को सशक्त बना रहे हैं। आईआईटी से निकले युवाओं ने न केवल देश में बल्कि वैश्विक स्तर पर भी अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। इस अवसर पर बिरला ने आईआईटी जोधपुर की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह संस्थान मरुस्थलीय क्षेत्र में परिवर्तन का वाहक बना है जो युवाओं को वैश्विक गुणवत्ता की शिक्षा, शोध और नवाचार की सुविधा देकर उन्हें सशक्त बना रहा है। उन्होंने 'रिसर्च इनिशिएटिव ग्रांट' का वितरण भी किया जिससे नवाचार संबंधी परियोजनाओं को प्रोत्साहन मिलेगा। उन्होंने संस्थान की नई वेबसाइट का शुभारंभ किया और परिसर में पौधारोपण भी किया। बिरला ने देश के सभी उच्च शिक्षण संस्थानों को पारंपरिक शिक्षा से आगे बढ़कर नवाचार और उत्कृष्टता के केंद्र बनाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि कॉलेज और विश्वविद्यालयों को विद्यार्थियों में ऐसी सोच विकसित करनी चाहिए

गौशाला के लिये मन्दिर भूमि में सीमा ज्ञान कराने व खनन कारोबारी को बेदखल कराने की मांग

जिला कलक्टर कार्यालय पर धरना देने पहुँचे संत महात्मा

एसडीएम ने तहसीलदार को शीघ्र सीमा ज्ञान कर बड़ा मन्दिर गौशाला के लिये भूमि सम्भलाने के दिये निर्देश

कोटपूतली(निसं.) निकटवर्ती ग्राम खड़ब बड़ा मन्दिर गौशाला के लिये मन्दिर भूमि में सीमा ज्ञान कराने व खनन कारोबारी को बेदखल कराने की मांग को लेकर सोमवार को महन्त महावीर दास त्यागी व महामंडलेश्वर बालेश्वर दास महाराज के सानिध्य में बड़ी संख्या में सन्त महात्मा एकत्रित होकर जिला कलक्टर कार्यालय पर आसपास के ग्रामीणों व गौरक्षक दलों के कार्यकर्ताओं के साथ धरना देने पहुँचे। इस दौरान वहाँ पूर्व से डीएसपी राजेन्द्र कुमार बुरडक़ व थाना अधिकारी राजेश कुमार शर्मा मय पुलिस जाप्ता के मौजूद मिले। वहीं जिला कलक्टर द्वारा एसडीएम बृजेश चौधरी को संत महात्माओं की सुनवाई करने के निर्देश दिये गये थे। जिस पर एसडीएम बृजेश चौधरी ने सुनवाई करते हुये तहसीलदार रामधन गुर्जर को शीघ्र सीमा ज्ञान कर बड़ा मन्दिर गौशाला के लिये भूमि सम्भलाने के लिये निर्देशित किया। इसके बाद महामंडलेश्वर संत बालेश्वर दास ने धरना स्थगित रखने का निर्णय लिया। जिसको सभी साधु संतों व समर्थन में साथ आने वाले विभिन्न सामाजिक संगठनों के लोगों ने स्वीकार किया। सामाजिक कार्यकर्ता राधेश्याम शुक्लावास ने अधिकारियों को विस्तृत रूप से पुरी जानकारी दी।

केंद्रीय मंत्री मेघवाल ने जल जीवन मिशन सहित केन्द्र प्रवर्तित समस्त योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के दिए निर्देश

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। केन्द्रीय विधि व न्याय मंत्री और बीकानेर सांसद अर्जुन राम मेघवाल ने सोमवार को बीकानेर कलक्ट्रेट में जिला विकास समन्वय व निगरानी समिति (दिशा) की बैठक कर केन्द्र प्रवर्तित 39 अति महत्वपूर्ण योजनाओं और कार्यक्रमों की प्रगति की समीक्षा की। मेघवाल ने जल जीवन मिशन की प्रगति की समीक्षा करते हुए कहा कि यह केन्द्र सरकार की महत्वपूर्ण फ्लैगशिप योजना है। स्वयं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की ओर से इसकी नियमित मॉनिटरिंग की जाती है। इसमें किसी स्तर पर गड़बड़ी नहीं हो, कार्यों की गुणवत्ता और समयबद्धता को लेकर किसी प्रकार का समझौता नहीं किया जाए। उन्होंने मिशन के तहत संचालित 170 लघु तथा 5 वृहद पेयजल योजनाओं की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि सरकार की मंशा के अनुसार प्रत्येक घर को नल के जल से जोड़ने में अधिकारी पूर्ण गंभीरता और जिम्मेदारी से कार्य करें। इसमें धन की कोई कमी नहीं आने दी जाएगी। केन्द्रीय मंत्री ने कहा कि विद्युत निगम की ओर से आरडीएसएस के कार्यों की प्रभावी मॉनिटरिंग की जाए। मरूस्थलीय क्षेत्रों में आंधी-तूफान के कारण विद्युत पोल को नुकसान हो तो इसे अविलम्ब दुरूस्त करने के लिए अतिरिक्त टीमें लगाएं। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में पीएम सूर्यघर योजना को प्रोत्साहन देने व प्रसार–प्रसार के लिए जागरुकता शिविर लगाने के निर्देश दिए। गर्मी के कारण ट्रांसफार्मर जलने की स्थिति में उन्हें अविलम्ब बदलने के निर्देश दिए। मेघवाल ने कहा कि रोड नेटवर्क में बीकानेर को आगे बढ़ाना है। इसके लिए सड़कों से जुड़े सभी कार्य प्राथमिकता से किए जाएं। उन्होंने भारत माला परियोजना में अवार्ड राशि के लंबित मामले जल्द से जल्द निपटाने के निर्देश भी दिए। केन्द्रीय मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना से कोई भी पात्र परिवार वंचित नहीं रहे। उन्होंने अमृत योजना के तहत नगरीय निकायों के सीवरेज-ड्रेनेज गेप कवर करने के लिए आवश्यक कार्ययोजना बनाने के निर्देश दिए। बीकानेर शहर की स्वच्छता रैंकिंग सुधारने के लिए समन्वित तरीके से कार्य करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के प्रति किसानों को जागरुक करने के लिए शिविर लगाए जाएं। मेघवाल ने पीएमश्री विद्यालयों के विकास कार्यों की मॉनिटरिंग बढ़ाने, सामाजिक न्याय व अधिकारिता विभाग की एडिप और वयोश्री योजना के तहत शिविर लगाने व चिन्हित दिव्यांगजनों को उपकरण देने के निर्देश दिए। मेघवाल ने कहा कि प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना के लाभार्थियों की प्रभावी मॉनिटरिंग हो। उन्होंने कहा कि सभ्य, सुसंस्कृत और स्वस्थ सामाजिक व्यवस्था के लिए यह जरूरी है कि बेटे और बेटी में कोई भेद नहीं हो, पीसीपीएनडीटी एक्ट के तहत प्रभावी कार्रवाई की जाए। उन्होंने उपखण्ड अधिकारियों की टीमें बनाकर अवैध खनन के खिलाफ टीम भावना के साथ कार्य करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रदेश में खाद्य व नागरिक आपूर्ति विभाग के गिव अप अभियान की देशभर में सराहना हुई है। इससे वंचित पात्र लोगों को खाद्य सुरक्षा योजना का लाभ मिलना संभव हुआ है। केन्द्रीय मंत्री ने जिले में कोल गैसिफिकेशन और गैसोनेट के माध्यम से गैस पाइपलाइन की दिशा में किए जा रहे प्रयासों के बारे में बताया। उन्होंने जिले का क्लाइमेंट एक्शन प्लान बनाने के निर्देश दिए, नाइट टूरिज्म की संभावनाओं पर चर्चा की। खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री सुमित गोदारा ने पीबीएम अस्पताल के विभिन्न विभागों की गत और वर्तमान वर्ष की ओपीडी रिपोर्ट उपलब्ध करवाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जयपुर की तर्ज पर पीबीएम अस्पताल में मेडिसिन आउटडोर प्रारम्भ किया जाए। उन्होंने कैंसर रिसर्च सेंटर का संचालन और अधिक गंभीरता से करने के निर्देश दिए। उन्होंने पिंक टॉयलेट की स्थिति की समीक्षा की। दुकानदारों को सड़कों पर कचरा नहीं फैंकने के लिए प्रेरित करने को कहा। उन्होंने कहा कि पीएमश्री विद्यालयों में आवेदन के फॉर्मेट उपलब्ध करवाएं जिससे अधिक से अधिक स्कूलों को इस योजना से जोड़ा जा सके। गोदारा ने उप स्वास्थ्य केन्द्रों पर पदस्थ एएनएम को प्रसव संबंधी प्रशिक्षण देने के निर्देश दिए और संस्थागत प्रसव को अधिक से अधिक प्रोत्साहित करने, कम प्रसव वाले केन्द्रों की प्रभावी मॉनिटरिंग के निर्देश दिए। उन्होंने डीएमएफटी में स्वीकृत कार्यों की प्रभावी मॉनिटरिंग करने और अगली बैठक शीघ्र करने के साथ ही डीएफएटी के तहत कक्षा कक्षों के सर्वाधिक प्रस्ताव लेने के निर्देश दिए। उन्होंने बताया कि जिले में खाद्य सुरक्षा योजना के तहत 1 लाख 6 हजार लोगों को जोड़ा गया है, वहीं 86 हजार से अधिक ने स्वेच्छा से लाभ त्याग किया है। उन्होंने बताया कि 21 लाख 35 लाख 60 हजार लोगों को एनएफएसए से जोड़ा गया है। बैठक में खाजूवाला विधायक डॉ. विश्वनाथ मेघवाल, नोखा विधायक सुशीला डूडी, जिला प्रमुख मोडाराम, जिला कलक्टर नम्रता वृष्णि तथा पुलिस अधीक्षक कावेन्द्र सागर सहित विभिन्न जनप्रतिनिधि और अधिकारी मौजूद रहे।

पशुपालन में चारे का संकट

आजादी के बाद से ही वन, स्थायी चरागाह, परती भूमि, घास के मैदान लगातार सिकुड़ गए हैं। इसी का नतीजा है कि जहां 1947 में देश में सात करोड़ हेक्टेयर में घास क्षेत्र थे वहीं अब यह आंकड़ा घट कर 3.8 करोड़ हेक्टेयर रह गया है। यही कारण है कि आज देश में पशुचारे का गंभीर संकट खड़ा हो गया है। सबसे बड़ी विडंबना यह है कि हरे और सूखे चारे के बारे में कोई विश्वसनीय आंकड़ा भी नहीं है। एक मोटे अनुमान के मुताबिक भारत 35.6 फीसद हरे चारे और 10.9 फीसद सूखे चारे की कमी झेल रहा है। कुदरती आपदाओं जैसे सूखा, बाढ़ आदि की दशा में यह संकट विकराल रूप धारण कर लेता है। पशु चारे के अलावा दुधारू पशुओं के लिए मोटे अनाज, खली और अन्य पौष्टिक तत्त्वों की भारी कमी है। पौष्टिक पशु चारे में काम आने वाले मोटे अनाज दूध के भाव मिल रहे हैं, जिसका सीधा नतीजा दुधारू पशुओं के स्वास्थ्य में गिरावट के रूप में सामने आ रहा है। एक बड़ी समस्या यह है कि पशु चारे में हरी घास और हरे

बढ़ती जनसंख्या, क्रय शक्ति में इजाफा, शहरीकरण, बदलती जीवन शैली आदि के कारण दूध और दूध से बने उत्पादों की मांग तेजी से बढ़ रही है। मांग के अनुरूप दुग्ध उत्पाद की उपलब्धता सुनिश्चित कराने के मकसद से अनेक कंपनियां और संगठन इस दिशा में काम कर रहे हैं। सरकारें भी डेयरी उद्योग को प्रोत्साहित कर रही हैं। मगर इसके दूसरी ओर स्थिति यह है कि पशु चारे की कमी पशुपालन के लिए गंभीर समस्या का रूप लेती जा रही है। दरअसल, खाद्यान्न की मांग में निरंतर वृद्धि से पशु चारे के लिए खेती का रकबा सिकुड़ता जा रहा है। शहरों का विस्तार और सड़क जैसी पक्की संरचनाओं के निर्माण में आई तेजी से भी घास वाले मैदानों या गोचर भूमि का अतिक्रमण हो रहा है। भूजल के लगातार नीचे जाने से कुदरती रूप से उगने वाली घास अब लगभग समाप्त होती जा रही है। इसके अलावा नकदी फसलों की खेती की तरफ बढ़ते रुझान के चलते भी पशु चारे की किल्लत बढ़ती गई है। रही-सही कसर किसानों द्वारा कंबाइंड हार्वेस्टर मशीन से गेहूं आदि की कटाई ने पूरी कर दी। गौरतलब है कि कंबाइन हार्वेस्टर से गेहूं की फसल के महज ऊपरी हिस्से की कटाई होती है। बाकी हिस्सा खेत में पड़ा रह जाता है, जिसे बाद में जला दिया जाता है। इससे न सिर्फ खेतों में उगने वाली घास भी नष्ट हो जाती है, फसलों का डंठल बेकार जाने से पशु चारे का संकट पैदा होता है, बल्कि पर्यावरण प्रदूषण में भी बढ़ोतरी होती है। पिछले दिनों जब गेहूं की फसल की कटाई के बाद पंजाब, हरियाणा, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश आदि में किसानों ने बड़े पैमाने पर खेतों में फसलों के डंठल जलाना शुरू किया और वायु प्रदूषण में वृद्धि के आंकड़े दर्ज हुए तो प्रधानमंत्री को भी इस प्रवृत्ति पर लगाम लगाने की अपील करनी पड़ी। मोटे अनाजों, दलहनी और तिलहनी फसलों की खेती में आ रही कमी से भी पशुचारे का संकट गहराया है। इसके अलावा कृषि अपशिष्टों की गत्ता मिलों और मशरूम उद्योगों को ऊंचे दामों पर बिक्री की प्रवृत्ति ने भी पशुचारे का संकट बढ़ाने में आग में घी का काम किया है।

आजादी के बाद से ही वन, स्थायी चरागाह, परती भूमि, घास के मैदान लगातार सिकुड़ गए हैं। इसी का नतीजा है कि जहां 1947 में देश में सात करोड़ हेक्टेयर में घास क्षेत्र थे वहीं अब यह आंकड़ा घट कर 3.8 करोड़ हेक्टेयर रह गया है। यही कारण है कि आज देश में पशुचारे का गंभीर संकट खड़ा हो गया है। सबसे बड़ी विडंबना यह है कि हरे और सूखे चारे के बारे में कोई विश्वसनीय आंकड़ा भी नहीं है। एक मोटे अनुमान के मुताबिक भारत 35.6 फीसद हरे चारे और 10.9 फीसद सूखे चारे की कमी झेल रहा है। कुदरती आपदाओं जैसे सूखा, बाढ़ आदि की दशा में यह संकट विकराल रूप धारण कर लेता है। पशु चारे के अलावा दुधारू पशुओं के लिए मोटे अनाज, खली और अन्य पौष्टिक तत्त्वों की भारी कमी है। पौष्टिक पशु चारे में काम आने वाले मोटे अनाज दूध के भाव मिल रहे हैं, जिसका सीधा नतीजा दुधारू पशुओं के स्वास्थ्य में गिरावट के रूप में सामने आ रहा है।

एक बड़ी समस्या यह है कि पशु चारे में हरी घास और हरे चारे की हिस्सेदारी लगातार घटती जा रही है। जिन राज्यों में चरागाह हैं वहां दुग्ध विकास की परियोजनाएं संचालित ही नहीं की जा रही हैं जैसे हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और पूर्वोत्तर के राज्य। यहां दुधारू पशुओं के बजाय अन्य उद्देश्यों के लिए पशुपालन होता है।संसद में प्रस्तुत कृषि संबंधी स्थायी समिति की रिपोर्ट में भी पशु चारे की कमी पर गंभीर चिंता जताई गई है। रिपोर्ट के मुताबिक चरागाहों की जगहों को खेतों में तब्दील कर उन पर खाद्यान्न, तिलहन और दालें उगाई जा रही हैं। इसीलिए चारे वाली फसलों की खेती पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। इतना ही नहीं, फसलों के अन्य उत्पादों के विविध उपयोग के कारण भी चारे की मांग और आपूर्ति में अंतर बढ़ता जा रहा है। विशेषज्ञों के मुताबिक भारतीय पशुओं की कम उत्पादकता के लिए चारा और पशु आहार की कमी जिम्मेदार है। देश में जितना ध्यान पशुओं के नस्ल सुधार पर दिया जाता है उसका दसवां हिस्सा भी पशुओं की पोषण क्षमता बढ़ाने पर नहीं दिया जाता है। जबकि सच्चाई यह है कि नस्ल सुधार और प्रभावी पशुधन जैसे लक्ष्य तब तक हासिल नहीं होंगे जब तक कि मवेशियों के लिए पर्याप्त भोजन की व्यवस्था न की जाए।

इसी को देखते हुए कई राज्य सरकारों ने एक भारतीय चारा निगम की स्थापना करने, तिलहन खली के निर्यात पर प्रतिबंध लगाने और डंठल बर्बाद करने वाली कंबाइंड हार्वेस्टर मशीन से गेहूं आदि की कटाई पर रोक लगाने का सुझाव दिया है। यह भी मांग की जा रही है कि केंद्र सरकार पशुपालन, डेयरी उद्योग और मत्स्यपालन को कृषि क्षेत्र के बराबर तवज्जो दे और इनमें संलग्न लोगों को कम ब्याज दर पर ऋण और किसान क्रेडिट कार्ड जैसी सुविधाएं दी जाएं। गौरतलब है कि सोया खली के बढ़ते निर्यात से घरेलू बाजार में उसकी कीमतें आसमान छूने लगी हैं और वह अधिकतर पशुपालकों की पहुंच से दूर होती जा रही है।

च्छी गुणवत्ता का चारा न सिर्फ दूध उत्पादन के लिए, बल्कि डेयरी व्यवसाय को लाभकारी बनाने के लिए भी जरूरी है। सकल घरेलू उत्पाद में अकेले भैंस का योगदान गेहूं-धान के सम्मिलित योगदान से ज्यादा है। इससे पशुधन और पशु चारे के महत्त्व का अंदाजा आसानी से लगाया जा सकता है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था का अहम अंग होने के साथ-साथ पशु परिस्थितिकी संतुलन और खाद्य तथा पोषण सुरक्षा मुहैया कराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके बावजूद पशुचारे का उत्पादन सरकारों की वरीयता सूची में जगह बनाने में विफल रहा है।

देखा जाए तो पशु चारे की किल्लत के लिए हमारी अदूरदर्शी नीतियां जिम्मेदार हैं। गौरतलब है कि दूध, मांस और दूसरे पशु उत्पादों की कुल लागत का साठ-सत्तर फीसद हिस्सा मवेशियों के चारे पर ही खर्च होता है। इसके बावजूद अभी तक न पशु आहारों की उपलब्धता बढ़ाने और न ही इनकी लागत कम करने की ओर समुचित ध्यान दिया गया है। इसके अलावा प्राकृतिक चरागाहों के कम होने की प्रवृत्ति पर रोक लगाने और सार्वजनिक चरागाह मैदानों को बनाए रखने या उनकी उर्वरता बढ़ाने के लिए सरकार के पास कोई नीति नहीं है। फसल चक्र में चारा फसलों को शामिल कर चारा फसलों के उत्पादन को प्रोत्साहन देने की योजना अब तक उपेक्षित रही है। देश की कृषि योग्य भूमि में से पांच फीसद से भी कम पर चारे की खेती की जाती है। इससे भी बड़ी विडंबना यह है कि पशुपालन के लिए आबंटित बजट का मामूली हिस्सा ही चारा और पशु आहार क्षेत्र के विकास के लिए खर्च किया जाता है। चारा फसलों के उन्नत बीजों के विकास में न तो सरकारी और न ही निजी क्षेत्र की रुचि है। पशु चारे पर सरकार की उदासीनता को बजटीय आबंटन से समझा जा सकता है। ग्यारहवीं योजना के पांच वर्षों के लिए चारा विकास को लिए कुल 141 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया था, जिसका सालाना औसत 28 करोड़ रुपए था। इसे ऊंट के मुंह में जीरा ही कहा जाएगा। लंबे अरसे से उपेक्षित पशु चारा क्षेत्र की ओर नरेंद्र मोदी सरकार ने ध्यान दिया है।

सम्पादकीय

विकास और रोजगार के नए अवसर पैदा होने की खुल गई संभावनाएं

सड़कें और रेल पटरियां किसी भी देश की विकास रेखा मानी जाती हैं। यही आधारभूत ढांचे का सबसे मजबूत पक्ष होती हैं। इसलिए हर देश द्रुतगामी मार्गों और रेल पटरियों के विकास तथा विस्तार पर विशेष ध्यान देता है। जम्मू-कश्मीर की चिनाब नदी पर बने मेहराबदार पुल को इसी अर्थ में देखा जा सकता है। जम्मू-कश्मीर अभी तक देश के रेल संजाल से कटा हुआ था। इस पुल के चालू हो जाने के बाद वह भी देश की मुख्यधारा रेल यातायात से जुड़ गया है। यह दुनिया का सबसे ऊंचा पुल है, एफिल टावर से भी ऊंचा। इसे बनाना निस्संदेह बड़ी चुनौती थी। जिस इलाके में इसे बनाया गया है, वह भूकम्प की दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील है। यहां हर समय भूकम्प का खतरा बना रहता है। फिर, ऊंचाई अधिक होने के कारण इस पर पड़ने वाले वायुदाब और मौसम के प्रकोप से बचाव के उपाय करना भी कठिन था। मगर काबिल अभियंताओं ने इन तमाम चुनौतियों को स्वीकार किया और एक मिसाल के रूप में इसे खड़ा कर दिया। इसे बनाने में लंबा समय लग गया। इस दौरान कई तरह की अड़चनों का भी सामना करना पड़ा। मगर अब इसके बन कर तैयार हो जाने से अनेक कठिनाइयां दूर हो जाने की उम्मीद जगी है। हालांकि कश्मीर और लद्दाख सड़क मार्ग से अच्छी तरह जुड़े हैं। इन क्षेत्रों में नई सुरंगें बन जाने से सड़कों पर वाहनों की गति भी बढ़ गई है, मगर पहाड़ी क्षेत्रों में सड़कों के जरिए आवागमन उस तरह कभी आसान और सुविधाजनक नहीं रहता, जिस तरह रेल पटरियों से होता है। रेल मार्ग के जरिए न केवल मुसाफिरों की आवाजाही सुगम हो जाती है, बल्कि माल ढुलाई में बहुत आसानी होती है। रेल मार्गों का विकास औद्योगिक उन्नति के लिहाज से बहुत जरूरी माना जाता है। इस अर्थ में चिनाब पुल के खुल जाने से कश्मीर में औद्योगिक विकास और रोजी-रोजगार के नए अवसर पैदा होने की संभावनाएं खुल गई हैं। वहां के हस्तशिल्प और कृषि उत्पाद अब आसानी से देश के बाजारों तक पहुंच सकेंगे। जो कश्मीरी युवा और बहुत सारे स्थानीय लोग आमतौर पर पर्यटन पर निर्भर थे और वर्ष के कुछ महीनों में ही कारोबार कर पाते थे, उन्हें अब पूरे साल कारोबार का अवसर मिल सकेगा। स्वाभाविक ही, इस तरह वहां बेरोजगारी कम होगी और जो युवा आतंकी संगठनों के बरगलाने से गुमराह हो जाया करते थे, उन्हें तरक्की का रास्ता नजर आएगा। चिनाब पुल शुरू हो जाने के बाद इस पर तेज रफ्तार गाड़ियों की आवाजाही बढ़ेगी, तो वहां सैलानियों का पहुंचना भी तेज होगा। पाकिस्तान की कोशिश रही है कि कश्मीर को किसी तरह भारत के दूसरे हिस्सों से अलग-थलग रखा जाए। इस तरह चिनाब पुल एक तरह से उसकी कोशिशों पर पानी फेरने में मददगार होगा। दूसरी बात कि यह पुल बन जाने से कश्मीर घाटी और लद्दाख तक सैन्य साजो-सामान और सैनिकों की पहुंच तेज हो जाएगी। अभी रोज ही लगभग पूरा दिन लगा कर सैन्य टुकड़ियां श्रीनगर से जम्मू और जम्मू से श्रीनगर पहुंचती हैं। प्रधानमंत्री ने पुल के साथ-साथ तेज रफ्तार वंदेभारत गाड़ी को भी हरी झंडी दिखाई। यानी अब बहुत कम समय में श्रीनगर तक पहुंचना संभव हो गया है।

वन्यजीवों का संरक्षण

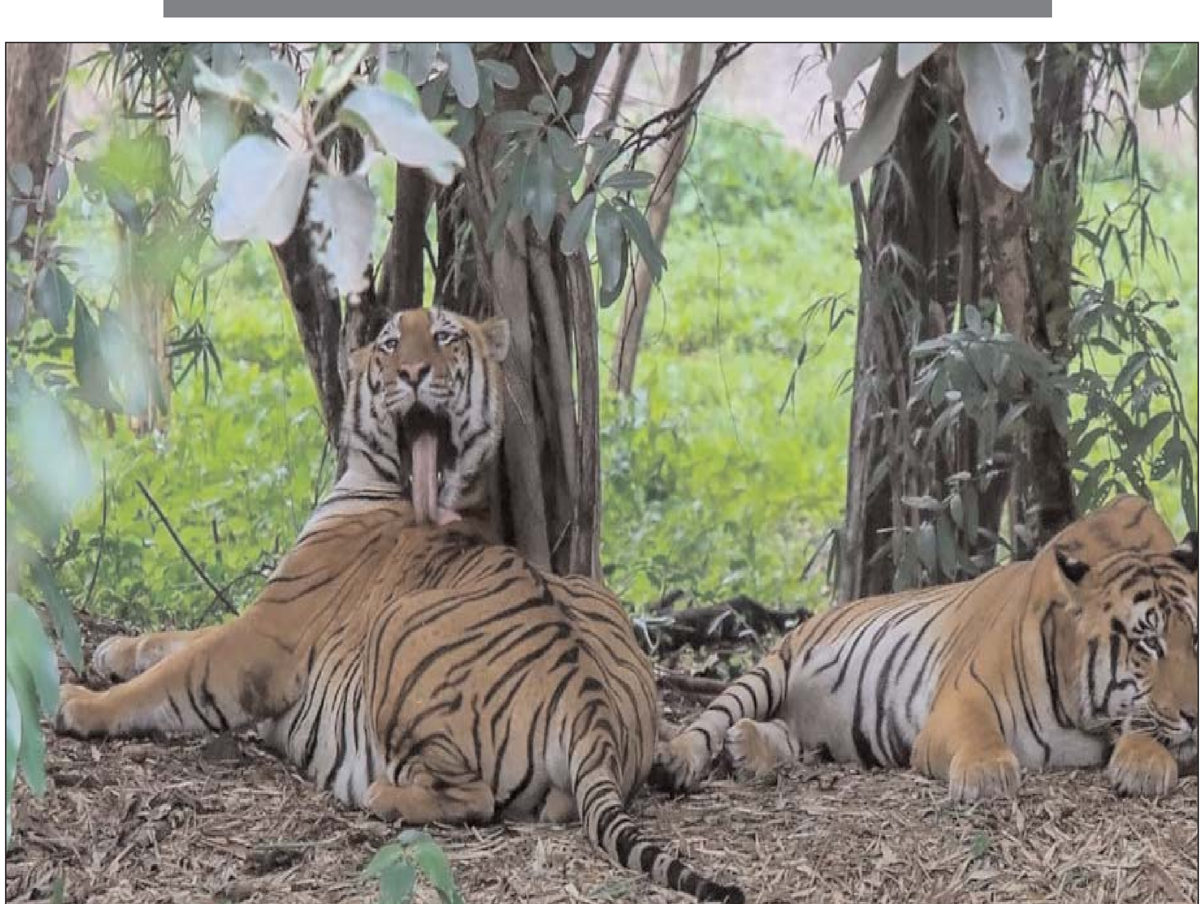

पिछले कुछ वर्षों से वन्य जीव-जंतुओं पर नजर दौड़ाई जाए तो धीरे-धीरे उनकी संख्या में गिरावट आनी शुरू हो रही है। इसका प्रमुख कारण है कि हम वन्य जीव-जंतुओं को बचाने में धीरे-धीरे नाकाम साबित हो रहे हैं। किसी राज्य में हाथी पाए जाते हैं तो किसी राज्य में शेर और बाघ चीता आदि दिखाई देते हैं, लेकिन कुछ समय से आ रही प्राकृतिक आपदाएं भी इनकी जान ले रही हैं। यों सरकार ने संरक्षित जीव-जंतुओं का शिकार करने पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध लगाया हुआ है, लेकिन उसके बाद भी चोरी-छिपे इनका शिकार किया जाता है। अक्सर देखा गया है कि कहीं बिजली के करंट के कारण यह जीव-जंतु मौत का शिकार होते हैं तो कहीं जंगलों में लगने वाली आग इनको अपनी चपेट में ले लेती है। यहां तक कि अनेक बार विभिन्न राज्यों में चोरी-छिपे इनका शिकार भी किया जाता है। जहां से रेलगाड़ी गुजरती है, वहां पर भी बड़ी संख्या में विभिन्न तरह के जीव-जंतु हादसे का शिकार होते हैं। हमें खासतौर पर संरक्षित जीव-जंतुओं को बचाना होगा और उसके साथ-साथ उनके प्राकृतिक आपदाओं का शिकार होने से बचाने की कोशिश करनी होगी। इस बात पर भी विशेष रूप से ध्यान देना होगा कि इस तरह के जीव-जंतुओं में समय-समय पर विभिन्न तरह की बीमारियां भी आती रहती हैं और उनके इलाज की भी व्यवस्था करनी होती है। इसके अलावा, कुछ समय पहले केरल में एक हथिनी के साथ जैसी घटना हुई थी, उसने दिल दहला दिया था। उसके मुंह में पटाखों का अनार डाल दिया गया, जिसमें विस्फोट से उसका मुंह फट गया। इस प्रकार की प्रवृत्तियों के खिलाफ सख्ती बरतनी होगी। साथ ही समुद्र में रहने वाले, लेकिन लुप्त होते जा रहे जीव-जंतुओं को प्राकृतिक और इस तरह के दूषित हो रहे वातावरण से बचाना होगा। आज भारत विश्व में चल रहे यूक्रेन-रूस युद्ध के दौरान एक तटस्थ देश की भूमिका निभा रहा है। भारत का अपना एक रिकार्ड रहा है। वह किसी भी बड़े देश की छोटे के लिए किसी भी तरह की ज्यादती सहन नहीं करता। फिर चाहे ज्यादती करने वाला उसका अपना दोस्त ही क्यों न हो। आज रूस एक महाशक्ति है। उसने अपने से छोटे पड़ोसी देश यूक्रेन पर हमला करके उसे तहस-नहस कर दिया है। विश्व एवं भारत की नजर में भी यह एक ज्यादती है। उसके इस व्यवहार को भारत कतई सही नहीं मानता। हालांकि इसके लिए वह रूस का विरोध भी नहीं करता, मगर रूस के इस कृत्य का समर्थन भी नहीं करता। खुद रूस भी भारत को अच्छी तरह से समझता है, इसलिए वह भारत से इस बात के लिए नाराजगी जाहिर नहीं करता और भारत-रूस के संबंधों पर इसका कोई असर नहीं पड़ता। इसका दोनों देशों के आयात-निर्यात पर भी कोई असर नहीं पड़ता है। भारत का रूस से कई वस्तुओं के लेनदेन का बरसों से व्यापार चला रहा है। इसलिए आज इसी कारण भारत की मांग पर रूस उसे सस्ता कच्चा तेल निर्यात कर रहा है। फिर रूस कच्चा तेल जी-7 की मूल्य सीमा के खिलाफ जाकर भारत को पर्याप्त छूट पर भी तेल दे रहा है। यों भारत को तेल आपूर्ति करने वाला एक देश इराक भी है। यह देश भी हमें काफी सस्ता तेल निर्यात करता रहता है। देखा जाए तो हमारा तेल आपूर्ति देश सऊदी अरब भी है जो हमें 20.8 फीसद तेल निर्यात करता है। इसके बाद इराक हमें 20.6 फीसद तथा इसी तरह से रूस है जो आज हमें 18.2 फीसद तेल निर्यात कर रहा है।

उम्र से पहले

जिन समस्याओं को सुलझाने की क्षमता मुझमें है, वे तुरंत नजर आ जाती हैं, पर ज्यादातर दिखने के बावजूद दिखाई नहीं देती। शुरुआत में कोफ्त होती थी तो कुछ न कुछ बकबक कर यानी बेमानी बोल कर काम चला लेता था, लेकिन रोज एक ही तरह का काम व्यक्ति को उबाऊ बना देता है, जैसे मैं होने लगा हूं। हालांकि हाल की एक घटना बहुत से सवालों को लिए हुए है, जिनमें इतना ताजापन और तीखापन है कि फिर से कुछ दिन सीखने और सोचते रहने का मसाला हाथ लग गया है।

सोचना कभी-कभी बहुत ज्यादा उबाऊ काम लगता है, मगर खुद को व्यस्त रखने का यह उत्तम तरीका है। खाली बैठे-बैठे कुछ और न सही, पर कुछ सोचते रहने में आखिर बुरा क्या है? पिछले कई महीने से रोज कुछ न कुछ सोचने बैठता हूं, पर पिछले विषय के निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले ही एक नए विषय पर सोचना शुरू कर देता हूं। दूसरों का तो पता नहीं, पर मैं खुद को अत्यधिक चिंताग्रस्त मानसिकता का व्यक्ति समझने लगा हूं, जिसके दिमाग में 'न्यूरॉन्स' के आपसी घर्षण से दावानल जल उठा है। जलते 'न्यूरॉन्स' का ताप इतना ज्यादा है कि सिर फटने लगता है। आंखों को हर वक्त घेरे पानी की परतों के कारण विकल्प धुंधलाने लगे हैं। यह बेहद अजीबो-गरीब स्थिति है, जो पहले तो व्यक्ति को व्याकुल करती है, फिर धीरे-धीरे आदि बना देती है। आंखों के सामने रोज कुछ गलत होता तो दिखता है, पर उसमें नए जैसा कुछ भी महसूस नहीं होता। बीते कुछ महीनों के दौरान नजरअंदाज करने के कौशल का खूब विकास हुआ है। जिन समस्याओं को सुलझाने की क्षमता मुझमें है, वे तुरंत नजर आ जाती हैं, पर ज्यादातर दिखने के बावजूद दिखाई नहीं देती। शुरुआत में कोफ्त होती थी तो कुछ न कुछ बकबक कर यानी बेमानी बोल कर काम चला लेता था, लेकिन रोज एक ही तरह का काम व्यक्ति को उबाऊ बना देता है, जैसे मैं होने लगा हूं। हालांकि हाल की एक घटना बहुत से सवालों को लिए हुए है, जिनमें इतना ताजापन और तीखापन है कि फिर से कुछ दिन सीखने और सोचते रहने का मसाला हाथ लग गया है। इस घटना के संदर्भ में अगर मैं किसी से कहूं कि पांच से सात साल का बच्चा कौन-सी कक्षा का विद्यार्थी होगा, तो कोई भी सामान्य व्यक्ति यही जवाब देगा कि पहली या दूसरी कक्षा के। इस तर्क को सार्वभौमिक रूप से स्वीकार करने में किसी को कोई दिक्कत नहीं होगी, पर मुझे जरूर समस्या आएगी। दरअसल, तेजी से युवा होते भारत में हमारे लोगों को बच्चों को अच्छा

और सच्चा नागरिक बनाने की इतनी जल्दी है कि अभी ठीक से बोल भी पाने वाले बच्चों का दाखिला उसकी उम्र से ज्यादा बड़ी कक्षाओं में करा दिया गया है। जो बच्चे अभी आंगनबाड़ी जाने योग्य भी नहीं है, उनका नामांकन स्कूल की उन कक्षाओं में कर दिया गया, जिनमें उन्हें पहुंचने में अभी समय लगता। स्कूल की एक शिक्षिका ने कारण बताया कि पुराने शिक्षक साथियों ने स्कूल में घटते नामांकन को बढ़ाने के लिए गांव के उन बच्चों का दाखिला स्कूल में कर दिया जो अभी गोद में ही थे और उनके नाम का मिड डे मील यानी दोपहर का भोजन उठाया जाने लगा। जब तक उन्होंने चलना शुरू किया और स्कूल में दाखिले के लिए आए तो उन्हें उन कक्षाओं में बैठाया जाने लगा, जिनमें उनका छोटी उम्र में ही दाखिला कर दिया गया था। चूंकि कागज यानी दस्तावेज ही सब कुछ बोलते हैं, इसलिए हमें किसी साक्ष्य की आवश्यकता कहां कि कोई इस बात की जांच भी करे। सवाल है कि इन सबके पीछे का कारण क्या है। जानने की कोशिश की तो पता चला कि इसके पीछे शिक्षा का अधिकार कानून है, जिसके मुताबिक तीस विद्यार्थियों पर एक शिक्षक और तीस से अधिक पर दो शिक्षक प्रति स्कूल नियुक्त किए जाने हैं। अगर स्कूल में बच्चों का नामांकन कम होता है तो उसके अनुसार शिक्षकों की भी नियुक्ति होगी। मोटे तौर पर तीस से साठ के बीच विद्यार्थियों की संख्या रही तो दो शिक्षक स्कूल में उपलब्ध करवाए जाएंगे। इससे ज्यादा हुई तो तीन शिक्षक नियुक्त किए जाएंगे। लेकिन स्कूल से बच्चों की संख्या कम होने लगी तो शिक्षकों का तबादला कर दिया जाएगा। इससे बचने के लिए उन बच्चों को भी उम्र से बहुत पहले स्कूल में दाखिला दे दिया गया, जो अभी गोद में ही थे। ऐसे स्कूल में बच्चे क्या सीख रहे होंगे? कक्षा एक से पांच तक के बच्चों में किस तरह का अंतर होगा? क्या ऐसी स्थिति में हम यह उम्मीद कर सकते हैं कि हमारे सरकारी स्कूल बच्चों को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा दे सकते हैं। कहा जाता है कि स्कूल का काम बच्चों को केवल लिखना-पढ़ना सिखाना नहीं, बल्कि मूल्यों के साथ-साथ उसका सर्वांगीण विकास करना भी है। यह प्रश्न पूछा जाना चाहिए कि क्या ऐसे ही किया जाएगा बच्चों का सर्वांगीण विकास? यह समस्या वास्तव में परेशान करने वाली है।

डायरेक्टर हंसल मेहता के साथ काम करेंगे विजय वर्मा

अभिनेता विजय वर्मा ने अपने अभिनय से इंडस्ट्री में अपना अलग मुकाम हासिल किया है। यही कारण है कि फैंस को उनकी फिल्मों का इंतजार रहता है। अब अभिनेता ने अपने नए प्रोजेक्ट की घोषणा कर दी है। जिसमें वो दिग्गज फिल्ममेकर हंसल मेहता के साथ काम करेंगे। विजय वर्मा ने अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम पर एक स्टोरी साझा की है। इस स्टोरी में उन्होंने एक गुलदस्ते (बुके) की फोटो शेयर की है। साथ में एक लेटर भी नजर आ रहा है, जो खुद हंसल मेहता द्वारा हाथों से लिखा गया है। इस फोटो को शेयर करते हुए विजय ने कैप्शन में 'नई शुरुआत' लिखा है।

हंसल ने की विजय की तारीफ

विजय वर्मा ने हंसल मेहता का जो नोट स्टोरी पर शेयर किया है। उस नोट में हंसल ने विजय की तारीफ करते हुए उनका अपने प्रोजेक्ट में स्वागत में किया है। हंसल और विक्रम की ओर से लिखे इस नोट में लिखा है, आपका स्वागत है। कड़ी मेहनत, शानदार काम और कुछ बेहतरीन यादों से भरा शूट। ढेर सारा प्यार। विजय वर्मा और हंसल मेहता के एक साथ आने से दर्शकों को एक बेहतर फिल्म की उम्मीद है। क्योंकि हंसल मेहता की फिल्में भी सामाजिक या अलग मुद्दों पर आधारित होती हैं। जिनमें बेहतरीन कहानी देखने को मिलती है। हालांकि, इस प्रोजेक्ट के बारे में अभी और अधिक जानकारी सामने नहीं आई है।

वर्कफ्रंट की बात करें तो विजय वर्मा आखिरी बार अनुभव सिन्हा द्वारा निर्देशित वेब सीरीज 'आईसी 814: द कंधार हाईजैक' में नजर आए थे। हाल ही में उन्होंने अपने आगामी प्रोजेक्ट 'मटका किंग' की शूटिंग पूरी की है। वहीं अगर हंसल मेहता के काम की बात करें तो हंसल मेहता की आखिरी निर्देशित फिल्म 'द बकिंघम मर्डर' थी। जिसमें करीना कपूर प्रमुख भूमिका में नजर आई थीं।

अजय देवगन संग धमाल करेंगी ईशा गुप्ता

बॉलीवुड की ग्लैमरस अभिनेत्री ईशा गुप्ता अब कॉमेडी फिल्म फ्रैंचाइजी धमाल 4 में अपनी अदाकारी का जलवा बिखेरने के लिए तैयार हैं। निर्देशक इंद्र कुमार के निर्देशन में बन रही इस बहुचर्चित फिल्म में ईशा गुप्ता अभिनेता अजय देवगन के अपोजिट एक अहम किरदार में नज़र आएंगी। यह जोड़ी इस साल की सबसे दिलचस्प कास्टिंग मानी जा रही है। ईशा गुप्ता अपनी खूबसूरती, आत्मविश्वास से भरपूर स्क्रीन प्रेज़ेंस और दमदार अभिनय के लिए जानी जाती हैं। उन्होंने धमाल 3 में भी अपने स्टाइल और तेवरों भरे किरदार से दर्शकों को खूब प्रभावित किया था, जिसे काफी पसंद किया गया था। अब धमाल 4 में उनकी वापसी एक फुल-सर्कल मोमेंट की तरह है, और इस बार उनका किरदार और भी बोल्ड तथा कहानी में केंद्रीय भूमिका निभाने वाला होगा।

निर्देशक इंद्र कुमार ने ईशा के साथ एक बार फिर काम करने पर अपनी खुशी व्यक्त करते हुए कहा, हम बहुत खुश हैं कि ईशा गुप्ता दोबारा धमाल 4 में हमारे साथ हैं। वह धमाल 3 का भी हिस्सा रही थीं। वह एक बेहतरीन अभिनेत्री और शानदार इंसान हैं। उनके साथ काम करना हमेशा सुखद अनुभव होता है। यह बयान ईशा के पेशेवर कौशल और व्यक्तिगत गुणों दोनों की सराहना करता है। हालांकि फिल्म में ईशा के किरदार की ज्यादा जानकारी अभी गोपनीय रखी गई है, लेकिन यह तय है कि वह सिर्फ ग्लैमर के लिए नहीं, बल्कि कहानी की दिशा और हास्य में भी बड़ी भूमिका निभाने वाली हैं। उनका किरदार कहानी में बड़े मोड़ और जबरदस्त कॉमिक मोमेंट्स लेकर आएगा।

हाल ही में ईशा ने हनी सिंह और जुबिन नौटियाल के साथ ब्राउन आइज़ वाली और इश्क मेरा जैसे म्यूज़िक वीडियोज़ में भी धमाल मचाया है, जिससे उनकी लोकप्रियता और बढ़ गई है। अब वह अपनी खास अदाओं और स्क्रीन पर दमदार उपस्थिति के साथ धमाल 4 में एक नई ताजगी लेकर आएंगी। दर्शक उम्मीद कर सकते हैं कि फिल्म में उन्हें अजय देवगन और ईशा गुप्ता के बीच शानदार केमिस्ट्री, चुटीले डायलॉग्स और हंसी से भरपूर सिचुएशन्स देखने को मिलेंगी, जो धमाल फ्रैंचाइजी की पहचान रही है।

फिल्म निर्देशक प्रकाश झा ने 'राजनीति 2' को लेकर साझा की अपडेट

साल 2010 में आई प्रकाश झा की पॉलिटिकल ड्रामा 'राजनीति' को रिलीज हुए आज 15 साल पूरे हो गए हैं। आज भी इस फिल्म का फैंस के बीच जबरदस्त क्रेज देखने को मिलता है। अब फिल्म के 15 साल पूरे होने पर निर्देशक प्रकाश झा ने राजनीति के सीक्वल को लेकर एक बड़ी जानकारी साझा की है। साथ ही उन्होंने ये साफ कर दिया है कि फिल्म का सीक्वल बनेगा भी या नहीं।

स्क्रिप्टिंग पर चल रहा काम

बातचीत प्रकाश झा ने 'राजनीति' के सीक्वल को लेकर बात की और इसके बारे में जानकारी साझा की। प्रकाश झा ने बताया कि राजनीति की यात्रा तो अनवरत है, चलती ही रहती है। 'राजनीति 2' के लिए हमेशा से ही योजना थी। हालांकि, कास्टिंग और शूटिंग के मामले में अभी तक कुछ भी ठोस नहीं है, लेकिन मैं फिलहाल इस पर काम कर रहा हूं। इसकी स्क्रिप्टिंग और राइटिंग पर काम चल रहा है।

एक साल तक चला था 'राजनीति' प्री-प्रोडक्शन

इस दौरान 'राजनीति' बनाने के वक्त को याद करते हुए प्रकाश झा ने कहा, फिल्म का प्री-प्रोडक्शन एक साल तक चला। हमने एक भीड़ वाले सीन के लिए 8,000 कलाकारों को चुना, जो काफी मुश्किल काम था। कास्टिंग के बारे में अच्छी बात यह थी कि हमने जिससे भी संपर्क किया, उसे स्क्रिप्ट पसंद आई और वह इसमें शामिल हो गया। उन्हें अच्छा प्रदर्शन करने की चुनौती महसूस हुई। लोग कहते हैं कि यह एक व्यावसायिक सफलता थी।

'राजनीति' में नजर आई थी भारी-भरकम स्टारकास्ट

2010 में रिलीज हुई राजनीतिक थ्रिलर में प्रतिद्वंद्वी राजनीतिक परिवारों और पार्टियों के बीच एक कट्टर संघर्ष को दर्शाया गया है। फिल्म में रणबीर कपूर, अजय देवगन, कटरीना कैफ अर्जुन रामपाल, मनोज बाजपेयी, नाना पाटेकर और नसीरुद्दीन शाह जैसे कलाकार नजर आए हैं।

राणा नायडू के दूसरे सीजन में विलेन के रूप में अर्जुन रामपाल की वापसी

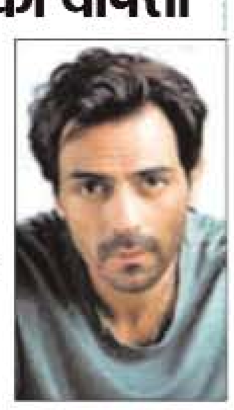

नेटफ्लिक्स के शो राणा नायडू के दूसरे सीजन का ट्रेलर रिलीज हो गया है। ट्रेलर में अर्जुन रामपाल और राणा दग्गुबाती के बीच तकरार होते हुए नजर आ रही है। इसके अलावा एक्ट्रेस सुरवीन चावला भी अपनी इंटेंस एक्टिंग से एक बार फिर दर्शकों का दिल जीतने के लिए आ रही हैं। एक्टर राणा दग्गुबाती के इस शो का इंतजार फैंस पिछले काफी समय से कर रहे थे। शो में राणा दग्गुबाती और वेंकटेश दग्गुबाती एक दूसरे से लोहा लेते हुए दिखाई देंगे। दोनों अभिनेताओं को एक साथ देखने के लिए दर्शकों के बीच काफी उत्सुकता है। इसके अलावा अर्जुन रामपाल इस सीरीज में विलेन की भूमिका में नजर आने वाले हैं। अर्जुन रामपाल जब-जब विलेन के तौर पर दिखाई दिए हैं, उन्हें काफी पसंद किया जाता है।

आश्रम 3 के बाद दर्शन कुमार ने शुरू की सस्पेंस थ्रिलर की शूटिंग

वेब सीरीज आश्रम 3 की शानदार सफलता और द फैमिली मैन के अगले सीज़न की रिलीज़ का इंतजार कर रहे अभिनेता दर्शन कुमार अब अपने नए प्रोजेक्ट में पूरी तरह से व्यस्त हो गए हैं। उन्होंने अपने अगले अनटाइटल्ड सस्पेंस थ्रिलर की शूटिंग शुरू कर दी है, जो फिलहाल बिहार में चल रही है। हमेशा से ही अलग और दिलचस्प स्क्रिप्ट चुनने के लिए जाने जाने वाले दर्शन कुमार ने यह खास खबर सीधे अपने शूटिंग सेट से साझा की। उन्होंने कहा, बहुत उत्साहित हूँ यह खबर आप सबके साथ शेयर करने के लिए! एक सस्पेंस थ्रिलर के साथ कल से एक नया सफर शुरू हो रहा है, जो सचमुच एज-ऑफ-द-सीट होने वाला है। एनएच 10 और धोखा - राउंड डी कॉर्नर के बाद, मैं एक ऐसी कहानी का इंतजार कर रहा था, जो सच में दिल को छू जाए, और यह वही कहानी है। अपने किरदार के बारे में बात करते हुए, दर्शन ने कहा, सबसे ज्यादा उत्साहित मैं इस बात को लेकर हूं कि मेरा किरदार इस बार काफी चैलेंजिंग है, लेयर्ड है, इंटेंस है, और कुछ ऐसा है, जो मैंने पहले कभी नहीं किया। उन्होंने आगे कहा, यह किरदार मुझे एक एक्टर के रूप में पुश करेगा, और मैं इस किरदार को स्क्रीन पर लाने के लिए काफी उत्साहित हूँ। इस फिल्म का निर्देशन राव देवेंद्र कर रहे हैं, और इसके निर्माता सागर श्रीवास्तव हैं। इसके सिनेमैटोग्राफर मशहूर अत्तर सिंह सैनी हैं, जो इस प्रोजेक्ट को एक विज़ुअली धमाकेदार थ्रिलर बनाने वाले हैं। बिहार में एक लंबे शेड्यूल के लिए शूटिंग की योजना बनाई गई है, और दर्शन इस नए प्रोजेक्ट में पूरी तरह से उतर गए हैं।

दर्शन ने एक भावनात्मक नोट के साथ अपनी बात खत्म करते हुए कहा, यह प्रोजेक्ट मेरे लिए बहुत स्पेशल है, और मुझे पूरा यकीन है कि आप सब सरप्राइज़ होने वाले हैं। जल्दी मिलते हैं और अपडेट्स शेयर करता रहूँगा। आप सबका प्यार और आशीर्वाद बना रहे।

पीके 2 आमिर खान फिर बनेंगे एलियन!

गुलशन कुमार की बायोपिक, सुपरहीरो फिल्म की भी तैयारी

बॉलीवुड के मिस्टर परफेक्शनिस्ट आमिर खान लाल सिंह चड्ढा के तीन साल बाद बड़े पर्दे पर वापसी कर रहे हैं। उनकी सितारे जमीन पर इसी महीने 20 जून को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है। पर कहानी सिर्फ इतनी नहीं है। लगता है कि आमिर एक के बाद एक धमाकेदार फिल्मों की बाढ़ लाने वाले हैं। बीते दिनों खबर आई कि इसके बाद वह राजकुमार हिरानी के डायरेक्शन में दादासाहेब फाल्के की बायोपिक की तैयारी में जुट जाएंगे।

एक नई रिपोर्ट में कहा गया है कि आमिर खान पीके 2 में एलियन बनकर लौटने वाले हैं। यही नहीं, इस फिल्म में उनके साथ रणबीर कपूर भी हो सकते हैं। इसके अलावा आमिर गुलशन कुमार की बायोपिक और एक सुपरहीरो फिल्म करने पर भी जोर लगा रहे हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक, राजकुमार हिरानी के साथ दादासाहब फाल्के की बायोपिक पर काम शुरू करने से पहले आमिर खान ने कम से कम 10 नई स्क्रिप्ट पर गौर फरमाया है। सूत्रों के हवाले से कहा गया है, आमिर खान और राजकुमार हिरानी ने मिलकर भारतीय सिनेमा के पितामह दादा साहब फाल्के पर फिल्म बनाने का सपना देखा था और इसकी स्क्रिप्ट पर काफी समय से काम चल रहा था। जब राजू, दादा साहब फाल्के पर काम कर रहे थे, तब आमिर इसके अलावा भी कई स्क्रिप्ट पर गौर फरमा रहे थे।

उज्जवल निकम की बायोपिक, किशोर कुमार, समेत 10 स्क्रिप्ट पर चर्चा

बताया जाता है कि आमिर ने अपने तीन साल के ब्रेक में जिन 10 स्क्रिप्ट पर चर्चा की है, उनमें राजकुमार संतोषी की दो फिल्में चार दिन की जिंदगी और अंदाज अपना अपना 2 शामिल हैं। इसके अलावा दिनेश विजान के साथ वह वकील उज्ज्वल निकम की बायोपिक, अनुराग बसु के साथ किशोर कुमार की बायोपिक और राकेश ओमप्रकाश मेहरा के साथ भी एक फिल्म पर भी चर्चा हुई है।

गुलशन कुमार की बायोपिक करेंगे आमिर खान!

रिपोर्ट में सूत्र के हवाले से आगे कहा गया है कि आमिर खान ने डायरेक्टर तुषार हीरानंदानी और भूषण कुमार से भी मुलाकात की है। इस दौरान तीनों के बीच गुलशन कुमार की बायोपिक पर चर्चा हुई। हालांकि, इन फिल्मों को लेकर अभी कोई आधिकारिक ऐलान नहीं हुआ और ये सब बातचीत और चर्चा के स्तर पर है। हालांकि, आमिर का पूरा फोकस पर्दे पर दादा साहब फाल्के की भूमिका निभाने को लेकर है।

पीके 2 पर राजू हिरानी और अभिजीत से हुई बात

इन फिल्मों के अलावा, आमिर खान, राजकुमार हिरानी और अभिजीत जोशी के बीच ब्लॉकबस्टर हिट पीके के सीक्वल यानी पीके 2 को लेकर भी चर्चा हुई है। फिलहाल, बातचीत यह हो रही है कि सीक्वल में कहानी को कैसे आगे बढ़ाया जा सकता है। सब ठीक रहा तो इस फ्रैंचाइजी में रणबीर कपूर की भी एंट्री हो सकती है।

पीके 2 में रणबीर कपूर भी बनेंगे एलियन

रिपोर्ट में सूत्र के आधार पर कहा गया है, पीके 2 पर काम शुरू होना लगभग तय है। इसे लेकर राजकुमार हिरानी, अभिजात और आमिर तीनों ही बहुत एव?साइटेड हैं। वे दादा साहब फाल्के की बायोपिक के बाद इस पर फिर से विचार करेंगे। तैयारी एक ऐसे प्लॉट की है, जहां आमिर खान फिर से एलियन बनेंगे और रणबीर कपूर की इसमें प्रमुख भूमिका होगी। हालांकि, अभी तैयारी होनी है, स्क्रिप्ट लिखना है, इसलिए यह काफी लंबा सफर है। रणबीर कपूर भी इससे वाकिफ हैं और वह भी एक एलियन की भूमिका निभाने के लिए एक्साइटेड हैं।

लोकेश कनगराज के साथ सुपरहीरो फिल्म करेंगे आमिर खान

इन 7 फिल्मों के अलावा, आमिर खान एक सुपरहीरो फिल्म भी कर रहे हैं। इस फिल्म को लोकेश कनगराज डायरेक्ट करेंगे। इसकी शूटिंग 2027 में शुरू होने की संभावना है।

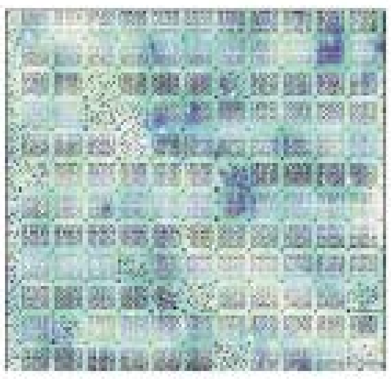

छोटे चिप में समा जाएंगी अब तक लिखी सारी किताबें

नीदरलैंड के वैज्ञानिकों ने दुनिया का सबसे छोटा हार्ड डिस्क बनाने का दावा किया है। सिंगल क्लोरीन एटम पर आधारित डाक टिकट के आकार वाले इस डिस्क में अब तक लिखी गई सारी किताबों को स्टोर किया जा सकता है। मौजूदा समय में हर दिन एक अरब गीगाबाइट से ज्यादा नए आंकड़ों का सृजन हो रहा है। इतनी बड़ी मात्रा में डाटा को स्टोर करने के लिए जरूरी है कि प्रत्येक बिट जितना संभव हो उतना कम स्थान ले। डेल्फ्ट यूनिवर्सिटी के कैवेंडिश विभाग के वैज्ञानिकों ने यह उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। उन्होंने एक किलोबाइट (आठ हजार बिट्स) की मेमोरी बनाने में सफलता हासिल की है। इसमें प्रत्येक बिट सिंगल क्लोरीन एटम की स्थिति को दर्शाता है। सैंडर ओट के मुताबिक इस स्टोरेज क्षमता से दुनिया भर में अब तक लिखी गई सारी किताबें एक छोटे से हार्ड डिस्क में स्टोर हो जाएंगी। उनके मुताबिक इस हार्ड डिस्क की स्टोरेज डेंसिटी 500 टेराबिट्स (एक लाख करोड़ बिट्स) प्रति वर्ग इंच है। यह मौजूदा हार्ड डिस्क की क्षमता से पांच सौ गुना ज्यादा है। वर्ष 1959 में प्रख्यात भौतिकविद रिचर्ड फिनमैन ने पहली बार इसकी कल्पना की थी। वैज्ञानिकों के दल ने एटम की सतह की जांच के लिए स्कैनिंग टनलिंग माइक्रोस्कोप (एसटीएम) का इस्तेमाल किया। सैंडर ओट ने बताया कि क्लोरीन एटम के छिद्र के ऊपर होने की स्थिति में उसकी संख्या एक मानी जाती है।

व्हाट्सएप पर ऐसे करें नए फॉन्ट का उपयोग

जो लोग व्हाट्सएप का प्रयोग करते हैं वे सभी व्हाट्सएप ग्रुप में शामिल होते हैं। ऐसे में अगर आप अपनी चैट पर ग्रुप के अन्य लोगों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं तो वह अपनी चैट का फॉन्ट बदल सकते हैं। इसके अलावा 'कोट' फीचर का भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

ऐसे बदलें अपना टेक्स्ट फॉन्ट : चैट के दौरान अगर फॉन्ट को बदलना चाहते हैं तो इसके लिए पहले अपने व्हाट्सएप पर किसी का चैट बॉक्स खोलें। इसके बाद जिस मैसेज या शब्द को बदलना चाहते हैं, उसके पहले तीन बार (`) टाइप करें और मैसेज या शब्द खत्म होने के बाद दोबारा [illegible] तीन बार (`) टाइप करें। [illegible] अगर पहले वाले का इस्तेमाल करने के टेक्स्ट का फॉन्ट नहीं बदल रहा है तो आप दूसरे वाले (`) सिंबल का प्रयोग कर सकते हैं। ध्यान रखें कि ऐसे से पहले ही वह शब्द अपने आप बदल जाते हैं। यह फीचर उन लोगों को काफी पसंद आ सकता है जो अपने टेक्स्ट मैसेज को अन्य लोगों से अलग और [illegible] भेजना चाहते हैं।

व्हाट्सएप में है 'कोट' फीचर : ग्रुप या फिर किसी चैट में आप किसी एक मैसेज पर ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं तो 'कोट' फीचर का इस्तेमाल कर सकते हैं। बताते चलें कि व्हाट्सएप ने शुरू में lets users quote messages फीचर लॉन्च किया था। यह फीचर जवाब देने के लिए प्रयोग किया जाता है।

नाइटमेयर डिसऑर्डर: डराके गया सपना...!

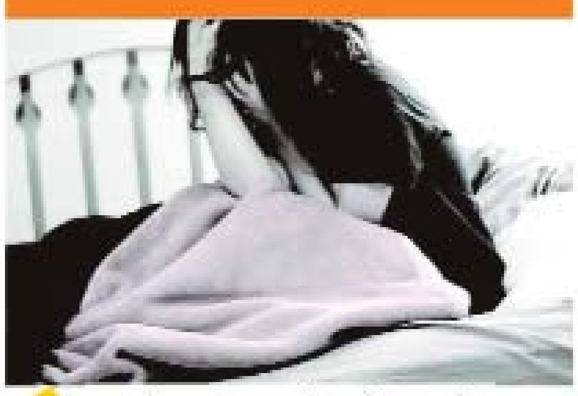

> कभी-कभार आने वाले डरावने सपने सामान्य बात हैं, मगर यदि यह नियमित सिलसिला बन जाए, तो इसे विकार माना जाता है, जिसका उपचार जरूरी है।

सपने सब देखते हैं, भले ही कुछ लोगों को जागने पर वे याद न रहते हों। नींद की अवस्था में हमारा मस्तिष्क जो वैकल्पिक यथार्थ या काल्पनिक फिल्म रचकर प्रदर्शित कर देता है, उसी को हम सपना कहते हैं। मसाला फिल्मों की ही तरह हमारे सपनों में एक्शन, इमोशन, रोमांस, कॉमेडी आदि सारे तत्व मौजूद रहते हैं- कुछ कम, तो कुछ ज्यादा। कभी-कभी ये सपने हॉरर फिल्म के रूप में भी सामने आते हैं। इन्हें हम डरावना सपना, बुरा सपना, नाइटमेयर या दुःस्वप्न कहते हैं। बच्चों को डरावने सपने आना आम बात है, जिसके कारण वे रोते हुए जाग जाते हैं। मगर ऐसा नहीं है कि वयस्कों को डरावने या बुरे सपने नहीं आते।

यदा कदा ऐसे सपने हर किसी को आते हैं। डर के मारे आपकी नींद टूट जाती है, आप हड़बड़ाकर उठ बैठते हैं, धड़कन व सांस तेज चलती हुई महसूस होती है। फिर, आपको एहसास होता है कि यह तो महज एक सपना था... । तब धीरे-धीरे आप सामान्य होने लगते हैं। मगर जब यह एक नियमित सिलसिला बन जाए, बार-बार डरावने सपने के कारण आपकी नींद टूट जाए, इन सपनों के खौफ के कारण आप सोने से ही कतराने लगें, तो इसे मानसिक विकार माना जाता है, जिसे उपचार की जरूरत होती है। इसे नाइटमेयर डिसऑर्डर या पैरासोम्निया कहते हैं।

पहचान और उपचार

यदि सप्ताह में एक से अधिक बार डरावने सपने आएं, यह सिलसिला लगातार बना रहे और इसके कारण आपकी नींद बार-बार बाधित हो तथा दोबारा नींद आना मुश्किल हो जाए, तो आपको डॉक्टर को दिखाना चाहिए। डॉक्टर पॉलीसोम्नोग्राफी नामक टेस्ट कराने को कह सकते हैं, जिसमें नींद के दौरान हृदय गति, मस्तिष्क तरंगों, ऑक्सीजन के स्तर, सांसों तथा आंखों व टांगों की हरकतों को रेकॉर्ड करने के लिए शरीर के विभिन्न हिस्सों में सेंसर लगाए जाते हैं। इस टेस्ट के परिणाम के आधार पर डॉक्टर उपचार तय कर सकते हैं।

यदि डरावने सपनों का कारण तनाव या डिप्रेशन है, तो उसका उपचार किया जाता है। यदि किसी दवाई के साइड इफेक्ट के कारण ऐसा हो रहा है, तो डॉक्टर वैकल्पिक दवाई बता सकते हैं। नशीले पदार्थ यदि कारण है, तो उनका सेवन बंद करने से दुःस्वप्नों की समस्या भी दूर हो सकती है। कुछ दुर्लभ मामलों में नाइटमेयर डिसऑर्डर को दूर करने के लिए दवाइयां भी दी जा सकती हैं।

नाइटमेयर डिसऑर्डर के कारण

इस डिसऑर्डर के कई कारण हो सकते हैं। एक प्रमुख कारण तो जीवन में हुई कोई अप्रिय घटना हो हो सकती है। किसी वजह से यदि आप लगातार तनाव या डिप्रेशन में हैं या फिर दुखी हैं, तो भी आपको नियमित रूप से बुरे सपने आ सकते हैं। शराब या ड्रग्स का सेवन भी दुःस्वप्नों का कारण बन सकता है, वहीं इनकी लत छूटने की प्रक्रिया के दौरान भी ऐसे सपने आ सकते हैं। कुछ प्रकार की दवाइयों के सेवन से या फिर अचानक सेवन अचानक बंद कर देने से भी नाइटमेयर डिसऑर्डर की स्थिति बन सकती है। स्लीप एप्निया (नींद के दौरान सांस लेने में परेशानी से जुड़ी समस्या) से ग्रस्त लोग भी नियमित रूप से डरावने सपनों के शिकार हो सकते हैं। कई बार लगातार पर्याप्त नींद से वंचित रहने वाला व्यक्ति जब सोता है, तो ऐसे सपनों का शिकार हो जाता है। इसके अलावा नियमित रूप से डरावनी फिल्में देखने या डरावनी कहानी-उपन्यास पढ़ने वाले लोगों को भी ऐसे सपने आ सकते हैं। सोने से ठीक पहले भारी भोजन करना भी इसका कारण बन सकता है।

सोशल मीडिया के जरूरी कायदे

दफ्तर में काम करने वाले कर्मचारी, कॉलेज जाने वाले युवा और महिलाएं सभी सोशल मीडिया पर मौजूद हैं। इस प्लेटफॉर्म पर आपकी छवि कैसी बने यह आपके ही हाथ है। कुछ सामान्य बातों का ध्यान रखकर आप अपनी सकारात्मक छवि बना सकते हैं। यह मुश्किल काम नहीं।

अपनी ही अपनी चीजें

कुछ लोग खुद से जुड़ी हर छोटी से छोटी बात सोशल मीडिया पर शेयर करते हैं। यह आपसे जुड़े लोगों के लिए चिढ़ाने वाली होती है। कई बार लोग यह बताते हैं कि हम फलां रेस्टोरेंट गए या अब हवाई जहाज से सफर कर रहे हैं और ऐसी ही फालतू बातें।

प्रतिक्रिया में लेट न हों

अक्सर लोग ई-मेल या सोशल मीडिया पर भेजे गए किसी मैसेज का जवाब कई कई दिनों बाद देते हैं। यह अच्छा प्रभाव नहीं छोड़ता। 60 मिनट में जवाब देना अच्छा माना जाता है। 30 मिनट में अगर आप जवाब देते हैं तो इससे अच्छा कुछ नहीं। जवाब केवल जरूरी मसलों में ही दें, फिजूल की बातचीत में न उलझें।

हैशटेग का ध्यान

अगर आपकी सभी पोस्ट के साथ हैशटेग का चिह्न रहता है तो यह ठीक बात नहीं। इसलिए अतिमहत्वपूर्ण चीजों या विचार के साथ ही हैशटेग चिह्न का उपयोग करें। कुछ लोग हर छोटी-मोटी बात में हैशटेग का उपयोग करते हैं जो इसका महत्व कम कर देता है।

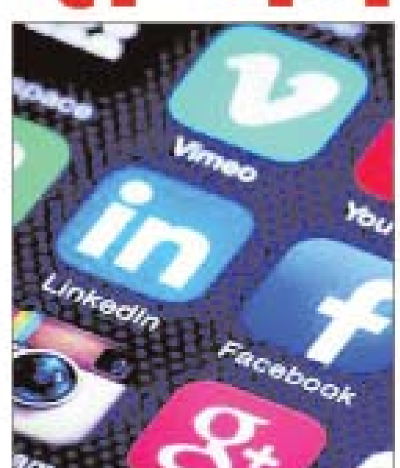

80 काम, 20 हंसी

आपकी पोस्ट की 80 प्रतिशत चीजें ऐसी हों जो दूसरों के लिए किसी न किसी तरह उपयोगी हों। 20 प्रतिशत चीजें आप सिर्फ आनंद के लिए पोस्ट कर सकते हैं लेकिन ज्यादा बड़ा हिस्सा तो किसी बात पर दूसरों की राय जानने या किसी विषय को उनके साथ साझा करने जैसी चीजों का होना चाहिए।

सीधा संवाद

अपने से जुड़े लोगों के साथ सीधा संवाद रखें। उन्हें सीधे संबोधित करके कोई बात कहें। किसी भी व्यक्ति से बात करते हुए उसे सम्मान के साथ संबोधित करें। बातचीत में संबोधन का बड़ा फर्क होता है और ये संबंधों को मजबूत करते हैं।

ट्वीट में जवाब की जगह

जब भी किसी विषय पर ट्वीट करें तो उसमें सामने वाले से आने वाले जवाब की जगह भी हो। एकतरफा संवाद होकर न रह जाए। इस तरह के खुले सिरे वाली बात में नए लोग भी जुड़ पाएंगे।

बिना अनुमति टैग नहीं

यह सामान्य व्यवहार का हिस्सा तो होना चाहिए लेकिन यह इसलिए भी जरूरी है क्योंकि कई लोग इसी कारण आपकी रिपोर्ट कर देते हैं या आपको अपनी फ्रेंड सूची से हटा देते हैं। वैसे भी बिना अनुमति किसी को टैग करना कहां ठीक है।

स्रोत का उल्लेख

जब कोई पंक्ति या गद्य का कोई टुकड़ा आप पोस्ट करते हैं या उसे ट्वीट करते हैं तो उसके स्रोत का उल्लेख करना चाहिए। कई लोग दूसरों की पंक्तियों को बिना नाम के पोस्ट करते हैं जो कि अच्छा नहीं है। अगर आप संदर्भ का उल्लेख करते हैं तो आपकी छवि बेहतर होगी।

नियमित रहें

कुछ लोग सोशल मीडिया पर लंबे गैप के बाद सक्रिय होते हैं और ऐसे में बीच में क्या हुआ वे इससे चूक जाते हैं। इसलिए तय करें कि आप दिन के किसी एक खास समय सोशल मीडिया पर रहेंगे या फिर हर दो दिन में एक बार अपना अकाउंट चेक करेंगे।

मौसम भले बदले लेकिन खानपान पर हो ध्यान

बचपन के दिन मौज-मस्ती और शैतानी वाले होते हैं। इन्हीं दिनों में शरीर का विकास भी होता है, इसलिए बच्चों के खानपान पर समुचित ध्यान देना बहुत जरूरी हो जाता है। मौसम में जब बदलाव हो रहे हों तब इस संदर्भ में अभिभावकों की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है।

खासकर बारिश में जब खाद्य पदार्थों से संक्रमण के कारण सबसे ज्यादा समस्याएं पैदा होती हैं। कारण है इस मौसम में चटपटा, तला-भुना फास्ट फूड खाने के लिए बच्चों का ज्यादा मन होना। अक्सर बच्चे स्कूल जाने से पहले नाश्ता नहीं करते और स्कूल जाकर कैंटीन में खाना खाते हैं। यह वैसे भी कोई अच्छी बात नहीं है, ऊपर से बारिश की भिन्न-भिन्न ऐसे में तमाम किस्म के इंफेक्शन को सीधा बुलावा देती है।

नाश्ता तो करना ही है

जयपुर हॉस्पिटल डॉ. आरती गुप्ता बताती हैं कि मौसम कोई भी हो, बच्चों को सुबह का नाश्ता करने के लिए अवश्य प्रोत्साहित करें। ज्यादातर बच्चे स्कूल जाने से पहले अच्छी तरह नाश्ता नहीं करते। यह सेहत के लिए बुरी बात है। बच्चे को दिन में तीन मुख्य आहार और दो से तीन बार स्नैक्स जरूर देने चाहिए। सेहत का सबसे अहम हिस्सा नाश्ता और ड्राई फ्रूट्स हो सकते हैं जबकि हम किसी भी बच्चों को स्कूल जाने के लिए जंक फूड और फास्ट फूड देकर जिम्मेदारी पूरी कर लेती हैं।

फोन से डाटा शेयरिंग के लिए इस एप का करें इस्तेमाल

फोन से मल्टीमीडिया फाइल्स को साझा करने के लिए 'शेयरइट एप' का प्रयोग किया जाता है मगर कभी-कभी एक ही जगह पर कई लोगों के शेयरइट एप ऑन होते हैं और वे आपके फोन पर भी दिखाई देते हैं। ऐसी स्थिति में डर लगता है कि कहीं फाइलें किसी और व्यक्ति के साथ साझा न हो जाएं। ऐसी समस्या से बचने के लिए आप Shoot एप का प्रयोग कर सकते हैं जिसमें फाइलें भेजने के लिए सिर्फ रिस्पॉन्स कोड (क्यूआर कोड) का इस्तेमाल करना होता है और यह कोड हर एक फोन के लिए अलग-अलग होता है। शूट एप्लीकेशन का प्रयोग करने के लिए दोनों फोन में इस एप को होना जरूरी है। साथ ही फोन में इंटरनेट कनेक्शन ऑन होना भी जरूरी है ताकि क्यूआर कोड जेनरेट किया जा सके। इस एप को फोन में इंस्टॉल करने के बाद आपको केवल कुछ सेकंडों का इंतजार होता है उसके बाद आपका डाटा दूसरे यूजर के साथ साझा हो जाएगा।

फाइल भेजने के बाद आएगा क्यूआर कोड : शूट एप को डाउनलोड करने के बाद एप में 'सेंड' और 'रिसीव' का विकल्प मिलेगा। शेयरइट की तरह अगर आप फाइल सेंड करना चाहते हैं तो इसके लिए सेंड पर क्लिक करें। उस पर क्लिक करने के बाद फोन की गैलरी ओपेन होगी। इसमें से आप जिस भी फाइल, फोटो या वीडियो को दूसरे यूजर के साथ साझा करना चाहते हैं उसका चयन करें। फाइल का चयन करने के बाद क्यूआर कोड का विकल्प दिखने पर आ जाएगा। जैसे ही क्यूआर कोड दूसरे फोन में स्कैन करेंगे वैसे ही चयन की गई फाइलें दूसरे फोन में ट्रांसफर हो जाएंगी।

ऐसे करें फाइल को रिसीव : इसके बाद आप जिस फोन में फाइल और वीडियो प्राप्त करना चाहते हैं तो शूट एप में दिए गए 'रिसीव' बटन पर क्लिक करें। रिसीव बटन पर क्लिक करते ही क्यूआर कोड स्कैन करने का विकल्प आएगा और उसे स्कैन करने के बाद आपके डिवाइस में फाइल आनी शुरू हो जाएगी।

फलों के रस के साथ ना ले दवाई

दवाओं को अगर पानी के साथ न लेकर जूस के साथ लेने की आदत है, तो इसे सुधार लीजिए, क्योंकि इससे दवाओं का असर कम हो सकता है. अंगूर का रस शरीर में कुछ दवाओं को सोखने की क्षमता कम कर सकता है, वहीं संतरा और सेब के जूस शरीर में दवाओं को सोखने की क्षमता कम कर उनके असर को कम कर सकते हैं.

अंगूर का रस रक्तधारा में जाने वाली दवाओं की मात्रा कम कर देता है. डॉक्टरों ने कोलेस्ट्रॉल, उच्च रक्तचाप और दिल की धड़कन की दवा लेने वाले मरीजों को अंगूरों का रस न पीने की चेतावनी दे रखी है.

शोध में पता चला है कि रस में मौजूद तत्व दवा के सोखने की क्षमता को प्रभावित करते हैं. कुछ रसायन दवा को ले जाने वाले तत्वों को बाधित कर देते हैं, जिससे दवा के सोखने की क्षमता कम हो जाती है, जबकि कुछ रसायन द्वारा मेटाबॉलिज्म एंजाइम जो आम तौर पर दवा को तोड़ने का काम करते हैं, उन्हें बाधित कर देते हैं. आम तौर पर पानी के साथ दवा लेना सुरक्षित होता है. एक घूंट के बजाय एक ग्लास बेहतर होता है, क्योंकि यह दवा को घुलने में मदद करता है. ठंडे पानी की बजाए गर्म पानी ज्यादा बेहतर रहता है.

रेसिपी

फलाहारी कच्चे केले की पकौड़ी

सामग्री

200 ग्राम सिंघाड़े का आटा, 4-5 कच्चे केले, 2 हरी मिर्च, सेंधा नमक (व्रत में खाने वाला), अदरक का टुकड़ा, घी अथवा मूंगफली का तेल (पर्याप्त मात्रा में तलने के लिए)।

विधि

सबसे पहले केले के दो टुकड़े करके छिलके सहित उबाल लीजिए। ध्यान रखें कि केले ज्यादा गलने न पाएं। ठंडे होने पर इनके छिलके उतार कर गोल गोल टुकड़े काट कर रख लें। टुकड़े अब सिंघाड़े आटे का घोल तैयार करें। इसमें अपने स्वादानुसार हरी मिर्च, अदरक काट कर डालें तथा अंदाज से नमक मिला दें। घोल को गाढ़ा ही रहने दें। मोयन के लिए थोड़ा सा घी अथवा तेल घोल में डाल दें। एक कड़ाही में घी/तेल गरम कर लें और केले के टुकड़े को घोल में लपेट कर घी में छोड़ते जाएं। दोनों तरफ से कुरकुरे होने तक सेंक लें। अब इन पकौड़ों को इमली की मीठी और हरी चटनी के साथ पेश करें।

कच्चे केले की लजीज टिकिया

सामग्री

5 कच्चे केले, 250 ग्राम उबले आलू, 30 ग्राम कुट्टू का आटा, अदरक, 2-3 हरी मिर्च, लाल मिर्च पाउडर एक चम्मच, 2 चम्मच भुना जीरा पाउडर, आधा चम्मच अमचूर पाउडर, 100 ग्राम पनीर, घी तलने के लिए, सेंधा नमक या नमक स्वादानुसार, हरा धनिया, पान कटोरी किशमिश।

विधि

पहले कच्चे केले को उबालें, छीलें और ठंडा होने के लिए रख दें। अब धनिया, हरी मिर्च व अदरक को बारीक काट लें। उबले केले और आलू का मिश्रण तैयार करके अदरक, हरी मिर्च और हरा धनिया मिला लें। इसमें कुट्टू का आटा, सेंधा नमक, मिर्च और जीरा पाउडर मिलाएं और छोटी छोटी गोलियां बनाकर रख लें। अब एक दूसरे बर्तन में पनीर को लेकर किशमिश, नमक, अदरक, मिर्च और धनिया मिलाएं। इस मिश्रण को केले के गोले में भरकर टिक्की की तरह हाथ से दबा लें। अब अपनी सुविधानुसार इसे नॉन स्टिक तवे पर या डीप फ्राई कर गरमागरम टिकिया को हरी और मीठी चटनी के साथ पेश करें।

नोट: आप चाहें तो ऊपर से फलाहारी आलू की सेंव भी बुरका सकती हैं।

सावन में घर लाएं ये चीजें

हर काम में मिलेगी सफलता

हिंदू धर्म में सावन माह का सबसे पवित्र महीना माना जाता है। इन दिनों में भगवान शिव की आराधना का सबसे खास दिन होते हैं। इन दिनों में शिव जी की पूजा करने से सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। साथ ही उनकी कृपा आपके ऊपर हमेशा बनी रहती है।

इसी तरह घर पर शिव जी से संबंधित चीजें रखने से नकारात्मक ऊर्जा दूर रहती है। साथ ही हर काम में आपको सफलता मिलती है और घर में कभी भी धन की कमी नहीं होती है। सावन के इस माह में घर लाएं ये चीजें। जिससे भगवान शिव भी आपके घर में अपनी कृपा बरसाते रहें। जानिए इन चीजों के बारे में। साथ ही जानिए इन चीजों को किस जगह रखने से अधिक लाभ मिलेगा।

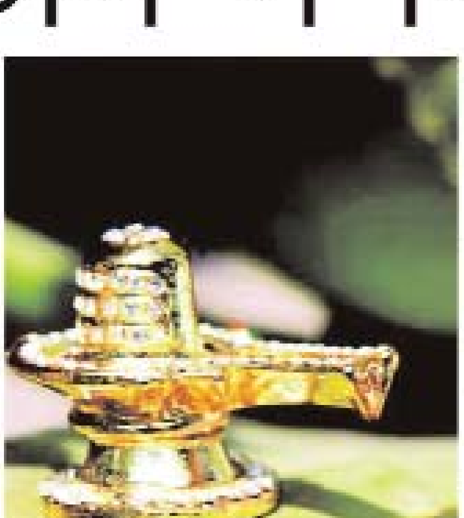

त्रिशूल : घर में त्रिशूल रखना बहुत ही शुभ माना जाता है। इसको घर में रखने से नकारात्मक ऊर्जा घर पर प्रवेश नहीं कर पाएगी। इसलिए इसे घर के हॉल में तांबा या फिर चांदी का त्रिशूल बनवा कर स्थापित करें।

भस्म : भगवान शिव का इसे श्रृंगार माना जाता है। इसके बिना भगवान की पूजा पूर्ण नहीं होती है। इसलिए इसे भगवान शिव की मूर्ति के साथ जरूर रखें।

तांबे के लोटे में पानी भरकर रखें : अगर आप चाहते हैं कि आपके घर में सुख-शांति सभी प्यार से रहें, तो घर के उस स्थान पर लोटे में जल भरकर रखें। जहां पर घर के सभी सदस्य अधिक समय बिताते हों।

रुद्राक्ष : कहा जाता है कि रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव की आंसुओं से हुई है। जिसे घर में रखना बहुत ही शुभ माना है। इसे अपने घर के सबसे बड़े सदस्य या फिर मुखिया के कमरे में रखें।

डमरू

अगर आप चाहते हैं कि आपका बच्चा हर काम में सफलता प्राप्त करे। साथ ही उसके कमरे में किसी भी तरह की नकारात्मक ऊर्जा न आए, तो इसके लिए बच्चों के कमरे में डमरू रखें।

राज्य जयपुर टाइम्स

जयपुर, मंगलवार
10 जून, 2025

अवैध हथियार के साथ एक आरोपी को पुलिस ने किया गिरफ्तार

कब्जे से हथियार बरामद

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.) जिले की सोने का गुर्जा थाना पुलिस ने अवैध हथियार के साथ एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। सोने का गुर्जा थाना प्रभारी महेश चंद शर्मा ने बताया कि मुखबिर एक व्यक्ति के संदिग्ध अवस्था में एक बन्दूक लेकर सन सैट पोइंट सोने का गुर्जा के पास मौजूद होने की सूचना मिली थी। मुखबिर की सूचना पर जिला पुलिस अधीक्षक सुमित मेहरड़ा के निर्देश पर हेड कांस्टेबल भगवान सिह के साथ टीम का गठन किया गया। गठित टीम मुखबिर द्वारा बताये गये स्थान पर पहुंची तो एक व्यक्ति एक बन्दूक लेकर बैठा हुआ दिखाई दिया जिसको टीम के द्वारा सूझबूझ व घेरा देकर पकडा एवं नाम पता पूछा तो उसने अपना नाम पता बलवीर पुत्र लोकमन गुर्जर साल निवासी खाईदार का पुरा का होना बताया । इस दौरान तलाश में उक्त बलवीर के कब्जे से 1 सिंगल शॉट बन्दूक व 2 कारतूस जिन्दा 315 बोर व 2 कारतूस मिस फायर 315 बोर को जप्त किया। गिरफ्तार आरोपी के खिलाफ थाना पर आर्म्स एक्ट की धाराओं में मामला दर्ज किया गया है।

जल संरक्षण के प्रति जागरूकता के लिए रात्रि चौपालें आयोजित

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। वंदे गंगा जल संरक्षण जल अभियान के अन्तर्गत जल ग्रहण विभाग कार्मिकों द्वारा मुख्यमंत्री जल स्वालम्बन अभियान अन्तर्गत कराए जा रहे जल संरक्षण के कार्यो की जानकारी व जल संरक्षण के प्रति जागरूकता के लिए एमजेएसए परियोजना क्षेत्रों की ग्राम पंचायतों में रात्रि चौपालों का आयोजन किया गया। अधीक्षण अभियन्ता एवं परियोजना प्रबन्धक वाटरशेड ने बताया कि ब्लॉक राजाखेड़ा की ग्राम पंचायत जसूपुरा के ग्राम कुसेड़ा, ब्लॉक सरमथुरा की ग्राम पंचायत आंगई व धौंध, ब्लॉक बाड़ी की ग्राम पंचायत बिजौली, ब्लॉक बसेड़ी की ग्राम पंचायत ताजपुरा, बनौरा में जल संरक्षण के प्रति जागरूकता के लिए रात्रि चौपाल का आयोजन किया गया।

दिव्यांगजनों को आर्टिफिशियल इक्विपमेंट उपलब्ध कराने के लिए पंचायत समितियों में शिविरों का होगा आयोजन

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। वित्तीय वर्ष 2025 की बजट घोषणा के तहत 1 लाख दिव्यांगजनों को 20 हजार रुपये तक के आर्टिफिशियल इक्विपमेंट उपलब्ध कराए जाने की घोषणा की गई है। जिला कलक्टर श्रीनिधि बी टी ने बताया कि योजना के तहत जिले में विशेष योग्यजन शिविरों का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि 12 जून को पंचायत समिति सरमथुरा, 19 जून को पंचायत समिति बसेड़ी, 24 जून को पंचायत समिति बाड़ी, 27 जून को पंचायत समिति सैपऊ, 1 जुलाई को पंचायत समिति राजाखेड़ा तथा 10 जुलाई को पंचायत समिति धौलपुर में शिविरों का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि जिले में समस्त ब्लॉक में तिथिवार शिविरों में सम्बन्धित उपखण्ड क्षेत्र के उपखण्ड अधिकारी को शिविरों का नोडल अधिकारी, प्रभारी अधिकारी नियुक्त किया गया है एवं समस्त उपखण्ड अधिकारी अपने-अपने उपखण्ड में कार्यरत आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, आशासहयोगिनी, एनएनएम, जीएनएम द्वारा अधिक से अधिक दिव्यांगजनों को शिविर में लाना सुनिश्चित करें। संयुक्त निदेशक सूचना प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा दिव्यांगजनों का ऑनलाइन प्रमाण पत्रों के पंजीयान के लिए शिविर स्थल पर आधार कार्ड, यूडीआईडी पंजीकरण, स्वावलंबन पोर्टल के विशेषज्ञ ई-मित्र संचालकों की शिविर स्थल पर उपस्थिति सुनिश्चित करें।

10 एवं 11 जून को विभिन्न कार्यक्रमों का होगा आयोजन

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान' का प्रारंभ 5 जून से किया गया। अभियान का मुख्य उद्देश्य वर्षा जल का अधिकतम संग्रहण, पारंपरिक जल स्त्रोतों का संरक्षण, जनसहभागिता से स्वच्छता तथा जागरूकता को बढ़ावा देना है। जिला कलक्टर श्रीनिधि बी टी ने बताया कि अभियान 5 जून से 20 जून, 2025 तक मनाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि 10 जून मंगलवार को जल ग्रहण विकास एवं भू संरक्षण विभाग द्वारा मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान-2.1 अन्तर्गत पूर्ण कार्यो का अवलोकन, मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान-2.2 अन्तर्गत कार्यो की स्वीकृत करना एवं प्रारम्भ करना, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना-2.0 अन्तर्गत नवीन परियोजनाओं का शुभारंभ, औरण का चिन्हीकरण एवं घास बुआई की पूर्व तैयारी, चारागाहों का चिन्हीकरण एवं पौधारोपण कार्यो की अग्रिम तैयारी, बीत बैंको में गतिविधियों का क्रियान्वयन, हरियालो राजस्थान अन्तर्गत अन्य पौधारोपण कार्यो की अग्रिम तैयारी, मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान-2.0 अन्तर्गत चयनित ग्रामों की ग्राम पंचायत मुख्यालय पर रात्रि चौपाल अभियान अन्तर्गत निर्मित एवं प्रस्तावित जल संग्रहण एवं जल संरक्षण कार्यो पर चर्चा एवं 11 जून बुधवार ज्येष्ठ पूर्णिमा को वन विभाग द्वारा हरियालो राजस्थान के लिए पूर्व तैयारी जैसे गढढे खोदना, सीसीटी, एसजीटी कार्य प्रारंभ, वन क्षेत्र में विद्यमान जल संग्रहण संरचनाओं की गाद निकालना, विभागीय योजना में निर्मित जल संग्रहण संरचनाओं का अवलोकन, तुलसी के पौधो का वितरण, मुख्यमंत्री जल स्वालम्बन अभियान-2.1 अन्तर्गत पूर्ण कार्यो का अवलोकन, मुख्यमंत्री जल स्वालम्बन अभियान-2.2 अन्तर्गत कार्यो की स्वीकृत करना एवं प्रारंभ करना, मनरेगा अन्तर्गत कार्यो को प्रारंभ एवं लवकुश वाटिका पर कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा।

सिलिकोसिस मरीजों के ईलाज व भरपोषण हेतु चलाई जा रही है योजना में फर्जीवाड़ा के आरोपियों को किया गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। कोतवाली थाना पुलिस ने बड़ी कार्यवाही को अंजाम दिया है। कोतवाली थानाधिकारी हरिनारायण मीना ने बताया कि 18 मार्च को जिला अस्पताल में तैनात वरिष्ठ रेडियोग्राफर सुरेन्द्र सिंह पुत्र बाबूलाल त्यागी निवासी पिपहेरा के द्वारा एक रिपोर्ट पेश की गई। जिसमें बताया था कि जयपुर से सिलकोसिस के नोडल अधिकारी डा प्रहलाद सिसोदिया द्वारा मेरी SSO ID से गलत Xra4 अपलोड होने की सूचना मिली तब मैंने अपनी SSO ID खोलकर पडताल की तो पता चला कि राजेन्द्र पुत्र रामस्वरुप गांव विक्रमपुरा व हेतसिंह पुत्र रामचरन गांव सहरोली धौलपुर सैंपऊ का तथा अन्य कई ने (सूची संलग्न) मेरी SSO IDपर सिलकोसिस के गलत एक्सरे अपलोड कर मुझे फंसाने के साथ साथ सरकार को लाखो का नुकसान पहुंचाने की कोशिश की है। जिस पर पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी थी। एसपी सुमित मेहरड़ा के निर्देश पर टीम का गठन किया गया गठित ने अनुसन्धान के दौरान पाया कि सिलिकोसिस की बीमारी पाई जाने पर बीमार व्यक्ति को पहले ईलाज व भरपोषण हेतु तीन लाख रूपये का अनुदान देना व बीमार व्यक्ति के मरने के बाद में परिवारजनों को सहायतार्थ के रूप में दो लाख रूपये सरकार द्वारा भुगतान किया जाता है। जिस कारण प्रकरण के परिवादी सुरेन्द्र त्यागी वरिष्ठ रेडियोग्राफर द्वारा अस्पताल में कार्यरत वार्ड बॉय सौरभ जाटव के मार्फत सिलकोसिस के दलाल तोताराम को अपनी एसएसओ आईडी पासवर्ड उपलब्ध करवाना एवं जिसके ऐवज में प्रत्येक मरीज पर बीस हजार रूपये देना तय होने पर तोताराम द्वारा मुख्य सरगना रामबृज कुशवाह के लिये गुड्डु कुशवाह, सकूर खां व तोताराम व अन्य द्वारा गांव गांव से व्यक्तियों को तलाश कर रामबृज कुशवाह की ईमित्र की दुकान पर भेजना और रामबुज कुशवाह द्वारा सिलिकोसिस का आवेदन फॉर्म ऑनलाईन अपने घर पर लगी एक्सरे मशीन से एक्सरे कर एवं पूर्व के सिलिकोसिस मरीजों के एक्सरे में फोटोसोप ऐप से एक्सरे में मरीज का नाम पता व दिनांक एडिट करना एवं मरीज को एक लाख रूपये भुगतान होने पर देने की बात तय होना एवं शेष दो लाख रूपये स्वयं अपने पास रख दलालों को 20-20 हजार रूपये देने की बात तय होने पर रामबूज कुशवाह द्वारा वरिष्ठ रेडियोग्राफर सुरेन्द्र त्यागी से ओटीपी प्राप्त कर उसकी एसएसओ आईडी से सिलिकोसिस पॉर्टल पर फर्जी एक्सरे अपलोड करना पाया जाने पर प्रकरण के परिवादी सुरेन्द्र त्यागी व अन्य आरोपी रामबूज, सकूर खान व सौरभ को गिरफ्तार किया गया है जिनसे प्रकरण में गहनता से पूछताछ की जा रही है।

अधिवक्ताओं ने जिला जज को मुख्य न्यायाधिपति के नाम दिया ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। धौलपुर अभिभाषक संघ की संघर्ष समिति द्वारा नवीन न्यायालय परिसर में अधिवक्ताओं को बैठने के लिए चेंबर या पक्की छत की मांग को लेकर संघर्ष समिति के अध्यक्ष रघुनाथ प्रसाद शर्मा के नेतृत्व में धौलपुर अभिभाषक संघ ने जिला जज के माध्यम से मुख्य न्यायाधिपति जोधपुर के नाम ज्ञापन प्रेषित किया है। जिसमें उन्होंने नवीन न्यायालय परिसर में अधिवक्ताओं को बैठने के लिए पक्की छत या चेंबर उपलब्ध कराए जाने की मांग की है। इसके लिए उन्होंने मुख्य न्यायाधिपति जोधपुर से नवीन न्यायालय परिसर में 240 बाई 100 वर्ग गज जमीन धौलपुर आवश्यक संघ के नाम आवंटित करने की मांग रखी है। संघर्ष समिति अध्यक्ष रघुनाथ प्रसाद शर्मा व अभिभाषक संघ अध्यक्ष प्रशांत हुण्डावाल ने बताया कि न्यायालय परिसर में वर्तमान में 500 अधिवक्ता प्रैक्टिस कर रहे हैं। ऐसे में यदि नवीन न्यायालय परिसर में उन्हें टीन सेट में बैठाया जाएगा तो वहां भीषण गर्मी के समय अधिवक्ताओं के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। उन्होंने बताया कि नवीन न्यायालय परिसर पहाड़ी इलाके में होने कारण वहां का तापमान सामान्य से अधिक रहता है। ऐसे में अधिवक्ताओं को काम करने में भी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा इसलिए अधिवक्ताओं की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए उच्च न्यायालय नवीन न्यायालय परिसर में अधिवक्ताओं के लिए उत्तर दिशा की ओर खाली पड़े भूखंड को अभिभाषक संघ के नाम जारी करें। इससे पूर्व अधिवक्ताओं ने न्यायालय परिसर में जुलूस निकालकर नारेबाजी की और कहा की जब तक अधिवक्ताओं के बैठने के लिए स्थान सुनिश्चित नहीं होगा तब तक नवीन न्यायालय परिसर में न्यायालय का स्थानांतरण नहीं होने देंगे।

भगवान बिरसा मुंडा जी के बलिदान दिवस पर श्रद्धांजलि सभा आयोजित

ABVP ने युवाओं को बताया जननायकों का महत्व

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.) राजकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज, धौलपुर में भगवान बिरसा मुंडा जी के बलिदान दिवस के पावन अवसर पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा एक प्रेरणादायक श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस आयोजन में युवाओं को न केवल बिरसा मुंडा जी के जीवन से परिचित कराया गया, बल्कि जनजातीय समाज के योगदान एवं उनके नायकों की ऐतिहासिक भूमिका पर भी व्यापक रूप से चर्चा की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान बिरसा मुंडा जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पण के साथ हुआ। इसके पश्चात छात्रों को उनके बलिदान, साहस और सामाजिक जागरण आंदोलन की जानकारी दी गई। ABVP के जिला संयोजक विकास अग्रवाल ने कहा कि "भगवान बिरसा मुंडा जी न केवल एक स्वतंत्रता सेनानी थे, बल्कि जनजातीय समाज के स्वाभिमान, संस्कृति और अधिकारों की रक्षा के प्रतीक भी थे। उनका संघर्ष आज भी हम युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है। हमें उनके दिखाए मार्ग पर चलकर समाज में सकारात्मक बदलाव लाना चाहिए।" जिला विस्तारक उमेश ओझा ने कहा "अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद केवल एक छात्र संगठन नहीं है, बल्कि यह राष्ट्र निर्माण की प्रयोगशाला है। परिषद वर्षों से जनजातीय अंचलों में जाकर वहां के छात्र-छात्राओं को शिक्षा, नेतृत्व और सामाजिक चेतना के लिए प्रेरित करती आई है। ABVP ने जनजातीय नायकों जैसे भगवान बिरसा मुंडा, रानी दुर्गावती, तांत्या भील, शंकर शाह आदि की गौरवगाथाओं को छात्र समुदाय तक पहुँचाने का कार्य किया है। परिषद द्वारा वनवासी क्षेत्रों में पुस्तक वितरण, शिक्षा शिविर, स्वास्थ्य जांच अभियान एवं सांस्कृतिक जागरण जैसे अनेक कार्यक्रम नियमित रूप से संचालित किए जाते हैं।" कार्यक्रम के दौरान छात्रों को भगवान बिरसा मुंडा जी की जीवनी, उलगुलान आंदोलन, और आदिवासी समाज के शोषण के विरुद्ध किए गए संघर्ष के बारे में बताया गया। विद्यार्थियों ने श्रद्धा के साथ उनके आदर्शों को आत्मसात करने की शपथ भी ली। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ। इस अवसर पर बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं, शिक्षकगण एवं परिषद के कार्यकर्ता उपस्थित रहे। यह आयोजन न केवल श्रद्धांजलि था, बल्कि एक प्रेरणा थी – आने वाली पीढ़ियों को उनके इतिहास, संस्कृति और कर्तव्यों की याद दिलाने का संकल्प।

बिजली के तार काटकर चोरी करने के मामले में कोर्ट ने 3 आरोपियों को 3-3 साल के साधारण कारावास की सुनाई सजा

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। विद्युत अपराध अधिनियम (अपर सैशन न्यायालय) धौलपुर के विशिष्ट न्यायाधीश ने करीब 15 साल पुराने एक प्रकरण में बिजली के तार काटकर चोरी करने के तीन आरोपियों को 3-3 साल के साधारण कारावास की सजा सुनाई है। इसके साथ ही तीनों आरोपियों को 10-10 हजार रुपये के अर्थदंड से भी दंडित किया गया है। एडीजे कोर्ट धौलपुर के अपर लोक अभियोजक मुकेश सिकरवार ने बताया कि मामला अक्टूबर 2009 का है। जिसमें धौलपुर सदर थाना क्षेत्र के गांव जाटोली से बादलपुर मोड तक करीब साढ़े 3 किलोमीटर की 33 केवी विद्युत लाइन के तार को चोरों द्वारा काटकर चोरी किया गया था। मामले को लेकर मरैना फीडर के जेईएन।मोहम्मद अकरम ने सदर थाना धौलपुर में अज्ञात चोरों के खिलाफ मामला दर्ज कराया था। धौलपुर सदर पुलिस ने मामले में कार्रवाई करते हुए तीन आरोपियों वीरेंद्र पुत्र कल्लाराम निवासी जीपी कॉलेज के पीछे उत्तम पुरा मुरैना मध्यप्रदेश, पप्पन उर्फ हुकुम सिंह पुत्र दौजीराम निवासी गोरे नगर उत्तम पुरा मुरैना मध्य प्रदेश और अमित बंसल पुत्र मदन बंसल निवासी लक्ष्मी गंज जच्चा खाना रोड थाना जनक गंज ग्वालियर मध्यप्रदेश को गिरफ्तार किया गया। जांच अनुसंधान के बाद प्रकरण न्यायालय विशिष्ट न्यायाधीश विद्युत अपराध अधिनियम (अपर सैशन न्यायधीश) धौलपुर में आया। जिसमें आरोपियों के खिलाफ धारा 136 विद्युत अधिनियम के अंतर्गत विद्युत तारों की चोरी के बाबत विचारण किया गया। जिसमें न्यायाधीश राकेश गोयल ने 6 जून 2025 को फैसला सुनाते हुए तीनों आरोपियों वीरेंद्र, पप्पन और अमित को दोषी मानते हुए प्रत्येक को तीन-तीन साल के साधारण कारावास की सजा सुनाई है।

नौनिहाल गटकेंगे विटामिन ए की खुराक आज से चलेगा विशेष अभियान,

धौलपुर(निसं.)। बच्चों में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने तथा रतौंधी सहित अन्य आँखों की बीमारियों से बचाव के लिए आज से विटामिन ए की दवा पिलाने का विशेष अभियान सम्पूर्ण राज्य में एक साथ प्रारंभ होने जा रहा है। जोकि 29 जून तक चलेगा। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. धर्मसिंह मीणा ने बताया कि इस अभियान के दौरान 9 माह से 5 वर्ष तक के बच्चों को विटामिन ए की खुराक आंगनबाड़ी केंद्रों सहित जिले के सभी उप स्वास्थ्य केंद्रों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों, जिला अस्पताल पर पिलाई जाएगी। इसके लिए सभी चिकित्सा अधिकारी प्रभारियों तथा एएनएम को दिशा निर्देश जारी कर दिए गए है। कार्यक्रम प्रभारी एसीएमएचओ डॉ. गौरव मीणा ने बताया कि यह खुराक हर छः माह के अंतराल पर पिलाई जाती हैं

पर्यावरण स्वीकृति

हर्षित मिश्रा पुत्र गौरीशंकर मिश्रा ML NO.63/1998 निकट ग्राम आसलपुर त. फुलेरा जिला जयपुर राजस्थान के लिए पर्यावरण स्वीकृति क्रमांक नंबर RJ/24/SEAC2/MIN/EC/0464 तारीख 23/05/2025 को प्रदान कर दी गई है। स्वीकृति पत्र SEIAA राजस्थान प्रदूषण नियंत्रण मंडल के कार्यालय व वेबसाइट WWW.ENVIRONMENT.RAJASTHAN.GOV.IN पर उपलब्ध है।

लीज धारक
हर्षित मिश्रा पुत्र गौरी शंकर मिश्रा, ML NO.63/1998

पर्यावरण स्वीकृति

हर्षित मिश्रा पुत्र गौरीशंकर मिश्रा ML NO.2/1999 निकट ग्राम आसलपुर त. फुलेरा जिला जयपुर राजस्थान के लिए पर्यावरण स्वीकृति क्रमांक नंबर RJ/24/SEAC2/MIN/EC/0463 तारीख 23/05/2025 को प्रदान कर दी गई है। स्वीकृति पत्र SEIAA राजस्थान प्रदूषण नियंत्रण मंडल के कार्यालय व वेबसाइट WWW. ENVIRONMENT.RAJASTHAN.GOV.IN पर उपलब्ध है।

लीज धारक
हर्षित मिश्रा पुत्र गौरी शंकर मिश्रा, ML NO.2/1999

कार्यालय ग्राम पंचायत लुहारा, पंचायत समिति बीदासर (चूरू)

क्रमांक :- ग्रापं लुहारा/2025-26/53-57 दिनांक :- 06.06.2025

निविदा सूचना संख्या 03/2025-26

इस कार्यालय के निम्नानुसार कार्य को सम्पादित करने हेतु पहली वर्षाकाल समाप्ति पश्चात एक वर्ष की डिफेक्टिव लाईब्लिटिज के साथ उपयुक्त श्रेणी के राजस्थान/केन्द्र सरकार में पंजीकृत संवेदको से ई-टेण्डर प्रक्रिया के द्वारा ऑनलाईन निविदायें आमंत्रित की जाती हैं। उक्त निविदा SPPPPortal पर Upload कर दी गयी हैं।

क्र. सं.	कार्य का नाम व विवरण	अनुमानित राशि (रूपये)	धरोहर राशि (रूपये)
1	पानी की पाईप लाईन डालना चैंबर हाउस से राजोलाई ट्यूबवैल की ओर लुहारा	978553	19572
2	ऑनलाइन फार्म डाउनलोड व जमा / अपलोड करने की तारीख	07.06.2025, दोपहर 4.00 बजे से 13.06.2025, दोपहर 1.00 बजे तक	
3	धरोहर राशि, निविदा शुल्क एवं प्रोसेसिंग फीस डी.डी./बैकर्स चैक एवं अन्य मूल कागजात कार्यालय में जमा कराने की तारीख	13.06.2025, दोपहर 2.00 बजे तक	
4	ऑनलाईन निविदा खोलने की तारीख	13.06.2025, दोपहर 3.00 बजे से	

उक्त से संबधित अन्य विस्तृत विवरण http://eproc.rajasthan.gov.in पर से Tender ID 2025_PRD_477286_1, Tender Reference Number G.P Luhara /2025-26/53-57/DATE 06.06.2025 के द्वारा डाउनलोड कर देखा जा सकता है।

प्रशासक
ग्राम पंचायत लुहारा, पं.स. बीदासर (चूरू)

ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत लुहारा, पं.स. बीदासर (चूरू)

कार्यालय ग्राम पंचायत लुहारा, पंचायत समिति बीदासर (चूरू)

क्रमांक- ग्रापं लुहारा/ खु.नि/2025-26/47-52 दिनांक- 06.06.2025

खुली निविदा सूचना संख्या- 02/2025-26

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत लुहारा पंचायत समिति बीदासर (चूरू) में स्वीकृत निम्न कार्यों को सम्पादित कराने हेतु पहली वर्षाकाल समाप्ति पश्चात एक वर्ष की डिफेक्टिव लाइब्लिटिज के साथ उपर्युक्त श्रेणी राजस्थान/केन्द्र सरकार में पंजीकृत संवेदकों से खुली निविदा प्रक्रिया द्वारा निर्धारित प्रपत्र / फार्म में दिनांक 07.06.2025 समय दोपहर 03.00 पी.एम. बजे से निविदायें आमन्त्रित की जाती है।

क्र.सं.	कार्य का नाम	अनुमानित राशि (रूपये)	धरोहर राशि (रूपये)
1.	पानी की पाईप लाइन डालना राजोलाई ट्यूबवेल से जल होज की ओर लुहारा	521520	10430

उक्त कार्यों के इच्छुक निविदादाताओं द्वारा निर्धारित शुल्क कार्यालय में जमा करवाकर दिनांक 13.06.2025 समय 11.00 ए.एम. बजे तक निविदा फार्म एवं शर्तों की प्रति प्राप्त की जा सकती है। भरी हुई एवं सीलबन्द निविदाऐं दिनांक 13.06.2025 समय 12.00 पी.एम. बजे तक ग्राम पंचायत कार्यालय में जमा करवाई जा सकती है। धरोहर राशि निविदा आवेदन-पत्र के साथ संलग्न शर्तों अनुसार स्थानीय बीदासर बैंक शाखापर देय बैंक डी.डी. / बैंकर्स चेक द्वारा जमा कराई जा सकेगी। प्राप्त निविदाओं को दिनांक 13.06.2025 को दोपहर 02.00 बजे से गठित क्रय समिति के द्वारा खोली जायेगी। निविदा शुल्क प्रत्येक कार्य का रूपये 200/- जमा करवाना होगा। उक्त से संबन्धित अन्य विस्तृत शर्तें कार्यालय समय में ग्राम पंचायत कार्यालय में देखी जा सकती है। उक्त से संबंधित अन्य विस्तृत विवरण http://sppp.rajasthan.gov.in पर NIB Code- ZCR252600360 and UBN Code- ZCR2526WSOB00569 तक पर से Download कर देखा जा सकता है।

प्रशासक
ग्राम पंचायत लुहारा, पं.स. बीदासर (चूरू)

ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत लुहारा, पं.स. बीदासर (चूरू)

नगर निगम ग्रेटर जयपुर

(नन्दपुरी रेल्वे अण्डरपास के पास, जगतपुरा, जयपुर)

क्रमांक :– जसअ/2025/90 दिनांक: 06.06.2025

ई–निविदा सूचना संख्या – 49/2025–26

केन्द्र एवं राज्य सरकार के सभी विभागों में पंजीकृत उपर्युक्त श्रेणी के ठेकेदारों एवं नगर निगम ग्रेटर, जयपुर के पंजीकृत निविदाताओं से अधिशाषी अभियन्ता जगतपुरा जोन से संबंधित विकास कार्यो हेतु निविदाए आमंत्रित की जाती है। कार्यो की अनुमानित लागत टेण्डर बेचे जाने तथा प्राप्त करने की तारीख टेण्डर शर्त आदि सम्पूर्ण विवरण नगर निगम ग्रेटर, जयपुर की वेबसाईट www.jaipurmc.org.com व राजस्थान सरकार के पोर्टल http://sppp.raj.nic.in तथा http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखी व डाउनलोड की जा सकती है। उक्त निविदाओं को (sppp.rajasthan.gov.in) पोर्टल पर अपलोड करवा दिया गया है।

(UBN NO.:- JMC2526WS0B00721)

अधिशाषी अभियन्ता
जगतपुरा जोन
नगर निगम ग्रेटर, जयपुर

राज.संवाद/सी/25/3878

OFFICE GRAM PANCHAYAT HARJANPURA, P.S. NEEMAKATHANA

FILE NO : 65 DATE: 09.06.2025

Notice Inviting Bid

Bid for MGNAREGA and Other Scheme RATE CONTRACT FOR SUPPLY OF CONSTRUCTION MATERIAL & PROVIDING EQUIPMENT for FY 2025-26 GRAM PANCHAYAT HARJANPURA PS NEEMKATHANA of subject matter's of Procurement are invited from intersted bidders upto 09.06.2025, 09:00 AM to 18.06.2025, 06:00 PM. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (http://eproc.rajasthan.gov.in or http://sppp.raj.nic.in) of the state and PANCHAYATI RAJ departmental website. The approximate value of the procurement is RS - 40,00,000/-.
UBN No.- PIQ2526GLOB00102.

SARPANCH
GRAM PANCHAYAT HARJANPURA
PANCHAYAT SAMITI
NEEMAKATHANA

BDO
GRAM PANCHAYAT HARJANPURA
PANCHAYAT SAMITI
NEEMAKATHANA

OFFICE OF THE ADDITIONAL CHIEF ENGINEER, (PROJECT) PHED REGION CHURU (RAJ.)

Email: ace.chu.phed@rajasthan.gov.in

S.No. 413-437 Dated: 02.06.2025

Notice Inviting Bid No 02/2025-26

Bids for Replacements of Pipelines against Damaged/ Polluted pipe line & Replacement of Centrifugal Pump sets against Unserviceable pump sets in UWSS Taranagar with one year defect liability period are invited from interested bidders upto 18.00 hrs 12.06.2025. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.rajasthan.gov.in and departmental website https://phed.raj.nic.in. (The approximate value of the procurement is Rs. 104.58 Lakhs

Rammurti
Additional Chief Engineer
(Project),PHED, Churu

DIPR/C/7371/2025

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER PWD DN SUJANGARH

No: 459-470 Date: 30.05.2025

Notice Inviting Bid No 04/2025-26

Bids for 2 (Two Nos) work are invited from interested bidders upto 06.00 PM dated 13.06.2025 other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (http://eproc.rajasthan.gov.in/http://sppp.raj.nic.in) of the state and PWD departmental website. The approximate value of the procurement is Rs. 102.80 Lacs
NIB No PWD2526A0939
UBN NO :-
3. PWD2526WSOB03049
4. PWD2526WSOB03050

Executive Engineer
PWD Dn. Sujangarh

DIPR/C/7274/2025

भाजपा नगर मंडल ने किया गो सेवा एवं स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन

जयपुर टाइम्स

सीकर(निसं.)। भारतीय जनता पार्टी पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर मंडल (सीकर जॉन-2) द्वारा सोमवार को कामधेनु गौ चिकित्सालय में गो सेवा एवं स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर गायों को हरा चारा, गुड़ और दलिया खिलाया गया तथा चिकित्सालय परिसर की साफ-सफाई कर आवश्यक दवाओं का वितरण भी किया गया। मंडल अध्यक्ष प्रदीप अग्रवाल ने बताया कि यह कार्यक्रम गौमाता की सेवा और संवर्धन की भावना से प्रेरित होकर आयोजित किया गया है। उन्होंने कहा कि भाजपा कार्यकर्ता समाजसेवा और सनातन मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध हैं। कार्यक्रम में महावीर प्रसाद सेन, विनोद चौहान, नीरजा अग्रवाल, महक टाटीया, रीदम अग्रवाल, अशोक कुमार माथुर, पार्षद जीत भारतीय और महेन्द्र चौधरी सहित कई कार्यकर्ता उपस्थित रहे और श्रमदान किया। सभी ने मिलकर चिकित्सालय परिसर को स्वच्छ बनाने एवं गौसेवा के लिए सामूहिक संकल्प लिया। कार्यक्रम के अंत में उपस्थितजन ने नियमित रूप से गौसेवा और गोशाला सहयोग जारी रखने का आह्वान किया।

त्याग और समर्पण का प्रतीक है ईद का पर्व- दूकिया

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। भाजपा जिला उपाध्यक्ष प्यारेलाल दूकिया ने कहा कि त्याग और समर्पण का प्रतीक है ईद का पर्व, परोपकार और बंटवारे का त्योहार है, ईद का पर्व, यह त्यौहार समाज में एकता का संदेश फैलाता है। वे सोमवार को गढ़ परिसर में आयोजित ईद मुबारक कार्यक्रम में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि यह त्योहार सिर्फ कुर्बानी का नहीं, बल्कि धैर्य, आज्ञाकारिता और मानवता का संदेश भी देता है। इस मौके पर ठाकुर अंगददेव सिंह ने कहा कि इस त्योहार से समाज में भाईचारा, प्रेम और समानता का संदेश फैलता है। आस्था का पर्व और सामाजिक समर्पण की मिसाल है। कार्यक्रम में ठाकुर अनिरुद्ध सिंह मंडावा,पार्षद मोहम्मद इब्राहिम, हाजी एआर मौम, भाजपा नेता अयूब खत्री, पार्षद सतार राईन, एकलव्य सिंह बिसाऊ, महिपालसिंह तोलियासर, शिवचरण गाड़ोदिया, पूर्व चेयरमैन राधेश्याम सैनी,चन्द्रपाल सिंह पाटोदा, महेश जोशी सहित अनेक लोग मौजूद रहे।

झुंझुनूं में गिरिराज स्वामी ने डिपो चीफ-मैनेजर का पद संभाला

जयपुर टाइम्स

झुंझुनून(निसं.)। राजस्थान रोडवेज के झुंझुनूं डिपो में गिरिराज स्वामी ने सोमवार को डिपो के चीफ मैनेजर (सीएम) का पदभार ग्रहण कर लिया। 89 लाख रुपए से अधिक के वेतन घोटाले के बाद चीफ मैनेजर गणेश शर्मा सहित 24 कर्मचारियों के निलंबन कर दिया गया था। इनमें से 16 कर्मचारी तीन साल से सिर्फ कागजों में ही काम कर रहे थे। ये कर्मचारी बिना ऑफिस आए और काम किए बिना फर्जी अटेंडेंस लगाकर वेतन उठा रहे थे। गिरिराज स्वामी ने पदभार ग्रहण करते ही

स्पष्ट किया कि उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता जनसुविधाओं में सुधार और पारदर्शी प्रशासनिक व्यवस्था कायम करना होगा। गिरिराज स्वामी ने कहा कि "मेरा पहला उद्देश्य आम जनता को बेहतर सेवाएं प्रदान करना है। बसों की नियमितता, स्वच्छता और समय पर संचालन सुनिश्चित किया जाएगा।

श्मशान की भूमि पर अतिक्रमण का विरोधः सांसी और भोपा समाज का कलेक्ट्रेट पर प्रदर्शन

जयपुर टाइम्स

झुंझुनू(निसं.)। उदयपुरवाटी उपखंड के नांगल गांव में सांसी और भोपा समाज की पुश्तैनी श्मशान भूमि पर कथित तौर पर दबंगों की ओर से किए गए अतिक्रमण के विरोध में सोमवार को ग्रामीणों ने झुंझुनूं कलेक्ट्रेट के बाहर जमकर प्रदर्शन किया। समाज के सैकड़ों लोगों ने पूर्व जनसंपर्क अधिकारी सवाई सिंह मालावत के नेतृत्व में प्रशासन के खिलाफ जमकर नारेबाजी की और जल्द से जल्द अतिक्रमण हटाने और दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। प्रदर्शनकारियों ने बताया कि यह भूमि वर्षों से सांसी और भोपा समाज के अंतिम संस्कार की परंपरा का हिस्सा रही है। ग्रामीणों का आरोप है कि कुछ दबंगों ने इस भूमि पर दीवार बनाकर कब्जा करने की कोशिश शुरू कर दी है, जिससे समाज में भारी रोष है। प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहे पूर्व पीआरओ सवाई सिंह मालावत ने अतिक्रमण को अपनी संस्कृति और पहचान पर हमला बताया।

केन्द्र सरकार ने देश को आत्मनिर्भर बनाया : राठौड़

संकल्प से सिद्धी कार्यक्रम के तहत कार्यशाला आयोजित

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़ के आवास पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल के 11 वर्ष पूर्ण होने पर पार्टी की ओर से चलाया जा रहा संकल्प से सिद्धी कार्यक्रम के तहत सोमवार को भाजपा जिला कार्यशाला का आयोजन भाजपा जिलाध्यक्ष बसंत शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। इस अवसर पर पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़ ने कार्यकर्ताओ को वर्चुअली संबोधित करते हुए कहा कि पिछले 11 वर्षो से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश को विकसित बनाने के लिए कार्य किया स्वदेशी तकनिक स्किल इंडिया और देश के संसाधनों का समूचित उपयोग कर केन्द्र सरकार ने देश को आत्मनिर्भर बनाने की और कार्य करना प्रारंभ कर दिया है। उन्होने विश्वास व्यक्त किया प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश को 2047 तक विकसित देश बनाने का जो सपना देखा है संभव है जिस रूप में सरकार कार्य कर रही है। देश इस समय सीमा से पूर्व विकसित राष्ट्रो की गिनती में शामिल हो जाए। उन्होने सभी कार्यकर्ताओ का आव्हान किया कि वे सरकार की सभी जन कल्याणकारी योजनाओं का प्रचार प्रसार करे जिससे शासन की सारी योजनाओं का लाभ जरूरतमंद तक पहुचे। इस अवसर पर मुख्यवक्ता के रूप में बोलते हुए प्रदेश महामंत्री व पूर्व सांसद संतोष अहलावत ने कहा कि आज भारत की अर्थव्यवस्था चोथे नम्बर की अर्थव्यवस्था है यह उपलब्धि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की कड़ी मेहनत का परिणाम है यह नया भारत है। जो किसी को छेड़ता नही परन्तु छेड़ने पर किसी को छोड़ता नहीं उन्होने ऑपरेशन सिंदूर को भारत की सभी महिलाओं के स्वाभिमान से जोड़ते हुऐ कहा कि इससे देश की नारी शक्ति में विश्वास जागृत हुआ है और जिस रूप में भारतीय सेना ने अपना शौर्य और पराक्रम दुश्मन के खिलाफ दिखाया है इससे सभी देशवासियों में सेना के प्रति सम्मान और बढ़ा है। उन्होने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने महिलाओं को आरक्षण देकर उनका सम्मान किया है। नारी को सम्मान देकर उसे समुचित अधिकार देना इस सरकार की संवेदनशीलता को दर्शाता है। उन्होने सभी कार्यकर्ताओ से आग्रह किया कि वे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की इन नितियों को लेकर आमजन तक पहुचे। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष बसंत शर्मा ने कहा कि देश में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पिछले 11 वर्षो में देश स्वावलंबी बनने की और अग्रसर हो रहा है। उन्होने कहा कि सरकार ने गांव गांव ढाणी ढाणी तक विकास योजनाओं को पहुचाया है। जिसका परिणाम है देश को अपनी सरकार पर और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर गहरा विश्वास है, देशवासी यह मानते है कि देश सुरक्षित हाथो में है। इस अवसर पर पूर्व मंत्री राजकुमार रिणवां, खेमाराम मेघवाल, राष्ट्रीय परिषद् सदस्य ओम सारस्वत, उपजिला प्रमुख महेन्द्र न्यौल, एससी मोर्चा प्रदेश मंत्री सीताराम लुगरिया ने भी अपने विचार व्यक्त किए। जिला महामंत्री भास्कर शर्मा ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि सम्पूर्ण जिले में यह अभियान चलाया जायेगा और बूथ स्तर तक जाकर लोगो को वरिष्ठ नेताओं की ओर से इस 11 वर्ष की उपलब्धि के बारे में बताया जाएगा। कार्यक्रम का संचालन जिला महामंत्री अभिषेक चोटिया ने किया। इस अवसर पर विधानसभा संयोजक पदमसिंह राठौड़, अर्जुनसिंह फ्रासा, जिला उपाध्यक्ष नरेन्द्र काछवाल, नरेन्द्र कंवल, सत्तार खान, नरेश सहारण, संतोष तालणिया, जिला मंत्री पवन माहेश्वरी, भारती मुदगल, संदीप काजला, जिला कोषाध्यक्ष सुभाष जांगिड़ प्रदेश सहकोषाध्यक्ष अल्पसंख्यक मोर्चा जमरदीन तेली, दौलत तंवर, जोगेन्द्र झाझड़िया, सुरेन्द्र स्वामी, सरदारशहर नगरपरिषद् सभापति राजकरण चौधरी, बीदासर चेयरमेन सीताराम प्रजापत, प्रधान विनोद देवी पूनियां, नेता प्रतिपक्ष विमला गढ़वाल, किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष ओमप्रकाश खिचड़, भाजयुमे जिलाध्यक्ष गोपाल बालाण अल्पसंख्यक मोर्चा जिलाध्यक्ष अख्तर खांन, एससी मोर्चा जिलाध्यक्ष अजीत मेघवाल, मण्डल अध्यक्ष धर्मेन्द्र राकसिया, सुरेश सारस्वत, सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

झुंझुनूं के छह गांवों में विकसित कृषि संकल्प अभियान, 1214 किसानों ने लिया भाग

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। कृषि विज्ञान केन्द्र आबूसर, कृषि विभाग और उद्यान विभाग के संयुक्त तत्वावधान में रविवार को "विकसित कृषि संकल्प अभियान" के तहत जिले के छह ग्राम पंचायतों–धुलवा, बड़बर, खांदवा, खाजपुर, इंडाली व भदोंडा–में विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। अभियान के तहत दो अलग-अलग टीमों ने गांवों में पहुंचकर किसानों को खरीफ फसलों, प्राकृतिक खेती, जैविक खेती, मृदा स्वास्थ्य तथा कृषि और उद्यान विभाग की योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी। कृषि विज्ञान केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक व अध्यक्ष डॉ. दयानंद ने बताया कि इस अभियान में कुल 1214 किसानों ने भाग लेकर विभिन्न सत्रों में भागीदारी निभाई। कार्यक्रम में विषय विशेषज्ञ राजेंद्र नागर, सहायक निदेशक डॉ. रणवीर सिंह, प्रवीण भड़िया और कृषि व उद्यान विभाग के अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान किसानों को आधुनिक तकनीकों के साथ-साथ पारंपरिक व जैविक खेती की उपयोगिता के बारे में भी विस्तार से बताया गया। मृदा स्वास्थ्य कार्ड, प्राकृतिक उर्वरक, और सरकारी अनुदान योजनाओं की जानकारी भी दी गई। इस अवसर पर जिले के नवाचारी किसानों ने भी अपने अनुभव साझा किए और कृषि वैज्ञानिकों व अधिकारियों के साथ खुले संवाद में भाग लिया। किसानों ने ऐसे अभियानों की नियमितता की मांग करते हुए कहा कि इससे उन्हें नई तकनीकों को अपनाने में मदद मिलती है।

भाजपा के राहुल पंचायत समिति सदस्य निर्वाचित, कांग्रेस उम्मीदवार को 444 वोटो से हराया

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। पंचायत समिति मंडावा वार्ड 14 से सदस्य उपचुनाव में भाजपा प्रत्याशी ने कांग्रेस को पराजित कर एक बार फिर से सीट बरकरार रखी है। रविवार को हुई मतगणना में भाजपा प्रत्याशी राहुल कुमावत ने कांग्रेस प्रत्याशी सुशील बुडानिया को 444 वोटो से पराजित कर वार्ड 14 से नवनिर्वाचित पंचायत समिति सदस्य चुने गए। भाजपा के राहुल कुमावत को 1895 वोट मिले तो वहीं कांग्रेस के सुशील बुडानिया को 1451 वोट प्राप्त हुए। 49 वोट रिजेक्ट किए गए तो 25 वोट नोटों को मिले। रिटर्निंग अधिकारी व एसडीएम मुनेश कुमारी ने नव निर्वाचित पंचायत समिति सदस्य राहुल को जीत का प्रमाण पत्र देते हुए शपथ दिलाई। तहसीलदार सुरेंद्र भास्कर भी मौजूद रहे। वार्ड 14 से भाजपा के पंचायत समिति सदस्य रहे संजीव कस्वा के निधन के बाद खाली हुई सीट पर उपचुनाव हुआ था। इस दौरान भाजपा जिला उपाध्यक्ष प्यारेलाल ढुकिया, हेतमसर सरपंच प्रतिनिधि अभिमन्यु कस्वा, महावीर ढाका, संजय मील, गणेश चैतन्य महाराज, चंद्रपाल सिंह पाटोदा, महिपाल सिंह तोलियासर, संदीप शर्मा, मंडल अध्यक्ष मोहनलाल सैनी, सरपंच मुकेश झाझड़िया, हनुमान प्रसाद नेमीवाल सहित पार्टी के कार्यकर्ता मौजूद रहे। मतगणना के दौरान सुरक्षा व कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए डिप्टी ग्रामीण हरिसिंह धायल के नेतृत्व में मंडावा थानाधिकारी रामनिवास, बिसाऊ थाना अधिकारी रामपाल मीणा भारी पुलिस जाप्ते के साथ मौजूद रहे। शनिवार को वैलेट पेपर से हुए मतदान में 60.77 प्रतिशत मतदान हुआ था। 5 हजार 617 मतदाताओं में से 3 हजार 420 मतदाताओं ने अपने मत का प्रयोग किया था।

वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के तहत किया पौधरोपण

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। जल संरक्षण व पर्यावरण सुरक्षा की दिशा में सार्थक पहल करते हुए "वंदे गंगा" जल संरक्षण जन अभियान के अंतर्गत सोमवार को सूचना केंद्र परिसर में पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम सार्वजनिक निर्माण विभाग के तत्वावधान में संपन्न हुआ। इस अवसर पर जिला कलेक्टर रामावतार मीणा व अभियान प्रभारी विशंभर पूनिया ने वृक्षारोपण किया व उपस्थित लोगों को जल व पर्यावरण संरक्षण की शपथ भी दिलाई गई। जिला कलेक्टर ने बताया कि "वंदे गंगा" अभियान के तहत पीडब्ल्यूडी की ओर से पौधरोपण अभियान की प्रतीकात्मक रूप से शुरुआत की गई है। मानसून सीजन में जिले भर में 22 लाख पौधे लगाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। उन्होंने बताया कि सभी विभागों और आमजन के सहयोग से यह अभियान युद्धस्तर पर चलाया जाएगा। पौधारोपण से पहले गड्ढे खोदने का कार्य प्रारंभ कर दिया गया है, साथ ही पौधों के दीर्घकालिक संरक्षण के लिए पर्याप्त व्यवस्थाएं भी सुनिश्चित की जा रही हैं। उन्होंने यह भी बताया कि जिले की काटली नदी को पुनर्जीवित करने के लिए बहाव क्षेत्र में सुधार के कार्य शुरू किए जाएंगे, जिससे भूजल स्तर में वृद्धि और पर्यावरण संतुलन को बढ़ावा मिलेगा। अभियान प्रभारी विशंभर पूनिया ने जानकारी दी कि यह जन अभियान 5 जून से 20 जून तक चलाया जा रहा है, जिसमें विभागों के साथ-साथ आमजन की भागीदारी भी उत्साहजनक रूप से देखने को मिल रही है। इस अवसर पर पीडब्ल्यूडी के अधिशासी अभियंता शंकर लाल, सहायक अभियंता पूजा जानू, कनिष्ठ अभियंता अनंत जीत, एपीआरओ विकास चाहर, विभागीय अधिकारी, कर्मचारी व मीडिया प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

आधुनिक बस स्टैंड का सपना अधूरा

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। रोडवेज बस स्टैंड झुंझुनू के आधुनिकीकरण का सपना अभी भी अधूरा है। अगस्त 2023 में 5 करोड़ रुपए की लागत से शुरू हुआ यह कार्य एक साल में पूरा होना था। योजना के तहत बस स्टैंड को नई सुविधाओं से लैस कर यात्रियों को बेहतर सेवाएं देने का लक्ष्य रखा गया था। लेकिन जून 2025 में भी बस स्टैंड की तस्वीर कुछ और ही बयां कर रही है। यहां अधूरी दीवारें, बिखरा मलबा, टपकते शेड और मुख्य गेट के बाहर मिट्टी का अंबार यात्रियों का स्वागत कर रहा है। धूप और बारिश से बचने की जगह यात्रियों को इन समस्याओं से दो-चार होना पड़ रहा है। यात्रियों को उम्मीद थी कि नए साल में उन्हें एक आधुनिक बस स्टैंड की सौगात मिलेगी, लेकिन अधूरे निर्माण कार्य ने उनकी परेशानियां और बढ़ा दी हैं। अब यात्री जल्द से जल्द इस कार्य को पूरा करने की मांग कर रहे हैं, ताकि उन्हें बेहतर यात्रा सुविधाएं मिल सकें।

रात्रि जागरण व विशाल भण्डारे का आयोजन

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। मंडावा स्थित छोटे नाथ जी महाराज की मढ़ी में गत रात शाम को छोटे नाथ जी महाराज की पुण्य स्मृति में विशाल भंडारे का आयोजन किया गया और रात्रि जागरण का भी आयोजन हुआ। मढ़ी के महंत नवीन नाथ महाराज ने बताया कि इस अवसर पर संतों व श्रद्धालुओं के लिए विशाल भण्डारे का आयोजन किया किया गया, जिसमें सभी ने प्रसाद ग्रहण किया। तत्पश्चात रात्रि जागरण में झुंझुनूं के चंचल नाथ टीले के पीठाधीश्वर ओमनाथजी महाराज, विचारनाथ महाराज थानमथोई राजगढ़ के निर्मल नाथ महाराज, विनयनाथ महाराज, स्थानीय कलाकारों सहित फतेहपुर के सारनाथ आश्रम के रोशन नाथ महाराज ने सुमधुर वाणी में भजनों की प्रस्तुतियां देकर गुरुमहिमा का सार बताया जागरण में स्थानीय लोगों सहित नवलगढ़, मुकुंदगढ़, फतेहपुर के श्रद्धालु पहुंचे।

हवेली पर कब्जे की कोशिश, मामला दर्ज

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। पुलिस थाने में एक हवेली पर कुछ लोगों की ओर से कब्जा करने और महिलाओं को धमकी देने का मामला दर्ज करवाया है। मण्डावा निवासी प्रमेश्वरलाल पुत्र सत्यनारायण थलिया उम्र 54 निवासी वार्ड न.05 सर्राफा की बगीची के पास थलिया हवेली मण्डावा ने थाने में रिपोर्ट दर्ज करवाई है कि लगभग 150 वर्ष से परिवार थलिया हवेली में रहता है जिस पर हमारा ही रहन सहन व कब्जा है कुछ दिनो से हम लोग जयपुर में रहते है और यहा पर हमारा जाना जाना रहता है और परिवार इसी हवेली में रहता है गत रविवार को समय सुबह 6.00 बजे के लगभग हमारी हवेली के पास में मुरारीलाल सैनी निवासी झुंझुनूं व छः, सात अन्य व्यक्तियो को साथ लेकर आए और हमारी हवेली पर कब्जा करने की नियत से अन्दर घुसे और फिर घुसते ही हमारे परिवार की महिलाओं के साथ गाली गलौच व धमकाने लगे फिर कुछ कमरो के ताले तोड़कर सामान बाहर फेक दिया तो घरवालो ने मुझे फोन पर सूचना दी तो फिर कुछ समय बाद हम लोग हमारे घर पर पहुंचे और देखा तो वहा पर कुछ अन्दर बैठे है और फिर हमारे साथ गाली गलौच की और जान से मारने की धमकी और कहा कि आप जो चाहो वो करो, हम लोग यहा से बाहर नहीं जाएंगे। उन्होंने रिपोर्ट लिखा कि ये सभी लोग हमारी हवेली पर कब्जा करने की नियत से अन्दर आए है अतः इन सभी लोगो से मुझे जान माल का खतरा है अतः आप रिपोर्ट दर्ज कर उचित कानूनी कार्यवाही करे। पुलिस ने विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

हवेली पर कब्जे की कोशिश, महिलाओं से की अभद्रता

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। मण्डावा निवासी प्रमेश्वरलाल पुत्र सत्यनारायण थलिया उम्र 54 निवासी वार्ड न.05 सर्राफा की बगीची के पास थलिया हवेली मण्डावा ने थाने में रिपोर्ट दर्ज करवाई है कि लगभग 150 वर्ष से परिवार थलिया हवेली में रहता है जिस पर हमारा ही रहन सहन व कब्जा है कुछ दिनो से हम लोग जयपुर में रहते है और यहा पर हमारा जाना जाना रहता है तथा परिवार इसी हवेली में रहता है गत रविवार को समय सुबह 6.00 बजे के लगभग हमारी हवेली के पास में मुरारीलाल सैनी निवासी झुंझुनूं व छः, सात अन्य व्यक्तियो को साथ लेकर आये और हमारी हवेली पर कब्जा करने की नियत से अन्दर घुसे और फिर घुसते ही हमारे परिवार की महिलाओं के साथ गाली गलौच व धमकाने लगे फिर कुछ कमरो के ताले तोड़कर सामान बाहर फेक दिया तो घरवालो ने मुझे फोन पर सूचना दी तो फिर कुछ समय बाद हम लोग हमारे घर पर पहुंचे और देखा तो वहा पर कुछ अन्दर बैठे है और फिर हमारे साथ गाली गलौच की और जान से मारने की धमकी तथा कहा कि आप जो चाहो वो करो, हम लोग यहा से बाहर नहीं जाऐगे। उन्होंने रिपोर्ट लिखा कि ये सभी लोग हमारी हवेली पर कब्जा करने की नियत से अन्दर आए है अतः इन सभी लोगो से मुझे जान माल का खतरा है अतः आप रिपोर्ट दर्ज कर उचित कानूनी कार्यवाही करे। पुलिस ने विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है ।

शेखावाटी जयपुर टाइम्स

जयपुर, मंगलवार
10 जून, 2025

हरे पेड़ों से टकरा रही नई बिजली लाइन, किसानों के लिए बनी मुसीबत

फाल्ट आने से रोजाना हो रही हैं सप्लाई बंद

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। तहसील के बंधनाऊ गांव के किसानों का सब्र अब जवाब दे चुका है। गांव के 54 कृषि कनेक्शनों के लिए हाल ही में डाली गई 11 हजार केवी की नई विद्युत लाइन राहत देने की बजाय परेशानी का सबब बन गई है। हरे पेड़ों को छूती हुई जा रही इस लाइन से हर दिन फाल्ट हो रहा है। जिससे पिछले चार दिनों से बिजली सप्लाई पूरी तरह बंद पड़ी है। इस समस्या को लेकर सोमवार को किसानों ने एसडीएम कार्यालय के बाहर जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। किसानों का आरोप है कि बिजली विभाग को बार-बार शिकायत देने के बावजूद न तो लाइन की दिशा बदली गई और न ही फाल्ट ठीक करने की गंभीरता दिखाई गई। ग्रामीणों ने चेताया कि अगर समाधान नहीं हुआ तो बीकानेर-सरदारशहर मुख्य मार्ग पर चक्का जाम किया जाएगा। किसानों ने बताया कि इस समय मूंगफली की बिजाई का समय है और बिजली न होने के कारण सिंचाई कार्य पूरी तरह ठप है। समय पर बिजाई न होने से फसलों का भारी नुकसान हो सकता है। किसानों ने कहा कि वह खेतों में मेहनत करते हैं लेकिन प्रशासन और बिजली विभाग की लापरवाही से सारी मेहनत मिट्टी में मिल रही है।

प्रदर्शन में ये किसान रहे शामिल

सीताराम, सुखराम, श्रवण कुमार, गणेशाराम, हनुमानराम, दीपचंद, नाथूराम, मनीराम, राकेश, श्यामलाल, गोविंदराम, परमेश्वरलाल, कानाराम, सुनील, जयराम, संतोष, मनोज, भंवरलाल, भगवानराम, जयकुमार सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण प्रदर्शन में शामिल रहे।

एसडीएम ने दिया समाधान का आश्वासन

एसडीएम डॉ दिव्या चौधरी ने मौके पर प्रदर्शनकारियों से संवाद करते हुए कहा कि बिजली विभाग के अधिकारियों से तुरंत बात करेंगी और जल्द से जल्द समाधान के लिए कदम उठाए जाएंगे।

किसानों ने दी चेतावनी अबकी बार आर-पार की लड़ाई

प्रदर्शन में शामिल किसानों ने साफ कहा कि अगर इस बार स्थायी समाधान नहीं हुआ तो वह चुप नहीं बैठेंगे। जरूरत पड़ी तो बड़ा आंदोलन छेड़ा जाएगा। गांव के किसान पूर्व में भी कई बार जनहित के मुद्दों पर संघर्ष कर चुके हैं।

महासम्मेलन को लेकर किया जनसंपर्क

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। अखिल भारतीय श्री वैष्णव धन्नावंशी बैरागी स्वामी समाज के लाडनूं में आयोजित होने वाले महासम्मेलन व पुस्तक विमोचन कार्यक्रम को लेकर समाज के पदाधिकारियों ने सोमवार को सुजानगढ तहसील के गांवों में जनसंपर्क किया। पुजारी महासभा सुजानगढ के अध्यक्ष केशवदास स्वामी ने बताया कि लाडनूं शहर में अखिल भारतीय महासम्मेलन आगामी 15 जून को होगा। समाज के संतों महंतों व प्रबुद्ध जनों के सानिध्य में आयोजित होने वाले इस सम्मेलन में सामाजिक एकता, चेतना व समाज में जागरूकता पर चर्चा की जाएगी। इस दौरान समाज के गौरवशाली इतिहास व परम्पराओं पर लिखी पुस्तक का भी विमोचन किया जाएगा। समाज के सीताराम स्वामी ने बताया कि सम्मेलन के सफल आयोजन व जनसहभागिता बढ़ाने के लिए सोमवार को ग्राम शोभासर, खारिया, आबसर, खालिया, छापर सहित दर्जनों गांवों में जनसम्पर्क कर सम्मेलन में अधिकाधिक संख्या में पहुंचने का आह्वान किया। इस दौरान समाज के गोपालपुरा महंत प्रकाशदास, नानुदास आबसर, जगदीशदास लोहा, मघदास पालास, हरदेवदास खारिया आदि जनसम्पर्क में शामिल रहे।

सालासर में ब्लॉक स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन

जयपुर टाइम्स

सालासर(निस)। कस्बे में स्थित श्री बालाजी गौशाला में "वन्दे गंगा - जल संरक्षण जन अभियान" के अंतर्गत श्री बालाजी गौशाला संस्थान, सालासर में ब्लॉक स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अभियान का उद्देश्य जल संरक्षण के प्रति जन जागरूकता फैलाना व पर्यावरण के प्रति समर्पण को सुदृढ़ करना रहा। इस दौरान पानी की खेलियों (टंकियों/हौज) की सफाई की गई। गौवंश के लिए चिकित्सीय जांच एवं टीकाकरण किया गया इस अवसर पर नायब तहसीलदार अमर सिंह, गौशाला अध्यक्ष रविशंकर पुजारी और गौशाला व्यवस्थापक बेगाराम ढाका ने जल संरक्षण एवं पर्यावरण विषय पर अपने विचार रखे। कार्यक्रम के अंत में पशुपालन विभाग के नोडल अधिकारी डॉ. सतीश शर्मा ने उपस्थित जनों से "जल संरक्षण" और "एक पेड़ मां के नाम" अभियान को सफल बनाने का आह्वान किया। साथ ही गजानंद शर्मा, शिशु कुमार शर्मा, भागीरथमल शर्मा सहित सभी ग्रामीणों व गौसेवकों का आभार व्यक्त किया। डॉ. लादुराम सिंह ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए। यह आयोजन जन भागीदारी व पर्यावरण सरंक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुआ।

जब जब धर्म पर हुआ आघात, तब तब आए नारायण ने लिया अवतारः राधारमण महाराज

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। संसार में जब जब धर्म पर आघात होता है, सदाचारियों, धर्मपरायणजनों को प्रताड़ित किया जाता है, दया, करुणा क्षीण हो जाती है तब तब धर्म रक्षार्थ स्वयम नारायण का अवतार होता है। धर्म की रक्षार्थ परमात्मा का आगमन विभिन्न स्वरूपों में होता है और उनके आगमन का उद्देश्य दुष्टों का संहार ही होता है। जम्मड़ा कुआं के पास रामगढ़िया परिवार की ओर से आयोजित श्रीमद्भागवत कथा में बोलते हुए ये विचार व्यासपीठ पर विराजित कथावाचक राधारमण महाराज ने प्रभु श्रीराम के जन्मोत्सव प्रसंग के संदर्भ में व्यक्त किए। राम जन्मोत्सव कथा प्रसंग के समय समस्त श्रोता भाव विभोर हो गए। कथा के दौरान भजनों की संगीतमयी मनोरम प्रस्तुतियां भी दी जा रही है। रामगढ़िया परिवार के चंपालाल, सम्पत मल, सुशील कुमार, अशोक कुमार, कमल कुमार, गोपीराम, हरिप्रसाद, रामचंद्र जाला, मिनालाल माली, नंदलाल देरासरी, मंगत मल सारस्वत, नंदलाल जोशी, रतनलाल जांगिड़, सूरजमल जांगिड़, सोहनलाल पारीक, बनवारी लाल पारीक, सम्पत राम जांगिड़ सहित अनेक श्रद्धालु उपस्थित रहे।

शिक्षा अधिकारियों का किया स्वागत

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। सीडीईओ गोविन्द सिंह राठौड़, डीईओ सन्तोष महर्षि को प्रज्ञान विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ की ओर से डॉक्ट्रेट की मानद उपाधि प्रदान की गई है। इस उपलब्धि पर राजकीय पीसीबी उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य रणवीरसिंह महरिया, वरिष्ठ अध्यापक सुखचैनसिंह ने दोनों

आरएलपी कार्यकर्ताओं ने की बिजली के स्मार्ट मीटर नहीं लगाने की मांग

एसडीएम को ऊर्जा मंत्री के नाम सौंपा ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के एसडीएम कार्यालय में आरएलपी कार्यकर्ताओं ने सोमवार को बिजली के स्मार्ट मीटर नहीं लगाने की मांग को लेकर एसडीएम को ऊर्जा मंत्री के नाम ज्ञापन दिया। तहसील प्रभारी रूपचंद सारण के नेतृत्व में सौंप गए ज्ञापन में बताया गया कि राज्य सरकार की ओर से प्रदेश की विद्युत सप्लाई संबंधित परिस्थितियों को आंकलन किए बिना ही स्मार्ट मीटर योजना के तहत स्मार्ट मीटर लगाये जा रहे हैं। जबकि धरातलीय स्तर पर विद्युत लाइन व विद्युत सप्लाई की सुचारू व्यवस्था का अभाव है। अब भी गांव व छोटे कस्बों में नियमित विद्युत आपूर्ति नहीं होती है और वर्तमान में अधिकांश स्थानों पर विद्युत लाइन व विद्युत पोल पुरानी व क्षतिग्रस्त हालत में पड़े है। जिस कारण हर समय फॉल्ट एवं कम वोल्टेज की समस्या बनी रहती है। इन समस्याओं का समाधान करने की बजाय सरकार बड़ी कंपनियों को फायदा पहुंचाने के इरादे से आनन फानन में धरातल स्तर पर पूर्ण सर्वे किए बिना और जन सामान्य से विचार विमर्श व समस्याओं के समाधान के संबंध में राय लिए बिना ही इतना बड़ा प्रोजेक्ट गलत रूप से लागू किया जा रहा है। जिसे राज्य की जागरूक जनता कभी बर्दाश्त नहीं करेगी। तहसील अध्यक्ष सांवरमल जाखड़ ने बताया कि स्मार्ट मीटर योजना के तहत विद्युत मीटर बदलने को तुरंत प्रभाव से बंद किए जाए अन्यथा मजबूर होकर हमें बड़ा आंदोलन करना होगा। जिसकी संपूर्ण जिम्मेदारी राज्य सरकार की होगी। इस अवसर पर आशीष कुड़ी, प्रमोद नाई, शंकर लाल कड़वासरा, सांवरमल फोगां, रामपाल चौधरी आदि उपस्थित रहे।

बाजार बंद की अपील, लाडनू बस स्टैंड रहेगा खुला

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। प्रशासन द्वारा नो एंट्री लागू किए जाने के निर्णय का विरोध हो रहा है और इसी को लेकर मंगलवार को बाजार बंद की अपील की गई है। अशोक सर्किल पर बसों को रोका जाकर शहर के बाहर से होकर निकाला जा रहा है, जिसके कारण लोग परेशान हैं और इसी के विरोध में व्यापारिक संगठनों ने बाजार बंद की अपील की है। संयुक्त व्यापार मंडल के अध्यक्ष गिरधारीलाल बुगालिया ने बताया कि इसके लिए अनेक व्यापारिक संगठनों की सहमति प्राप्त करके बाजार बंद की अपील की गई है। इस हेतु वेंकटेश्वर मंदिर पर एकत्रित होंगे और उपखंड कार्यालय पर पहुंचकर ज्ञापन भी देंगे। दूसरी ओर हाल ही में बसों के आवागमन को लाडनू बस स्टेंड पर भी बंद किया गया था, लेकिन व्यापार मंडल लाडनू बस स्टेंड सुजानगढ़ ने बाजार बंद को समर्थन देने से मना करते हुए व्यापारिक प्रतिष्ठान खुले रखने का निर्णय लिया है। व्यापार मंडल लाडनू बस स्टेंड सुजानगढ़ के अध्यक्ष अनिल जैन ने बताया कि संगठन के सदस्य दुकानदारों ने कहा कि सब्जी मंडी, गांधी चौक आदि सब खुले रहेंगे, इसलिए हम लोग भी प्रतिष्ठान खुले रखेंगे। जैन ने बताया कि लाडनू बस स्टेंड के व्यापारियों ने मिलकर यह निर्णय लिया है कि बाजार बंद में शामिल नहीं होकर सभी व्यापारिक प्रतिष्ठानों को खुला रखा जाएगा।

राजकीय एसबीडी महाविद्यालय में प्रवेश प्रक्रिया शुरू

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के एसबीडी राजकीय महाविद्यालय में स्नातक प्रथम वर्ष सेमेस्टर प्रथम के लिए प्रवेश प्रक्रिया का शेड्यूल जारी कर दिया गया है। प्राचार्य प्रो कविता शर्मा ने बताया कि राजकीय महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर कला विज्ञान व वाणिज्य संकाय में आवेदन की ऑनलाइन प्रक्रिया सत्र 25-26 के लिए आयुक्तालय की ओर से 4 जून से आरंभ कर दी गई है। नियमित प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थी ऑनलाइन आवेदन ईमित्र के माध्यम से भरवा सकेंगे। ऑनलाइन आवेदन भरने से पूर्व डीसीईअ पोर्टल पर दिए गए आवश्यक दिशा निर्देशों का अध्ययन करें व वांछित सामग्री के तहत ऑनलाइन पोर्टल पर दस्तावेज 10 वीं 12वीं अंक तालिका, जाति प्रमाण पत्र, मूल निवास पत्र, जन आधार कार्ड, आधार कार्ड, बैंक पासबुक बोनस के लिए पात्र होने पर संबंधित प्रमाण पत्र, पासपोर्ट साइज रंगीन फोटो व स्वयं के हस्ताक्षर कर आवेदन अपलोड किया जाना है। ऑनलाइन प्रवेश आवेदन करने में किसी प्रकार की समस्या होने पर विद्यार्थी महाविद्यालय समय में संपर्क कर सकते हैं।

लायंस क्लब ने नेचर पार्क में लगाए परिंडे

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। लायंस क्लब की ओर से सोमवार को नेचर पार्क में बेजुबान पक्षियों के लिए परिंडे लगाए गए। क्लब एडमिनिस्ट्रेटर डॉ. कमल वशिष्ठ ने बताया कि लायंस क्लब चूरू के अध्यक्ष आर्किटेक्ट अनुराग शर्मा की अध्यक्षता में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर एम.जे.एफ अनुराग शर्मा ने कहा कि यह पहल भीषण गर्मी को देखते हुए पक्षियों को पानी उपलब्ध कराने के उद्देश्य से की गई, जिससे पक्षियों को राहत मिल सके। गौरतलब है कि नेचर पार्क एक विशाल क्षेत्रीय पार्क है, जहां विभिन्न पक्षी प्रजातियों का प्राकृतिक आवास है। इस अवसर पर लायंस क्लब के संजय कस्वां, बालकृष्ण राजगढ़िया, चंद्रप्रकाश खत्री, आबिद खान, मंगतू राम तंवर, दीनदयाल सैनी, ताराचंद प्रजापत, ओम प्रकाश बैरवा सहित सामाजिक कार्यकर्ता चंद्रप्रकाश शर्मा व विकास जांगिड़ ने भाग लिया। इस दौरान क्लब सदस्यों ने कहा कि इस अभियान का मुख्य उद्देश्य प्रकृति और पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करना और जीवों के लिए दया भाव बनाए रखना है। क्लब भविष्य में भी ऐसे सेवा कार्यों को जारी रखेगा।

राष्ट्रीय निगम योजना में ऋण आवेदन 31 अगस्त तक

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। राष्ट्रीय निगम योजनान्तर्गत विभिन्न प्रकार के ऋणों के लिए अनुजा निगम पोर्टल पर 31 अगस्त तक ऋण आवेदन किए जा सकेंगे। अनुजा परियोजना प्रबंधक नगेन्द्र सिंह राठौड़ ने बताया कि योजनांतर्गत अनुसुचित जाति / जनजाति, सफाई कर्मचारी, अन्य पिछड़ा वर्ग व विशेष योग्यजन वर्ग के व्यक्तियों को निगम कार्यालय से स्वरोजगार के लिए विभिन्न उप-योजनाओ मे ऋण देने के लिए आवेदन पत्र वर्ष 2025-26 के लिए आमंत्रित किए जा रहे हैं। ऋण लेने के इच्छुक आवेदक की ओर से अपनी स्वंय की एसएसओ आईडी के माध्यम से अनुजा निगम पोर्टल पर स्वय व ई-मित्र के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि नए रोजगार सृजन करने के लिए यह ऋण विभिन्न योजनाओं में प्रदान किया जाता है। ऑनलाइन आवेदन हेतु आवेदक राजस्थान का मूल निवासी होना चाहिए। आवेदक के पास आवश्यक दस्तावेजों में आधार कार्ड, जन आधार कार्ड, जाति प्रमाण पत्र, आय प्रमाण पत्र, राशन कार्ड व बैंक पास बुक होने चाहिए। साथ ही निगम की ओर से पूर्व में किसी भी योजना में लाभान्वित नहीं होना चाहिए। योजना के संबंध मे विस्तृत जानकारी के लिए कार्यालय में व्यक्तिशः उपस्थित होकर अथवा दूरभाष संख्या 01562-250976 सें सम्पर्क कर जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

बुजुर्ग ने दो पुत्रों के खिलाफ कूटरचित दस्तावेज़ से जमीन हड़पने का कराया मामला दर्ज

सालासर(निस)। पुलिस थाने में 87 वर्षीय बंशीधर प्रजापत में वार्ड नंबर 9 ने रिपोर्ट दर्ज करवाई मेरी खरीद सुदा जमीन जो कि धनराज पुत्र चंदनमल पुजारी सालासर निवासी हैं यह जमीन मेरी पुश्तैनी जमीन नहीं है संयुक्त परिवार की नहीं है मेरे तीन बेटे हैं, देवीलाल रामलाल नंदलाल, मेरी यह जमीन मेरे पुत्र रामलाल व नंदलाल के जन्म से पहले खरीदी हुई थी, मेरे दोनों पुत्र रामलाल नंदलाल ने फर्जी कुट रचित दस्तावेज बनाकर मेरे दोनों पुत्रों ने तत्कालीन सरकारी कर्मचारियों को धोखा देकर बटवारा पत्र बनाकर दस्तावेज छुपाकर 19, 2022 को मेरे पुत्र रामलाल ने पट्टे का आवेदन किया। मेरे पुत्र नंदलाल ने25मई 2023 को पट्टा का आवेदन कर गलत कागजात पेश फर्जी तरीके से अपने नाम से से पट्टा बनवा लिया। मेरी जमीन का कुट रचित दस्तावेज से मेरी जमीन का पट्टा बनाने का दोनों ने कानून विरुद्ध काम किया। बंशीधर प्रजापत ने रिपोर्ट में बताया कि मैंने संबंध में दैनिक समाचार पत्र में विज्ञप्ति भी प्रकाशित की थी। उपरोक्त संपत्ति जमीन बहन भाइयों का हिस्सा रखना है मेरी स्वयं की अर्जित संपत्ति है जिसमें किसी का कोई हक नहीं मैं 87 वर्ष का बुजुर्ग व्यक्ति हूं, बीमार रहता हूं। आम सूचना मैं प्रकाशित करवाई 87 वर्षीय बंशीधर प्रजापत ने अपने पुत्रों रामलाल व नंदलाल प्रजापत सालासर निवासी के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की मांग करते हुए मामला दर्ज करवाया है।

विवाहिता ने स्प्रे जहर पीकर की आत्महत्या

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। भानीपुरा थाना अंतर्गत गांव राजासर पांवरान में एक विवाहिता ने स्प्रे जहर पीकर आत्महत्या कर ली। परिजनों की ओर से तुरंत विवाहिता को राजकीय उप जिला अस्पताल लेकर पहुंचे। जहां पर डॉक्टरों ने विवाहिता को मृत घोषित कर दिया। सूचना पर अस्पताल पहुंची भानीपुरा पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर राजकीय उप जिला अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया गया। पीहर पक्ष व ससुराल पक्ष के लोगों के आने के बाद पुलिस ने विवाहिता का पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों के सुपुर्द कर दिया। विवाहिता के पिता खोखराना तहसील लूणकरणसर निवासी उदाराम पुत्र शिवलाल मेघवाल ने पुलिस को रिपोर्ट देकर बताया कि 2016 में मेरी पुत्री सीमा का विवाह मदनलाल पुत्र गोदूराम मेघवाल निवासी राजासर पांवरान के साथ संपन्न हुआ था। उसके साथ ही मेरी छोटी पुत्री मीरां का भी विवाह सीमा के देवर रमेश के साथ हुआ था। वैवाहिक संबंधों से सीमा के एक पुत्र व एक पुत्री को जन्म दिया। शादी के बाद सीमा को उसका पति मदनलाल दहेज की मांग को लेकर परेशान करता था। उसके साथ मारपीट करता था। जब वह पीहर आती तो अपनी आप बीती हमें बताती थी। मैंने व मेरे परिवार के अन्य सदस्यों ने मदनलाल को समझने का काफी प्रयास किया। लेकिन उसने सीमा को परेशान करना बंद नहीं किया। जब सीमा के पुत्र हुआ तो छुछक में मोटरसाइकिल की मांग की। मैंने अपनी कमजोर आर्थिक स्थिति का वास्ता देकर मेरी बेटी को दहेज के लिए तंग नहीं करने की विनती की और जब ससुराल गई तो उसके साथ मदनलाल ने मारपीट की। जिस पर कई बार सामाजिक पंचायती भी करवाई गई। मैंने मेरे छोटे जंवाई रमेश को बताया कि आप लोग मदनलाल को समझने का प्रयास करो वह सीमा को परेशान नहीं करें। सीमा बहुत दुखी है। उसका जीना मुश्किल हो रखा है। रमेश ने अपने भाई मदनलाल का ही पक्ष लिया और मुझे भला बुरा कहा। आज से 2 साल पहले सीमा को मदनलाल ने मारपीट कर घर से निकाल दिया था। तब सीमा को मैं लेकर आया तब सीमा ने मुझे बताया की शादी के बाद मेरा पति मुझे बहुत ज्यादा परेशान करता है। मेरे मरने के बाद मेरे बच्चों की हालत खराब होगी। आप मुझे अपने पास ही रख लो। उसके बाद मदनलाल सीमा को लेने आया और तब मैंने पंचायती करवाई। जिसमें मेरा सादू हरिराम, पृथ्वीराम, साजन राम, नौंरग राम आदि के सामने मदनलाल ने माफी मांगी थी और आइंदा सीमा को परेशान नहीं करने का कहा था। तब मैंने सीमा को उसके ससुराल भेजा था। ससुराल जाने के बाद मदनलाल ने सीमा को तंग वह परेशान करना व मारपीट करना शारीरिक मानसिक रूप से प्रताड़ित करना जारी रखा। मेरी बेटी मेहनत मजदूरी कर अपने बच्चों का पालन पोषण करती थी। मदनलाल सीमा से रुपए छीनकर अपनी शराब की लत में पैसे उड़ता था और बात-बात को सीमा को ताने देकर मारने पर मजबूर करता था। सोमवार को सुबह सीमा के ससुराल से समाचार मिला की रात को सीमा के साथ मदनलाल ने मारपीट की और मारपीट कर घर से निकाल दिया है। फिर दोपहर 12 मेरे सादू हरिराम के पास रमेश का फोन आया की सीमा ने स्प्रे जहर पी लिया। जिससे उसकी मौत हो गई। तब हम सरदारशहर राजकीय उप जिला अस्पताल पहुंचे। जहां पर पुलिस की मौजूदगी शव का पोस्टमार्टम करवाया गया। वहीं भानीपुरा पुलिस ने विवाहिता के पीहर पक्ष की रिपोर्ट पर मामला दर्ज कर आगे की जांच शुरू कर दी।

राजस्थान जयपुर टाइम्स

जयपुर, मंगलवार
10 जून, 2025

तेज धमाके की आवाज बनी कोतूहल का विषय, सोनिक बूम होने का जताया जा रहा अंदेशा

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। सुजानगढ़ शहर व इसके आसपास के क्षेत्र में करीब पौने 8 बजे तेज धमाके की आवाज सुनाई दी, जिससे लोग अचानक से परेशान हो उठे। लोग घरों से बाहर निकल गए और आसमान की तरफ देखने लगे। लोगों ने बताया कि ठीक उसी वक्त आसमान में एक फाइटर प्लेन उड़ रहा था, जो अचानक से ऊपर की ओर चला गया। दूसरी ओर धमाके को लेकर लोगों ने एक दूसरे को फोन करने शुरू कर दिए और कुछ ही देर बाद पता चला कि धमाके की आवाज करीब 100 किलोमीटर के क्षेत्र में नोखा तक सुनाई दी है। संभवतया सोनिक बूम की आवाज पृथ्वी से टकराई होगी, जिसके कारण इतना तेज धमाका सुनाई दिया है। कुछ जगहों पर यह धमाका सीसीटीवी में भी कैद हो गया। फिलहाल धमाके को लेकर कोई स्पष्ट स्पष्टीकरण प्रशासन का नजर नहीं आया है। लेकिन इसे सोनिक बूम माना जा रहा है। सुबह 7 बजकर 40 मिनट और 55 सैकंड पर यह धमाका हुआ, जो कई जगहों पर लगे सीसीटीवी में इसकी आवाज रिकॉर्ड हो गई। इस बारे में पुलिस से बात करने पर संभवतया सोनिक बूम का अंदेशा जताया जा रहा है। पुलिस ने बताया कि कंट्रोल रूम ने भी थानों से इसकी सूचना मांगी है। दूसरी ओर जिले में कहीं पर भी नुकसान की जानकारी भी नहीं मिली है। छापर रोड़ पर रहने वाले साकिर खान बैसवा ने बताया कि धमाके के साथ ही बच्चों को छत पर भेजा, लेकिन कुछ नहीं दिखा। सब लोगों को ऐसा लगा कि मानो उनकी छत पर ही धमाका हुआ होगा। इस बारे में भारतीय नौसेना की एयरविंग में कैप्टन रह चुके कैप्टन हनुमान चंदेलिया ने बताया कि जब भी किसी प्लेन की स्पीड को आवाज की गति से तेज किया जाता है, तो आसमान में एक प्रेशर जनरेट होने से इस प्रकार की आवाज होती है, जिसे सोनिक बूम कहा जाता है। चंदेलिया बताया कि प्रति सैंकंड किसी प्लेन की स्पीट 343 मीटर से ज्यादा हो जाती है, तो इस प्रकार का तेज साउण्ड पैदा होता है। इसको और ज्यादा स्पष्ट कते हुए वायुसेवा से सेवानिवृत हो चुके जूनियर वारंट ऑफिसर हनुमान कीलका ने बताया कि जब आवाज की गति से ज्यादा गति कोई प्लेन अचानक जाता है, तो आसमान में वेक्यूम क्रिएट होता है, जिसकी जिसकी आवाज जमीन की सतह तक पहुंचने पर कंपन का रूप ले लेती है और तेज धमाके की आवाज सुनाई दती है। हम इसको इस प्रकार समझ सकते हैं कि जब कोई फाईटर जेट अपनी साधारण स्पीड में उड़ रहा है और फिर अचानक वह 12 सौ किमी प्रति घंटा या इससे ज्यादा की गति पकड़ता है, तो ये सोनिक बूम की आवाज पैदा होती है, जो बम धमाके जैसी लगती है।

जल संरक्षण की आदत विकसित करें: आर्य

जिला प्रमुख वंदना आर्य व जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने सहजासर में किया जल पूजन

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने सोमवार को जिले के सरदारशहर उपखंड के सहजासर, मेहरासर उपाधियान, फोगां भरथरी, बिल्यूंबास रामपुरा आदि ग्राम पंचायतों में 'वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान' अंतर्गत आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में शिरकत की और जल पूजन, श्रमदान, पौधरोपण कर जल संरचनाओं का अवलोकन किया। जिला प्रमुख वंदना आर्य और जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने मेहरासर उपाधियान ग्राम पंचायत के सहजासर में मॉडल तालाब निर्माण कार्य सहजासर जोहड़ पर जल पूजन किया और श्रमदान व पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। इसके बाद राउमावि में आयोजित कार्यक्रम में जिला प्रमुख वंदना आर्य ने संबोधित करते हुए कहा कि हम सभी जल संरक्षण को आदत बनाएं। दैनिक गतिविधियों के छोटे -छोटे प्रयासों से हमें जल संरक्षण की दिशा में बड़े परिवर्तन देखने को मिलेंगे। प्रदेश सरकार ने पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अभियान के माध्यम से एक मुहिम शुरू की है। हम सभी इसमें अपनी सक्रिय भागीदारी निभाएं। उन्होंने कहा कि हमें संकल्पित होकर प्रदेश सरकार के इस अभियान को सफल बनाना है। सभी की भागीदारी से हम जल ही जीवन है के संकल्प को साकार करते हुए जल का संचय करें और भावी पीढ़ियों के लिए समृद्ध भौगोलिक विरासत दें। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने कहा कि जल, जंगल, जमीन का संरक्षण वर्तमान की आवश्यकता है। जल सभी भौगोलिक व्यवस्थाओं का मूल तत्व है। इसलिए जल का संरक्षण सभी भौगोलिक व्यवस्थाओं के संचालन में महत्वपूर्ण है। हमें पानी को बचाने, भूमि जलस्तर को बढ़ाने और जल संरचनाओं के संरक्षण, संवर्धन के लिए संतुलित प्रयास करने होंगे। उन्होंने कहा कि अंचल की भौगोलिक परिस्थितियों के मध्यनजर हमें वर्षाजल संग्रहण व पानी को पुन भूमिगत जल में रिस्टोर करने के लिए संरचनाओं को और अधिक विकसित करने की आवश्यकता है। इसी के साथ पानी की अनुचित बर्बादी पर नियंत्रण करना होगा। हमें दैनिक गतिविधियों में जल संरक्षण को शामिल करना होगा। इस अवसर पर अतिथियों ने गांव में बर्तन बैंक का उद्घाटन किया तथा प्लास्टिक मुक्त गांव बनाने की बात कही। उन्होंने सरकार की बर्तन बैंक योजना की जानकारी देते हुए पर्यावरण संरक्षण की दिशा में सक्रिय कदम उठाने का आह्वान किया।

जल संरचनाओं का किया निरीक्षण

जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने बिल्यूंबास रामपुरा ग्राम पंचायत के बिल्यूंबास महियान गांव के लुकसा जोहड़ का अवलोकन किया और जोहड़ परिसर में श्रमदान व पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। इसके बाद डालमाण ग्राम पंचायत के ढाणी दूदगीर में जैसकाना जोहड़ का अवलोकन किया और जोहड़ में आए पानी के उपयोग, संग्रहण व गुणवत्ता के बारे में जानकारी ली। इसके उपरांत उन्होंने फोगां भरथरी में ग्रामीणों से संवाद किया और जल संरक्षण के महत्व के बारे में चर्चा करते हुए वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के बारे में जानकारी दी। इसी के साथ उपस्थित ग्रामीणों से उनके अभाव अभियोग सुने तथा ?समस्याओं के समाधान के बारे में सकारात्मक आश्वासन दिया। एसडीएम दिव्या चौधरी ने व्यवस्थाओं की जानकारी दी। विकास अधिकारी महेन्द्र सोलंकी ने जलग्रहण गतिविधियों व जल संरक्षण की दिशा में किए जा रहे कार्यों के बारे में अवगत करवाया। इस दौरान बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने जल संरक्षण का संकल्प लिया।

उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम पर किया सम्मानित

जिला कलक्टर ने राउमावि मेहरासर उपाधियान में 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त कर बोर्ड परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया। उन्होंने विद्यार्थियों को कैरियर गाइडेंस देते हुए भविष्य के लिए रूपरेखा निर्धारित कर नियमित अध्ययन व पुस्तक पढ़ने की आदत को सुचारू रखने पर बल दिया।

रास्ते के समाधान की मांग को लेकर सुजानगढ़ विधायक ने सौंपा एडीएम को ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। कलेक्ट्रेट कार्यालय में सोमवार को सुजानगढ़ रेलवे स्टेशन से लाडनूं बाईपास रोड़ का हिस्सा रेलवे को दिए जाने के निर्णय से उत्पन्न स्थिति को लेकर सोमवार को सुजानगढ़ विधायक मनोज मेघवाल ने जिला कलेक्टर के नाम एडीएम अर्पिता सोनी को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन के माध्यम से विधायक मनोज मेघवाल ने बताया कि चूरू एडीजे कोर्ट के फैसले का हवाला देते हुये पीडब्लूडी विभाग सुजानगढ़ ने निर्णय लिया कि सुजानगढ़ रेलवे स्टेशन के सामने की जमीन को शामिल करते हुए बस स्टेण्ड होते हुए लाडनूं बाईपास सडक की 3.5 मीटर चौडाई तक की जमीन को रेल्वे को सरेण्डर करेगा। ज्ञापन में बताया कि उपरोक्त रास्ता रियासत काल का है, जिसमें बाद में सड़क का निर्माण किया गया था तथा उसके बाद यह एनएच 65 का हिस्सा हो गया। यह रास्ता हाईवे के पास चला गया, परन्तु बाद में रेलवे ने इस सड़क पर आपत्ति कर इसकी जमीन को सुपर्द करने का दावा कर दिया। इस बीच एनएच ने बाहर से नया बाईपास निकाल दिया और इस सड़क को छोड़ दिया तथा यह सड़क पीडब्लूडी के अधिकार क्षेत्र में आ गई और कोर्ट में पीडब्लूडी पक्षकार बन गई। परन्तु पीडब्लूडी विभाग की ओर से सही पैरवी नहीं करने के कारण निचली अदालत का फैसला रेलवे के पक्ष में चला गया, जिस पर पीडब्लूडी ने हाईकोर्ट में निर्णय के विरूद्ध अपील नहीं करने का निर्णय किया है और उक्त जमीन को रेल्वे को सुपुर्द करने का फैसला किया है। उनके इस फैसले से आने वाले समय में आम नागरिकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ेगा, शहर में और कोई वैकल्पिक रास्ता भी नहीं है, जहां से आवागमन हो सके। सालासर और छापर रोड़ से शहर में आने का एक मात्र सुलभ रास्ता यही है, जो बंद हो जाएगा और शहर दोनों तरफ के रास्ते से कट जाएगा। अतः विधायक मेघवाल ने ज्ञापन के माध्यम से जनहित के मुद्दे को देखते हुये प्रशासन से आग्रह किया है कि आप पीडब्लडी के अधिकारियों से रिपोर्ट लेकर उच्चाधिकारियों से वार्ता कर कोर्ट के निर्णय को उच्च न्यायालय में चुनौती देवें व इसके खिलाफ अपील दायर करें। इसके साथ ही राज्य सरकार व रेल्वे से वार्ता कर इसका कोई समाधान करने का प्रयास करें। जिससे आवागमन की सुचारू व्यवस्था हो सके और आमजन को होने वाली परेशानियों से राहत मिल सके। इस अवसर पर कांग्रेस के शहर ब्लॉक अध्यक्ष प्रदीप तोदी, नगर अध्यक्ष रामोतार शर्मा, पूर्व देहात ब्लॉक अध्यक्ष विद्याधर बेनीवाल, उप सभापति अमित मारोठिया, जिला प्रवक्ता इदरीस गौरी, मुकुल मिश्रा, बजरंग सेन आदि उपस्थित रहे।

पर्यावरण की रखवाली के संकल्प के साथ वंदे गंगा - जल संरक्षण जन अभियान

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में सम्पूर्ण प्रदेश में चल रहे 'वंदे गंगा - जल संरक्षण जन अभियान' में प्रदेशवासी पर्यावरण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दिखा रहे हैं। जिलेवासियों की ओर से पर्यावरण की रखवाली के संकल्प के साथ वंदे गंगा - जल संरक्षण जन अभियान आयोजित किया जा रहा है। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा के निर्देशन में सोमवार को जिलेभर में वंदे गंगा - जल संरक्षण जन अभियान अंतर्गत विभिन्न गतिविधियां आयोजित की गई। जिले की भरपालसर ग्राम पंचायत के पक्के जोहड़ की साफ - सफाई व पौधरोपण कार्य, बीदासर की ग्राम पंचायत ऊंटालड़ में श्रमदान व पौधरोपण, चूरू के सोमासी में जागरूकता रैली, हामुसर में जोहड़ में साफ- सफाई व श्रमदान, गौरीसर में ग्रामवासियों की ओर से नालियों की सफाई, फोगां में पीएचईडी टंकी की सफाई व रख-रखाव कार्य आदि विभिन्न गतिविधियां आयोजित की गई।

भजनलल सरकार के कार्यों पर आमजन की मुहर, उपचुनाव में जीती भाजपा

जयपुर टाइम्स

लक्ष्मणगढ़(निस)। नगर पालिका के वार्ड नंबर-9 में पार्षद पद के लिए हुए उपचुनाव के नतीजे सोमवार को घोषित कर दिए गए। भारतीय जनता पार्टी की प्रत्याशी सरिता शर्मा ने कांग्रेस की वंदना शर्मा को 365 मतों से हराकर जीत हासिल की। निर्दलीय उम्मीदवार पूनम देवी तीसरे स्थान पर रहीं। मतगणना सोमवार सुबह 9 बजे उपकोष कार्यालय के कमरा नंबर-7 में शुरू हुई, जहां कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की गई थी। मतगणना तीन राउंड में पूरी हुई, जिसमें हर राउंड में भाजपा प्रत्याशी सरिता शर्मा ने बढ़त बनाए रखी।पहले राउंड में सरिता शर्मा को 205, वंदना शर्मा को 166 और पूनम देवी को 4 वोट मिले, जबकि 1 मत नोटा में गया। दूसरे राउंड में सरिता को 218, वंदना को 94, पूनम को 13 और नोटा को 2 वोट मिले। तीसरे राउंड में सरिता को 217, वंदना को 15, पूनम को 42 और नोटा को 5 वोट प्राप्त हुए। इस तरह कुल मतों में सरिता शर्मा को 640, वंदना शर्मा को 275 और पूनम देवी को 59 वोट मिले। नोटा में 8 वोट डाले गए। इस निर्णायक जीत के बाद सरिता शर्मा ने सभी कार्यकर्ताओं और वार्डवासियों का आभार जताया और कहा कि वे जनता के विश्वास पर पूरी तरह खरा उतरने का प्रयास करेंगी।भाजपा खेमे में इस जीत के बाद खुशी की लहर दौड़ गई। कार्यकर्ताओं ने ढोल-नगाड़ों के साथ विजयी जुलूस निकाला और सरिता शर्मा को फूल-मालाओं से लाद दिया। वहीं कांग्रेस खेमे में मायूसी देखी गई।भाजपा की जीत पर बोलते हुए शहर मंडल अध्यक्ष ललित पंवार ने वार्डवासियों का आभार व्यक्त किया और कहा कि वार्ड के लोग कांग्रेस से परेशान थे, जिसकी वजह से भाजपा को इतनी बड़ी जीत मिली है। दिग्गज भाजपा नेता दिनेश जोशी ने भी वार्ड के लोगों का आभार व्यक्त किया और स्थानीय विधायक डोटासरा पर हमलवार होते हुए कहा कि यह गोविंद सिंह डोटासरा के घमंड की हार है, उपचुनाव में डोटासरा के प्रचार में नहीं उतरने के चलते जोशी ने कहा कि उनको पहले ही कोंग्रेस ही हार नजर आ गई थी इसलिए वे चुनाव प्रचार में भी नहीं आए।

सांसद के नेतृत्व में चूरू एडीएम को सौंपा ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। सुजानगढ़ रेल्वे स्टेशन से लाडनू बाईपास रोड का हिस्सा रेलवे को सुपुर्द करने के निर्णय से उत्पन्न स्थिति के सम्बंध को लेकर चूरू सांसद राहुल कस्वा, विधायक मनोज मेघवाल ने कलक्टर के नाम चूरू एडीएम अर्पिता सोनी को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन सौंपने के दौरान सांसद राहुल कस्वा ने बताया कि सरकारी विभाग ऐसे काम कर रहे हैं, जिससे जनता को ज्यादा से ज्यादा परेशानी हो, अतः इसको रोका जाए। विधायक मनोज मेघवाल ने चूरू एडीजे कोर्ट के फैसले का हवाला देते हुए बताया कि पीडब्लूडी सुजानगढ़ ने निर्णय किया है कि रेल्वे स्टेशन के सामने की जमीन को शामिल करते हुए बस स्टेण्ड होते हुए लाडनू बाईपास सडक की 3.5 मीटर चौडाई तक की जमीन को रेलवे को सरेण्डर करेगा। उपरोक्त रास्ता रिसायत काल का है जिसमें बाद में सड़क का निर्माण किया गया था तथा उसके बाद एनएच 65 जब बना तो यह उसका हिस्सा हो गया तथा यह रास्ता एनएच के पास चला गया परन्तु बाद में रेलवे ने इस सडक पर आपत्ति कर इसकी जमीन को सुपर्द करने का दावा कर दिया। इस बीच एनएच ने बाहर से नया सड़क बाईपास निकाल दिया और इस सडक को छोड दिया और यह सड़क पीडब्लूडी के अधिकार क्षेत्र में आ गई और कोर्ट में पीडब्लूडी पक्षकार बन गई। परन्तु पीडब्लूडी विभाग की ओर से सही पैरवी नहीं करने के कारण निचली अदालत का फैसला रेल्वे के पक्ष में चला गया। जिसके विरूद्ध पीडब्लूडी ने हाईकोर्ट में निर्णय के विरूद्ध अपील नहीं करने का निर्णय किया है और जमीन को रेल्वे को सुपुर्द करने का फैसला कर लिया है। उनके इस फैसले से आने वाले समय में आम नागरिकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ेगा, शहर में और कोई वैकल्पिक रास्ता भी नहीं है जहां से आवागमन हो सके। सालासर रोड और छापर रोड से शहर में आने का एक मात्र सुलभ रास्ता यही है जो बंद हो जाएगा और शहर दोनो तरफ के रास्ते से कट जाएगा। अतः जनहित को देखते पीडब्लयूडी के अधिकारियों से पूरी रिपोर्ट लेकर उच्च अधिकारियों से वार्ता कर कोर्ट के निर्णय को उच्च न्यायालय में चुनौती देवें व इसके खिलाफ अपील दायर करें, साथ ही राज्य सरकार व रेल्वे से वार्ता कर इसका कोई समाधान निकालने का कार्य करें। जिससे आवागमन की सुचारू व्यवस्था बनी रहे और लोगों को होने वाली भारी परेशानी से राहत मिल सके। इस अवसर पर कांग्रेस जिला अध्यक्ष इंद्राज खीचड़, ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष प्रदीप तोदी, नगर अध्यक्ष रामोतार शर्मा, पूर्व देहात ब्लॉक अध्यक्ष विद्याधर बेनीवाल, उप सभापति अमित मारोठिया, जिला प्रवक्ता इदरीस गौरी, मुकुल मिश्रा, बजरंग सेन आदि मौजूद रहे।

भाजपा सरकार की नाकामियों के विरोध में कांग्रेस ने निकाली हल्ला बोल रैली

विभिन्न समस्याओं को लेकर जमकर किया विरोध प्रदर्शन

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला मुख्यालय पर शहर व देहात ब्लॉक कांग्रेस कमेटी की ओर से भाजपा सरकार की विफलताओं व जिला प्रशासन की नाकामियों को लेकर सोमवार को हल्ला बोल विरोध-प्रदर्शन किया गया। ये हल्ला बोल रैली शहर व देहात ब्लॉक कांग्रेस कार्यालय मंडेलिया हाउस से रवाना होकर पंखा सर्किल होते हुए जिला कलेक्ट्रेट कार्यालय पहुंची। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष रफीक मंडेलिया, लोकसभा सांसद राहुल कस्वां, चूरू जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष इन्द्राज खीचड़ के नेतृत्व में शहर व ग्रामीण क्षेत्र के सैंकडों कार्यकर्ताओं के साथ भाजपा सरकार व जिला प्रशासन के विरोध में बैनर, तख्ती व झंडे लेकर विरोध प्रदर्शन किया गया और जन समस्याओं के स्थायी की मांग को लेकर जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा गया और जन समस्याओं का समाधान नहीं होने पर संवैधानिक व लोकतांत्रिक तरीके से भारी विरोध प्रदर्शन की चेतावनी दी गई। इस प्रदर्शन रैली से पूर्व शहर व देहात ब्लॉक कांग्रेस कार्यालय मंडेलिया हाउस में एक बैठक आयोजित की गई। इस अवसर पर राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष रफीक मंडेलिया ने कहा कि प्रदेश में भाजपा सरकार के कार्यकाल से आमजन त्रस्त और बेबस है। प्रदेष में निरंतर महिलाओं, दलितों पर अत्याचार की घटनाएं हो रही है। पानी और बिजली का संकट निरंतर बढ़ता जा रहा है। किसानों को फसलों का उचित मूल्य नहीं मिल रहा है। प्रदेश में चिकित्सा व्यवस्था चरमरा गई है और प्रदेश में बेरोजगारी निरंतर बढ़ती जा रही है, जिससे युवाओं में सरकार के प्रति रोष व्याप्त है। इस अवसर सांसद राहुल कस्वां ने कहा कि सरकार ने चुनाव से पूर्व किसानो से जो वादे किए थे, उन वादों को सरकार अभी तक पूरा नहीं कर पाई है। किसानों को फसल बीमा व फसल क्लेम का लाभ नहीं मिल पा रहा है। फसलों की एमएसपी पर खरीद नहीं की जा रही है। कांग्रेस कार्यकाल में किसानों, अनुसूचित जाति व जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, महिलाओं व युवाओं के लिए शुरू की गई कल्याणकारी योजनाओं को बन्द एवं निष्क्रिय किया जा रहा है। चूरू जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष इन्द्राज खिचड़ ने कहा कि कांग्रेस हमेशा सर्व समाज को साथ लेकर जन कल्याण की बात करती है, लेकिन प्रदेश में जिस तरह भाजपा सरकार आमजन के हितों के साथ कुठाराघात करने का प्रयास कर रही है, उसको हम किसी भी सूरत में स्वीकार नहीं करेंगे और आमजन की मांगों को लेकर लोकतांत्रित तरिकें से सरकार को अवगत करवा रहे हैं। सुजानगढ़ विधायक मनोज मेघवाल ने कहा कि प्रदेष में अनुसुचित जाति व जनजाति पर निरंतर अत्याचार की घटनाएं बढ़ रही है। प्रदेश में पानी और बिजली की किल्लत बनी हुई है। इस दौरान चूरू विधानसभा प्रभारी भीमराज जाखड, पंचायत समिति प्रतिपक्ष नेता धर्मेन्द्र बुडानिया, प्रदेष कांग्रेस सचिव रियाजत खान, पूर्व सभापति गोविन्द महनसरिया, वरिष्ठ कांग्रेस नेता मोहम्मद हुसैन निर्माण, किसान नेता आदूराम न्यौल, कमला पुनियां, नारायण बालाण, सोयल खान डीके, रमजान खान, सीताराम खटीक, सोहनलाल मेघवाल आदि ने भी संबोधित किया। चूरू शहर ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष असलम खोखर व देहात ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष किशोर धान्धू ने कार्यकर्ताओं का स्वागत किया। इस अवसर पर रामेष्वर प्रजापत, अबरार खान, हेमंत सिहाग, सद्दाम हुसैन, हर्ष लाम्बा, लालचंद सैनी, रामनारायण व्यास, षिवकुमार शर्मा, संजय भाटी, कमलेष महला, रामप्रताप कांटिवाल, विनोद खटीक, असलम खां अखाण, चंदनमल मेघवाल, हमीद खान रिसालदार, शेर खां मलखाण, इस्लाम खान, विधाधर मेघवाल, ज्योति सिंह, कुरडाराम भाकर, श्रवण बसेर, बजरंग बजाड, प्यारेलाल दानोदिया, हरिराम पुनियां, इस्माइल भाटी, किषनाराम बाबल, हवलदार, बालीबाई, भूरामल भाटिया, अनिस खां, बुल्लेषाह, सलीम पीए, भंवरलाल स्वामी, जाफर खां, श्योचंद प्रजापत सहित बड़ी कांग्रेस कार्यकर्ता मौजूद रहे ।

स्वात्वाधिकारी, कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक रामेश्वरलाल जाट द्वारा कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि., सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर में मुद्रित एवं सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर -302013 से प्रकाशित।
सम्पादक : नीतू चौधरी, सी-588, 4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड, जयपुर-302013 मो. : 7014217770, E-Mail : jaipurtimes2007@gmail.com *पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार, समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर।